Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 अप्रैल 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 4, अप्रैल 2023

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

http://www.kilol.co.in
स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

अप्रैल का महीना हम सब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है . सालभर पढ़ कर हमने परीक्षा दी है,उसका परिणाम आता है और हम अगली कक्षा में प्रवेश लेने हेतु तैयार रहते हैं. बच्चों मार्कशीट में मिलने वाला अंक अंतिम नही होता है ,हमने परीक्षा के दौरान सीमित समय में उत्तर पत्रक पर जो लिखा है उसी के आधार पर हमें अंक प्राप्त होते हैं. यदि हम अपने परीक्षा परिणाम से संतुष्ट नही हैं तो हमें आत्मचिंतन करना चाहिए कि कमी कहाँ रह गई है ? उसे अगली बार के लिए सुधारने हेतु योजना बनाएँ.

इस माह हम बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ संविधान निर्माता डॉ.बाबा साहेब अम्बेडकर जी की जयंती मना रहे हैं. बाबा साहेब जी की सोच रही है कि एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से किसी भी बात पर कमतर नहीं है. हम सब को आगे बढ़ने के लिए सबको साथ लेकर शिक्षित होना जरूरी है. आप भी अपने आसपास के साथियों को साथ लेकर खूब पढ़े व खूब बढ़े.

और हाँ! एक बात तो भूल ही गई थी,किलोल के लिए अपना प्यार बनाये रखें नियमित पढ़ें एवं अपने शिक्षकों व पालकों से सहयोग लेकर अपनी रचनाएँ जरूर भेजें.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला
मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमाणिका

मीठे- मीठे आम रसीले.....9

सबका राज दुलारा मुन्ना.....10

मन को सदा लुभाते रंग 11

चिटरा.....12

ज्ञान सुधा.....13

पंचतंत्र की कहानी 15

चिड़िया.....17

आओ इतिहास रचें 18

अधूरी कहानी पूरी करो 20

राजा ब्रूस.....20

आस्था तंबोली, कक्षा तीसरी द्वारा पूरी की गई कहानी 21

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी.....21

सतीश "बब्बा", कोबरा द्वारा पूरी की गई कहानी 22

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 22

हरनारायण चन्द्रा, सक्ति द्वारा पूरी की गई कहानी 23

विकास लाटा, राजनांदगाँव द्वारा पूरी की गई कहानी.....23

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 24

सच्ची सुंदरता.....24

क्यों खिलते हैं फूल 25

परीक्षाएं हमारे जीवन को तराशती हैं.....26

मम्मी.....28

जीवन के हर पड़ाव को अपनाओ और जीभर जियो 30

सुनो ध्यान से बेटियाँ.....32

कुमार विश्वास 33

चित्र देख कर कहानी लिखो 35

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी.....35
सबसे शक्तिशाली कौन.....35
अनन्या तंबोली, कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी.....37
कु. मोनिका साहू, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी.....37
बंदर और दरियाई घोड़ा.....37
कुमारी प्रज्ञा श्रीवास, आठवीं, बस्तर द्वारा भेजी गई कहानी.....38
मीलू की खोज.....38
रामेश्वरी सी.के. जलहरे, बलौदा बाजार द्वारा भेजी गई कहानी.....38
श्रेष्ठ कौन?.....38
कु. संजना मानिकपुरी, कक्षा - पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, जिला -मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी.....39
दरियाई घोड़े की दोस्ती.....39
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र.....40
सुंदर घर, सुंदर जीवन.....41
विश्व गौरैया दिवस.....44
जादुई पिटारा.....47
करो पढ़ाई मन लगाकर.....50
कोयल.....51
कुल्फ़ी.....52
सर्वोत्तम दवा: ख़ुशी.....53
सुधरेंगे हालात.....55
हमारी किस्मत खुली.....57
तिरंगा.....58
चालाक लोमड़ी.....59
बंदर मामा.....60
इंद्रधनुष.....61
मानव संग्रहालय.....62
सबसे छोटा होना.....64

बसंती रंग 66
पिज्जा 67
भारतीय संविधान 69
तनु की सूझबूझ 73
वृक्ष 75
क्षत्राणी ओ क्षत्राणी 76
प्रणाम करते हैं 77
तीन दोस्त 79
आइसक्रीम वाला 81
आते ही गर्मी के 82
होली 83
मोर पाठशाला 84
बालवाड़ी 86
गिलहरी 87
हाथी और बंदर 88
फीके पड़ते होली के रंग 90
ऋतुचक्र 93
होली है 95
समय 97
जल 98
पहेलियां 100
आम 102
होली 103
मेरा घोड़ा 104
वृक्ष 106
पढ़ना जरुरी है 107
धान अऊ किसान 109

निपुण भारत 111
जल 113
बुलंद हौसला 115
कौन है शिक्षक 116
हो सकता है 117
ज्ञानवर्धक बाल पहेलियाँ 118
सरसराते हवाओं का झोंका 120
जादुई पलाश फूल 122
सफलता मचाएगी शोर 124
दोस्ती 126
कौन है वो 128
बंदर मामा 129
चीं-चीं चिड़िया सोची 130
बाल गीत 132
शेर सिंह का जंगल में ऐलान 134
महल गाड़ी नहीं चाहिए 136
होली 138
नारियों का सम्मान ही महिला दिवस 140
बाल शिक्षाप्रद हाइकु 142
होली हुड़दंग 145
मन अच्छा लगे तो 147
घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है 148
तितली 150
जनऊला 152
गजब लुहाथे मोबाइल 154
रसमलाई 155
नवाचार 156

गरमी के छुट्टी मा ममा गाँव चलव 158
हौसला 161
कोयल रानी 163
चल विद्यालय 164
कैसे घटे मुटापा 165
जंगल 166
मोनू की दूकान 167
जीवन के सरगम 168
त्यौहार 170
जूनून-कुछ कर गुजरने का 172
जिंदगी कहती है 174
लक्ष्य की ओर 176
स्वाभिमान है तेरा असली गहना 178
जब जब सावन आता है 180
वज़ूद चाहता हूँ 181
समय 182
खरगोश और कछुआ की दोस्ती 185
स्तुति वंदन तेरा मैं गाऊँ 186
चलो करें पढ़ाई अब 188
धरती माँ के सेवा करईया 189
महिला दिवस 191
गुनगुन करता भौंरा आया 193
बाप एक खजाना होता है 194
कहानियों का संसार 195
शिक्षा जीवन का आधार 197
घाम पियास के दिन आगे 199
मेरे स्कूल मैं बादाम का पेड़ 200

समुद्र पार पोपाय ने ब्लुटो को हराया.....201
निपुण भारत.....203
पुतरी.....205
लीम.....206
चिंटू पिंटू.....207
कंप्यूटर.....208
कितना मोहक भोर.....209
मददगार बंदर.....210
बस्तर दर्शन.....211
ख़ुशी.....213
पापा.....214
बेटियाँ.....215
बड़ा योगदान है.....216
महीना.....219
पेड़ और बच्चे की कहानी.....220
बसंत ऋतु.....222
मन को सदा लुभाती तितली.....224
जीना सीखो.....225
मेरी गुड़िया.....226
आम.....227
परीक्षा की ऋतु.....229
पिता एक उम्मीद एक आस है.....230
क्यों करे अपेक्षा?.....232
सोनू की चिट्ठी.....234
प्रकृति के समीप जाना तुम.....236
बाल पहेलियाँ.....238
जिंदगी की जंग.....240
काकभगोड़ा.....242

मीठे- मीठे आम रसीले

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, बिहार

क्यों कहते हैं मेरे चाचा
लगते खट्टे औ' जहरीले,
जबकि लाए मेरे मामा
मीठे- मीठे आम रसीले.

क्यों कहती है मेरी चाची
लगते खट्टे औ' जहरीले,
जबकि लाई मेरी मामी
लीची मीठे और रसीले.

क्यों कहते हैं मेरे दादा
हरे- हरे हैं सारे केले,
जबकि अंदर सभी पके हैं
लगते मीठे औ' अलबेले.

क्यों कहती है मेरी दादी
लाल अनार बहुत शर्मीले,
जबकि सब ने मजे से खाया
सारे मीठे फल अलबेले.

*****

सबका राज दुलारा मुन्ना

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग

सबका राज दुलारा मुन्ना
है आँखों का तारा मुन्ना.

भोला-भाला, सीधा-सादा
लगता चांद-सितारा मुन्ना.

दादा-दादी का है प्यारा
है घर का उजियारा मुन्ना.

बड़ों-बड़ों के कान ऐंठता
अनोखा है हमारा मुन्ना.

कभी रूठ कर सो जाता है
तब लगता है हारा मुन्ना.

*****

मन को सदा लुभाते रंग

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू, दुर्ग

आँखों को भा जाते रंग
मन को सदा लुभाते रंग.

गाते हैं जब गीत प्रेम के
भाव नवीन जगाते रंग.

ऊँच-नीच का भेद भूलकर
पास सभी को लाते रंग.

लाल, गुलाबी, नीले,पीले
सबके मन को भाते रंग.

होली में अंगों पर लगकर
सबका मन हर्षाते रंग.

गाँव-गली में खुशियाँ लेकर
सबको गले लगाते रंग.

*****

चिटरा

रचनाकार- श्रीमती शीतल बैस, बेमेतरा

मुसवा जइसन रूप ये पाय,
तुर तुर तुर तुर भगत जाय.
पूछी मां घुंघरालू बाल,
देखव देखव एखर चाल.
फुदक फुदक के डारा डारा,
लेथन ओखर नाँव तारा.
धारीदार कुरथा ला पहने,
अइसन दिखथे सोनहा गहने.
भरे मँझनिया सरपट भागय,
जाके अपन खोल ले झाँकय.
फल अउ बीजा एखर खाना,
एला तुमन झन सताना.
कजरारी हे आँखी गहरा,
चिटरा हावय बड़ा सुनहरा.

*****

ज्ञान सुधा

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

ज्ञान सुधा का अमृत पी लो,
विद्यार्थी का जीवन जी लो.
ज्ञान बिना जीवन दुखदाई,
बात समझ लो बहना भाई.

कदम से कदम मिला चलना है,
कुंदन के जैसे जलना है.
लहराए यह पुण्य तिरंगा,
बहे ज्ञान की पावन गंगा.

राम कृष्ण मुनियों की धरती,
सबका पालन पोषण करती.
अन्न धन की भंडार यही है,
ममता प्यार दुलार यही है.

धरती अम्बर तक जो फैला,
खुशियों को मत करना मैला.
शुभता का नित गीत सुनाऊँ,
मानव बनकर जन्म बिताऊँ.

*****

पंचतंत्र की कहानी

संगीतमय गधा

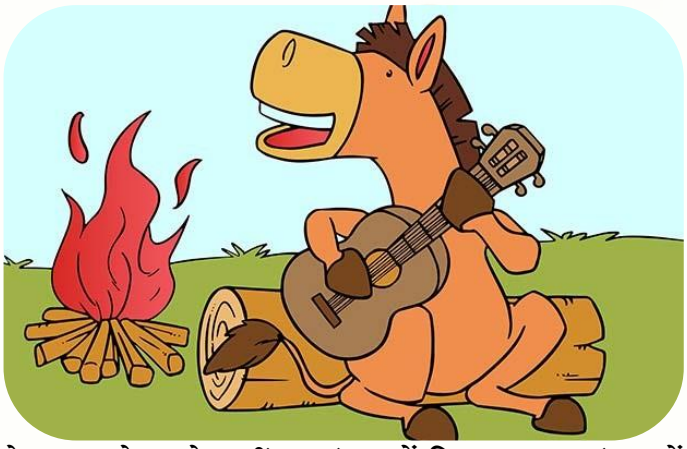

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में एक धोबी रहा करता था. उसके पास एक गधा था, जिसका नाम मोती था. चूंकि, धोबी स्वाभाव से बहुत ही कंजूस था, इसलिए वह अपने गधे को जान बूझकर चारा पानी नहीं देता था और उसे चरने के लिए बाहर भेज दिया करता था. इस कारण गधा बहुत ही कमजोर हो गया था. जब एक दिन धोबी ने उसे घास चरने के लिए छोड़ा, तो वह चरते-चरते कहीं दूर जंगल में निकल गया. जंगल में उसकी मुलाकात एक गीदड़ से हुई.

गीदड़ ने पूछा, "गधे भाई तुम इतने कमजोर क्यों हो?" तो गधे ने जवाब दिया, "मुझसे दिनभर काम करवाया जाता है और मुझे कुछ खाने के लिए भी नहीं दिया जाता है. यही वजह है कि मुझे इधर-उधर भटक-भटक कर अपना पेट भरना पड़ता है. इस कारण मैं बहुत कमजोर हो गया हूं." गधे की यह बात सुनकर गीदड़ कहता है, "मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूं, जिससे तुम बहुत ही स्वस्थ और शक्तिशाली हो जाओगे."

गीदड़ कहता है, "यहां पास में ही एक बहुत बड़ा बाग है. उस बाग में हरी-भरी सब्जियां और फल लगे हुए हैं. मैंने उस बाग में जाने का एक खुफिया रास्ता बना रखा है, जिससे मैं रोज रात को जाकर बाग में हरी-भरी सब्जियां और फल खाता हूं. यही वजह है कि मैं एकदम तंदुरुस्त हूं." गीदड़ की बात सुनते ही गधा उसके साथ हो लेता है. फिर गीदड़ और गधा दोनों ही साथ मिलकर बाग की ओर चल देते हैं.

बाग में पहुंच कर गधे की आंखे चमक उठती हैं. इतने सारे फल और सब्जियां देखकर गधा अपने आप को रोक नहीं पाता है और बिना देर किए वह अपनी भूख मिटाने के लिए रसीले फल और सब्जियों का आनंद लेने लगता है. गीदड़ और गधा जी भर के खाने के बाद उसी बाग में सो जाते हैं.

अगले दिन सूरज निकलने से पहले गीदड़ उठ जाता है और फौरन बाग से निकलने को कहता है. गधा बिना सवाल किए गीदड़ की बात मान लेता है और दोनों वहां से रवाना हो जाते हैं.

फिर वो दोनों रोज मिलते और इसी तरह बाग में जाकर हरी-भरी सब्जियां और फल खाते. धीरे-धीरे समय बीतता गया और गधा तंदुरस्त हो गया. रोज भर पेट खाना खाकर अब गधे के बाल चमकने लगे

थे और उसकी चाल में भी सुधार हो गया था. एक दिन गधा खूब खाकर मस्त हो गया और जमीन पर लोटने लगा. तभी गीदड़ ने पूछा, "गधे भाई तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?" तो गधा कहता है, "आज मैं बहुत खुश हूं और मेरा गाना गाने का मन कर रहा है."

गधे की यह बात सुनकर गीदड़ घबराया और बोला, "न गधे भाई, यह काम भूलकर भी मत करना. भूलो मत हम चोरी कर रहे हैं. कहीं बाग के मालिक ने तुम्हारा बेसुरा गाना सुन लिया और यहां आ गया, तो बड़ी मुसीबत हो जाएगी. भाई इस गाने-वाने के चक्कर में मत पड़ो."

गीदड़ की यह बात सुनकर गधा बोला, "तुम क्या जानो गाने के बारे में. हम गधे तो खानदानी गायक हैं. हमारा ढेंचू राग तो लोग बड़े शौक से सुनते हैं. आज मेरा गाने का बहुत मन है, इसलिए मैं तो गाऊंगा."

गीदड़ समझ जाता है कि गधे को गाने से रोक पाना अब बहुत मुश्किल है. गीदड़ को अपनी गलती का आभास हो जाता है. गीदड़ बोला, "गधे भाई तुम सही कह रहे हो, गाने-वाने के बारे में हम क्या जाने. अब तुम बता रहे हो, तो मुमकिन है कि तुम्हारी सुरीली आवाज सुनकर बाग का मालिक फूल माला लेकर तुम्हें पहनाने जरूर आएगा." गीदड़ की बात सुनकर गधा खुशी से गद-गद हो जाता है. गधा कहता है, "ठीक है, फिर मैं अपना गाना शुरू करता हूं."

तभी गीदड़ कहता है, "मैं तुम्हें फूल माला पहना सकूं, इसलिए तुम अपना गाना मेरे जाने के 15 मिनट बाद शुरू करना. इससे मैं तुम्हारा गाना खत्म होने से पहले यहां वापस आ जाऊंगा."

गीदड़ की यह बात सुनकर गधा और भी ज्यादा फूला नहीं समाता है और कहता है, "जाओ भाई गीदड़ मेरे सम्मान के लिए फूल माला लेकर आओ. मैं तुम्हारे जाने के 15 मिनट बाद ही गाना शुरू करूंगा." गधे के इतना कहते ही गीदड़ वहां से नौ दो ग्यारह हो जाता है.

गीदड़ के जाने के बाद गधा अपना गाना शुरू करता है. गधे की आवाज सुनते ही बाग का मालिक लाठी लेकर वहां पहुंच जाता है. वहां गधे को देख बाग का मालिक कहता है कि अब समझ आया कि तू ही है, जो मेरे बाग को रोज चर के चला जाता है. आज मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा. इतना कहते ही बाग मालिक लाठी से गधे की खूब जमकर पिटाई करता है. बाग मालिक की पिटाई से गधा अधमरा हो जाता है और बेहोश होकर जमीन पर गिर जाता है.

कहानी से सीख : संगीतमय गधा कहानी से सीख मिलती है कि अगर कोई हमारी भलाई के लिए कुछ बात समझाता है, तो उसे मान लेना चाहिए. कभी-कभी हालात ऐसे हो जाते हैं कि दूसरों की बात न मानने से हम मुसीबत में पड़ सकते हैं.

*****

चिड़िया

रचनाकार- शशिकांत कौशिक, बिलासपुर

चिड़िया चीं-चीं करती हैं,
चुग-चुग दाना खाती हैं.
आकर आँगन में बैठे फिर,
पंख पसारे उड़ जाती है.

पंख पसारे उड़ जाती है,
आसमान में लहराती है.
लहराकर कई रूप दिखाकर,
सबके मन को भाती हैं.

आओ सीखें इनसे उड़ना,
उड़ना मतलब आगे बढ़ना.
आगे बढ़कर मंज़िल पाकर,
पर हित में भी काम करना.

*****

आओ इतिहास रचें

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

सृष्टि ने मानव में गुण के साथ दोष भी शामिल कर दिए है, परंतु दोषों की पहचान व निदान के लिए उसमें चौरासी लाख जीवों से सबसे अधिक बौद्धिक क्षमता का संचार भी उसके मस्तिष्क में कर दिया है, ताकि वह अपने गुण दोषों को पहचान कर गुणों का चयन करे और दोषों का निवारण कर सके.

यदि दोष आ ही जाएँ तो अपनी बौद्धिक क्षमता से उनका मुकाबला करें और उन पर जीत हासिल करें. परंतु कई बार ऐसा होता है कि मानव की करनी के नतीजे में असफलताएँ भी आती है, और वह हिम्मत हार जाता है, बस!! यहीं मानव से चूक हो जाती है.

हमें हिम्मत नहीं हारना है बल्कि प्रयत्नों से असफ़लताओं को मात देना है, गिरकर उठना है, क्योंकि जहाँ प्रयत्नों की ऊँचाई अधिक होती है वहां किस्मत को भी झुकना पड़ता है. हमारे प्रयत्नों के लिए हिम्मत की बहुत बड़ी भूमिका होती है. प्रयत्नों का आधार ही हिम्मत है जिसे बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है. एक चींटी दीवार पर चढ़ते हुए बार-बार गिरती है परंतु हिम्मत नहीं हारती और आखिर वह अपनी मंजिल तक पहुँचती है.

हिम्मत जब टूटने लगे, जब यह लगने लगे कि सब कुछ खत्म हो चूका है, तब थोड़े समय शांत बैठकर चिंतन करना चाहिए कि, क्या जो मैं कर रहा हूँ वो जरुरी है? क्या कोई और मार्ग शेष नहीं? मैने क्या गलतियाँ की और किस तरह से उन्हें सुधारा जा सकता है? क्या कोई है जो मेरी सहायता कर सकता है? जब हम शांतचित्त से सोचेंगे तब कुछ न कुछ मार्ग अवश्य निकलेगा. जब एक मार्ग बंद हो जाता है तो कोई दूसरा मार्ग खुल भी जाता है. हमें केवल धैर्य रखने की आवश्यकता है. अपने आपको मजबूत बनाये रखें. जीवन संघर्षों से भरा हुआ है और ईश्वर ने हमें संघर्षों के लिए ही दुनिया में भेजा है.

सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि हिम्मत क्यों टूटती है? जब हमारी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा मन को,मन के द्वारा मस्तिष्क को सही सूचनाएँ नहीं मिलतीं, तब हमारी कर्मेन्द्रियाँ भी कर्म करने में सक्षम नहीं रह पाती है और निराशा बढ़ती जाती है. इसी को हिम्मत का टूटना कहते हैं. जैसे हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई काम करते है और एक समय ऐसा आता है कि हम अपने लक्ष्य के करीब होते है परन्तु कोई ऐसी समस्या आ जाती है जिसे हम हल नहीं कर पाते है और धीरे धीरे निराशा बढ़ती जाती है इसी को हिम्मत टूटना कहते है.

अब हम यह समझते है कि हिम्मत टूटने का कारण क्या है. पहला कारण जब हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए काम करते है, तब हम न तो स्पष्ट रूप से अपने लक्ष्य को लिखते है और न ही उसे प्राप्त करने की नीति ही बनाते हैं, जिसके कारण कई गलतियाँ होती जाती है. जब हम लक्ष्य के करीब पहुँचते हैं,तो ये गलतियाँ एक बड़ा रूप ले लेती हैं उस समय हमारा मन उत्साहित अवस्था में होता है और गलतियों को नहीं पकड़ पाता है और उत्साह धीरे धीरे निराशा में बदल जाता है. दूसरा मुख्य कारण काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ईर्ष्या, द्वेष,पाखंड आदि में फँसा होना. कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति को ये पता होता है कि उसे लक्ष्य प्राप्ति में बाधा, लालच या क्रोध के कारण आ रही होती है और एक समय ऐसा आता है कि वह निराश होने लगता है, उसका मस्तिष्क काम करना बंद कर देता है उसकी कर्मेंद्रियों के द्वारा सही काम नहीं होता है और उसकी हिम्मत टूट जाती है. जब हिम्मत टूट रही होती है उस समय हमें तनाव बहुत होता है. मस्तिष्क का सीधा संबंध हमारे पाचन तंत्र से होता है.हमारा पाचन तंत्र खराब न हो इसके लिए हमे फल और हल्का आहार लेना चाहिए ताकि और तनाव न बढ़े. हमें योग भी करना चाहिए. शांत होकर अपना लक्ष्य लिखना चाहिए, उसके बाद वह लक्ष्य प्राप्त करने की विधि लिखनी चाहिए जब हम ऐसा करते हैं तब हमें लक्ष्य को प्राप्त करने में जो भूल हो रही होती है उसका ज्ञान प्राप्त हो जाता है और मन उत्साह से भरना शुरू हो जाता है.

दूसरी स्थिति मे व्यक्ति को स्वयं पता होता है कि हिम्मत टूटने का क्या कारण है जैसे लालच, काम भावना,क्रोध, इर्ष्या,मोह आदि. इन तत्वों का निराकरण करके हम हिम्मत टूटने से बच सकते है.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

राजा ब्रूस

एक बार राजा ब्रूस अपने शत्रुओं से हार गया. स्वयं को बचाने के लिए उसने एक गुफा में शरण ली. वह बहुत दुखी था क्योंकि वह अपना पूरा साहस एव हिम्मत खो चुका था. एक दिन वह गुफा के अंदर लेटा हुआ था.

तभी उसने देखा एक मकड़ी जाल बनाने के लिए कडा परिश्रम कर रही है. वह जाल बनाने के लिए बार-बार दीवार पर चढ़ती, लेकिन जाल का धागा टूट जाता और वह नीचे गिर पड़ती. ऐसा कई बार हुआ.

लेकिन मकड़ी हिम्मत नहीं हार रही थी. इस प्रकार वह निरन्तर प्रयास करती रही. अंतत: उसने अपना जाल पूरा कर ही लिया.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

आस्था तंबोली, कक्षा तीसरी द्वारा पूरी की गई कहानी

मकड़ी जाल बनाने के लिए परिश्रम कर रही थी. यह देखकर राजा ने सोचा यह छोटी सी मकड़ी जाल बनाने के लिए इतना मेहनत कर रही है टूट जाने पर वह हिम्मत नहीं हार रही. बार-बार उसे बनाने की कोशिश कर रही है तो मैं कैसे हार मान सकता हूं. जब मकड़ी अपने मेहनत से जाल बना सकती है तो मैं भी शत्रुओं को हरा सकता हूं .मुझे हार नहीं मानना चाहिए. यह सोचकर राजा ब्रूस के मन में ताकत आ गई और वह एक बार फिर युद्ध के मैदान में चला गया वह शत्रुओं से युद्ध करने लगा उसे कई जगह चोट लगी पर हार नहीं माना और वह युद्ध के मैदान में डटा रहा वह बार-बार उस मकड़ी को याद करता जिससे उसे युद्ध करने की ताकत आ जाती और इस बार राजा ब्रूस ने शत्रुओं को हरा दिया. राजा शत्रुओं को हराकर अपने राज्य में वापस गए. राज्य की सारी प्रजा उनकी जय-जयकार करने लगी राजा ने सभी प्रजा को उस मकड़ी के बारे में बताया जिसने उसकी ताकत बढ़ाई थी. राजा ने सभी के सामने मकड़ी को धन्यवाद किया इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी हिम्मत नहीं हारना चाहिए.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

यह सब देखकर राजा ब्रूस सोचने लगा कि जब मकड़ी द्वारा बार-बार असफल होने के बाद भी वह हिम्मत न हारते हुए निरंतर प्रयास से उसने अपने कार्य में सफल रही, तो मैं क्यों नहीं?

वह उत्साह से उठ खड़ा हुआ और अपने सैनिकों को फिर से एकत्रित किया.उसके आत्मविश्वास को देखकर सैनिकों और प्रजा का भी उस पर विश्वास जागृत हो गया.

सभी सैनिकों के साथ राजा ब्रूश ने, अपने शत्रुओं से हार का बदला लेने के लिए योजना बनाकर,उस पर आक्रमण कर दिया. राजा ब्रूस की मानसिकता पूरी तरह से बदली हुई थी.इस बार उन्होंने युद्ध में अपने शत्रुओं से बदला लेकर जीत हासिल किया और अपना खोया हुआ राज्य व सम्मान फिर से प्राप्त कर लिया.

बच्चों इस कहानी में हमने सीखा कि- किसी कार्य में एक या दो बार असफल हो जाने पर हमें निराश होकर प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए. प्रयास करना छोड़ देना ही वास्तविक असफलता है. निरंतर प्रयास से कठिन से कठिन लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है.इसलिए हार माने बिना लक्ष्य प्राप्त के लिए डटे रहें.

सतीश "बब्बा", कोबरा द्वारा पूरी की गई कहानी

मकड़ी के इस परिश्रम का असर ब्रूस पर पड़ा. वह विचलित हो गया. वह सोच रहा था कि, बार - बार प्रयास करने से सफलता जरूर मिलती है. और सफलता तक हिम्मत नहीं हारना चाहिए.

ब्रूस के मन में हिम्मत और हौसला जाग्रत हो गया. वह खड़ा हो गया और फिर वेष बदलकर बाहर निकल गया.

वह ढूँढ़ - ढूँढ़कर सैनिक तैयार करने लगा. और फिर युद्ध के लिए दुश्मन को ललकारा. इस बार भी वह सफल नहीं हुआ. लेकिन शत्रु का काफी नुकसान कर दिया था.

ब्रूस ने मकड़ी की तरह हिम्मत नहीं हारी और कुछ ही दिनों में वह एक प्रशिक्षित सैनिकों की टुकड़ी तैयार कर लिया और वह शत्रुओं पर टूट पड़ा.

आखिर वह इस बार सफल हो गया और फिर से अपना राज्य वापस कर लिया और एक कुशल राजा बन गया.

प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए, आखिर मकड़ी की सीख उसे काम आ गयी.

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

इसे देखकर गुफा में बैठा राजा ब्रूश ने एक तरकीब सोची कि जब यह मकड़ी कई बार प्रयास करते रहने के कारण सफल हो सकती है तो मैं भी हिम्मत जुटाकर लड़ने क्यों नहीं जा सकता ?

इसी सोच से राजा ने फिर अपने बिखरे एवं बची कुची सेनाओं और शक्तियों को एकत्रित करने में जुट गया, सभी के एकत्र हो जाने पर एक साथ मिलकर दुश्मनों से भयंकर युद्ध किया और कम सैन्य शक्ति होने के बावजूद भी अंततः राजा ब्रूश की जीत हुई इस तरह वह मकड़ी राजा को हमेशा याद रही उसे जिंदगी का सबसे बड़ा सबक सीखा गई थी.

सीख:- कोई भी सफलता पाने के लिए अंतिम सांस तक लगातार प्रयास करते रहना चाहिए क्योंकि सच्चे मन से किया गया प्रयास कभी निरर्थक नहीं जाता.

हरनारायण चन्द्रा, सक्ति द्वारा पूरी की गई कहानी

मकड़ी के अथक परिश्रम को राजा ब्रूस गंभीरता पूर्वक देख रहे थे, बार बार मकड़ी गिरकर पुनः चढ़कर अपना जाल बनाने में सफ़ल हो जाता है. ये बात राजा ब्रूस के निराश मन में उत्साह का संचार करता है. उसके बाद वे गुफ़ा से बाहर आते हैं तथा जंगल मे रहने वाले लोगों से अपना परिचय देते हैं, की मैं राजा ब्रूस हूँ युद्ध में हारकर यहाँ भटक रहा हूँ, यदि आप लोगों का सहयोग मिला तो पुनः मैं अपने खोये हुए साम्राज्य व गौरव को वापस प्राप्त कर सकता हूँ. वनवासी राजा ब्रूस को अपने मध्य पाकर प्रसन्न हो जाते हैं व उनका आवभगत करते हैं तथा राजा के हर सम्भव सहयोग का संकल्प लेते हैं. राजा ब्रूस वहाँ रहकर वहाँ के युवाओं को युद्ध कौशल का अभ्यास कराते हैं, धीरे धीरे राजा ब्रूस अपनी एक सेना तैयार कर छोटे छोटे रियासत को युद्ध में परास्त कर अपने राज्य व वर्चस्व का विस्तार करते जाते हैं तथा सैनिक शक्ति का भी विस्तार होने लगता है.

इस तरह अपनी हिम्मत व धैर्य से राजा ब्रूस सभी राजाओं को परास्त कर अपने खोये हुए स्वाभिमान व शक्ति को पुनः प्राप्त कर लेते हैं. तथा चक्रवर्ती सम्राट के रूप में जाने जाते हैं.

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है की हिम्मत रखें तो जीवन की शुरूआत कही से भी हो सकती है. हमें कभी भी हिम्मत हारना नहीं चाहिए.

विकास लाटा, राजनांदगाँव द्वारा पूरी की गई कहानी

मकड़ी को देख कर राजा ने सोचा की एक छोटा सा जीव अपने कार्य को करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है वह नीचे गिर रही है फिर भी बार बार प्रयास कर अपना जाल बुन रही है और अंत में अपने प्रयास से अपना जाल बुन लेती है राजा इस मकड़ी से सीख लेकर फिर से युद्ध की तैयारी करता है और अच्छे से प्रयास करके अपनी पूरी तैयारी से युद्ध लड़ कर युद्ध जीत लेता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

सच्ची सुंदरता

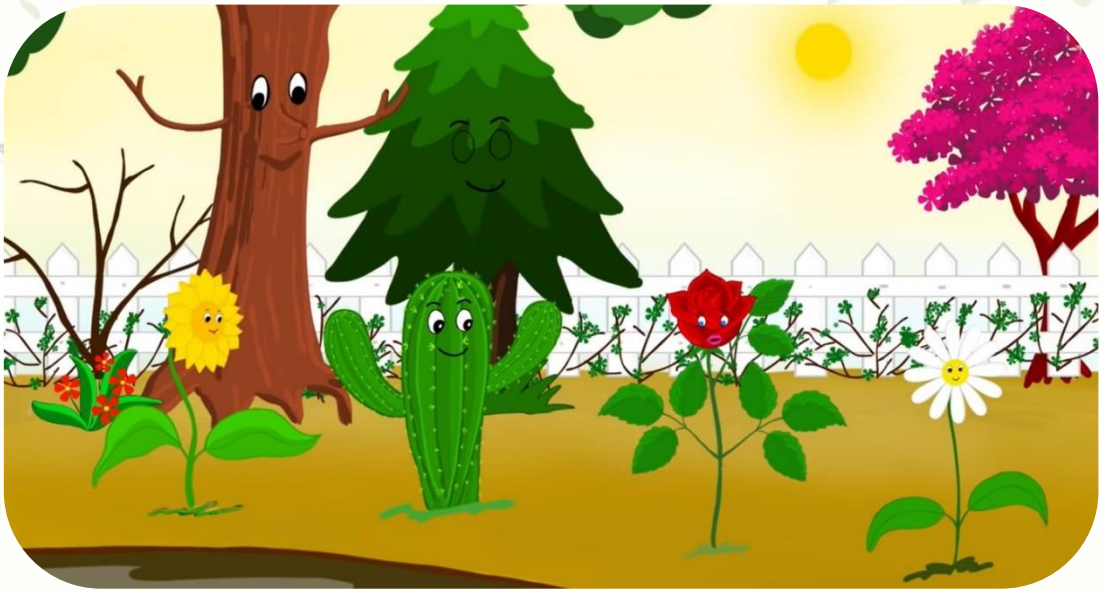

बहुत पुराने समय की बात है. एक बड़े से समुद्र के बीचों-बीच एक छोटा-सा सुंदर टापू था. पूरे टापू पर बहुत सारे पेड़-पौधे थे. मैदानों में हरी-हरी घास थी और हर रंग के सुंदर फूल वहाँ उगते थे.

फूलों की महक से सारा वातावरण महकता रहता था. वहाँ एक बहुत ही अच्छा राजा राज्य करता था. सभी की खुशी में वह खुश होता था और सबके दुखों को बाँटकर कम करता था. हर वर्ष वहाँ राज्य के कुलदेवता की पूजा की जाती थी और उसके लिए बगीचे के सबसे सुंदर फूल को चुना जाता था.

यह चुनाव राजा करता था. उस भाग्यशाली फूल को कुलदेवता के चरणों में चढ़ाया जाता था. पिछले कई वर्षों से बागीचे के सबसे सुंदर लाल गुलाब के फूलों को इसके लिए चुना जा रहा था. इसलिए गुलाब का पौधा बहुत ही घमंडी हो गया था. उसे लगता था कि वही एक है, जो सब फूलों में सबसे सुंदर हैं. घमंड के कारण वह तितलियों और मधुमक्खियों को अपने फूलों पर बैठने भी नहीं देता था.

यहाँ तक कि पक्षियों को अपनी डालियों के पास भी आने नहीं देता था. उसके ऐसे व्यवहार के कारण कोई तितली या पक्षी उसके पास आना ही नहीं चाहते थे.

हर वर्ष की तरह एक बार फिर वह दिन आने वाला था, जब कुलदेवता की पूजा की जानी थी.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

क्यों खिलते हैं फूल

रचनाकार- आशीष मोहन, नागपुर

दादी क्यों खिलते हैं फूल
कुछ पौधों में क्यों हैं शूल

सूरज नित्य निकलता है क्यों
चंदा पग-पग चलता है क्यों

किस कारण से हवा चले है
नित-नित क्यों सांझ ढले है

जुगनू में ज्योति कैसे है
सीपी में मोती कैसे हैं

धरती भीतर रतन भरे हैं
प्रकृति ये सब जतन करे है

दादी इनका हल बतलाओ
आज नहीं तो कल बतलाओ

*****

परीक्षाएं हमारे जीवन को तराशती हैं

रचनाकार- विजय कनौजिया, उत्तर प्रदेश

विद्यार्थी जीवन हो या सामान्य मानव जीवन, सभी के लिए परीक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं. जिस तरह एक जौहरी आभूषणों को सही आकार देने एवं आकर्षक बनाने हेतु पहले उसे तपती भट्ठी में तपाता है, ठीक उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन को सुदृढ़ एवं सफल बनाने हेतु तमाम परीक्षाओं का परीक्षार्थी बनना पड़ता है. इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर ही हम अपने जीवन को सही दिशा और दशा प्रदान कर सकते हैं.

ऐसी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने हेतु हमें संघर्ष, त्याग और पठन-पाठन की आवश्यकता होती है. इन सभी मापदंडों पर हमें खरा उतरना पड़ता है, तब कहीं जाकर हमें अपने उज्ज्वल भविष्य का गंतव्य प्राप्त होता है.

मानव जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर हमें परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं. इसीलिए हमें कभी भी परीक्षाओं से भयभीत नहीं होना चाहिए, अपितु स्वयं को उत्तीर्ण करने हेतु सदैव प्रयासरत रहना चाहिए, तभी हम अपने जीवन को सहज और सरल बना पाएँगे.

हमारे समस्त धार्मिक ग्रंथ और महापुरषों की जीवनियाँ इस बात को प्रमाणित करती हैं कि उन्हें भी अपने जीवन में बहुत सारी ऐसी परीक्षाएँ देनी पड़ीं, तब जाकर उनके जीवन का उद्देश्य सफल हुआ. जिन्हें आज हम अपने मार्गदर्शक एवं सफलतम जीवन के प्रेरणास्रोत के रूप में पढ़ते हैं.

जीवन का प्रत्येक संघर्ष एवं समस्याएँ हमारे जीवन में परीक्षा का ही स्वरूप हैं, हमें बिल्कुल भी इनसे विचलित नहीं होना चाहिए. हमारा निश्चित ध्येय एवं विचारधारा ही हमें उत्तीर्ण कराती है. इसीलिए मैं अपनी कुछ पंक्तियों के माध्यम से सदैव कहता हूँ-

"जिंदगी के मोड़ पर
जब हों कदम डगमग कभी
तुम कभी थमना नहीं
रुकना नहीं, डरना नहीं
होगा सहज फिर पथ तुम्हारा
जिंदगी के मोड़ पर....
साथ जब तक हैं तुम्हारे
धैर्य और साहस हमेशा
है निरंतर चाह जब तक
मंजिल मिलना है सुनिश्चित
हृदय पथ होगा सुसज्जित
जिंदगी के मोड़ पर...."

हमारा जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य जीवन में आने वाली तमाम संघर्षरुपी परीक्षाओं का ही परिणाम है. जिनके कारण ही हमारे जीवन की दशा एवं दिशा सुनिश्चित होती है. अतः चाहे विद्यार्थी जीवन हो या सामान्य जीवन, हमें परीक्षाओं से भयभीत नहीं होना चाहिए, क्योंकि ये परीक्षाएँ ही हमारे सम्पूर्ण जीवन को तराश कर मूल्यांकन योग्य एवं महत्वपूर्ण बनाती हैं.

*****

मम्मी

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

किटी पार्टी जमी हुई थी. अचानक बच्चों की कहानियां कहने की बात चली तो मिसेज रावत ने कहा, "भई कहानीवहानी तो हमें आती नहीं, फिर घर में दादा-दादी किस लिए हैं. इन लोगों से कुछ तो कराना ही चाहिए."

यह सुन कर सभी महिलाएं हंस पड़ीं. तभी पीछे से किसी ने कहा, "कितनी आउटडेटेड बात है यह. आज के जमाने में भी कहीं कहानी कही जाती है."

ज्यादातर महिलाओं के अनुसार यह बेकार का काम था. इतने में शहर के जाने-माने और संपन्न घर की बहू सुस्मिता ने कहा, "सॉरी, पर एक मदर के रूप में हमें यह काम करना ही चाहिए."

यह बात सुस्मिता ने कही थी, इसलिए सभी उसकी बात को ध्यान से सुनने लगीं. सुस्मिता ने आईपैड निकाल कर एक समाचार दिखाते हुए कहा, "पूरी दुनिया में एक नया ट्रेंड चल रहा है. मदर रोजाना रात को अपने छोटे बच्चों को एक कहानी सुनाती है, वह भी अपनी मातृभाषा में.सायकॉलिजस्ट का कहना है कि बच्चों के साथ इस तरह समय बिताने से आपकी बांडिंग बढ़ती है."

थोड़ी देर पहले बोरिंग लगने वाली एक्टिविटी करने के लिए सभी तैयार हो गईं. श्रुति पहले से ही सुस्मिता से अभिभूत थी. घर जाते हुए रास्ते में ही उसने तय कर लिया था कि आज रात को वह बेटे ऋतुल को कहानी सुनाएगी. डिनर के बाद वह वह बेटे ऋतुल के बेडरूम में पहुंची. इस तरह अचानक रात को कमरे में मम्मी को देख कर ऋतुल हैरान रह गया. आते ही श्रुति ने कहा कि आज वह उसे एक कहानी

सुनाएगी. ऋतुल यह सुन कर खुश हो गया कि बचपन से ही रोने पर उसे चुप कराने के लिए मोबाइल पकड़ाने वाली मम्मी आज उसे कहानी सुनाने आई है.

एक बड़े फॉरेस्ट में एक टेरापीन एंड एक रैबिट बनी रहता था. आगे की कहानी याद नहीं आई तो बात बदल दी कि एक ब्लैक कलर के रेवन को एक वेसल मिला. फिर...फिर उस वेसल में उसका फेस दिखाई दिया और फिर श्रुति यह बात भी भूल गई. थोड़ी देर में शेर की कहानी में गधा आ गया और सियार की जगह हिरन को अंगूर खट्टे लगे.

श्रुति को खुद पर दया और गुस्सा दोनों आया. पर हां, देर तक मोबाइल में सिर खपाने वाला ऋतुल उस रात अपनी मम्मी की गोद में सालों बाद गहरी नींद सो गया था.

*****

जीवन के हर पड़ाव को अपनाओ और जीभर जियो

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा

'गिलास आधा खाली' होने की मानसिकता मानव का सहज स्वभाव है. किसी को कितनी भी सुविधा मिल जाए, उसे जीवन में अधूरेपन का अनुभव होता ही रहता है. दो सहेलियाँ दस साल बाद मिलीं. दोनों ने अपने-अपने जीवन की बातें एक-दूसरे से शेयर कीं. एक युवती को एक समय प्यार में धोखा मिला, इसलिए उसने अभी तक विवाह नहीं किया था. अब वह सिर्फ अपने कैरियर पर फोकस करने के लिए विदेश चली गई थी. जबकि दूसरी युवती ने अपने प्रेमी के साथ विवाह कर लिया था.

दोनों ने अपनी मर्जी से उस समय जो उचित लगा, उस रास्ते को चुन लिया था. दस साल बाद दोनों जब एक-दूसरे के जीवन की बातें कर रही थीं तो दोनों को ही काॅफी का गिलास जीवन के अधूरेपन का साक्षी लगता है. विवाहित युवती अपनी अविवाहित सखी को देख कर सोचती है कि कितना मजेदार जीवन है इसका. कोई जिम्मेदारी नहीं, कोई रोक-टोक नहीं, कोई पूछनेवाला नहीं और न ही किसी तरह की किचकिच. इसके तो मजे ही मजे हैं. पैसे कमाओ, जितना मर्जी खर्च करो और आनंद से जियो.

जबकि विवाह न करने वाली युवती सोचती है कि इसका जीवन कितना अच्छा है. प्यार करने वाला पति है, मेरी तरह इसे अकेलापन काटने नहीं दौड़ता. बच्चे, पति और परिवार, कितनी सेट लाइफ है. यहाँ आप को शादी के लड्डू जो खाए, वह भी पछताए और जो न खाए वह भी पछताए वाली कहावत याद आ रही होगी. एक के पास प्यार है, परिवार है तो उसका मन स्वतंत्रता के लिए तरस रहा है. जबकि दूसरी के पास पैसा है, भरपूर आजादी है तो उसका मन प्यार और परिवार के लिए तरस रहा है. देखा जाए तो अधूरापन तो दोनों ओर है. जिस तरह शुरू में कहा गया है कि आधे गिलास खाली वाली मानसिकता तो लगभग हर किसी की रहती ही है.

महिलाओं में यह बात अधिक देखने को मिलती है. खास कर एक उम्र के बाद महिला अगर स्वीकारभाव की अवहेलना करे तो उसके अंदर अधूरेपन की भावना इतनी जटिलता से घर कर जाती है कि वह उसे अनेक तरह की मानसिक और शारीरिक समस्याओ तक ले जाती है. हर किसी के जीवन में तीस से चालीस साल का समयकाल ऐसा होता है जो उसके जीवन में अनेक बदलाव ले आता है. इस बदलाव को सहजता और सकारात्मकता से स्वीकार करना ही ठीक है, क्योंकि अगर इस बदलाव को आप स्वीकार नहीं कर सकीं और पहले जैसा आप का जीवन था, उसी तरह जीवन जीने की हठ पकड़े रहीं तो आप को मानसिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है.

बदलाव को स्वीकार करना सीखें:

टीनएज अथवा जवानी में आप अक्सर यह सोचती हैं कि यह समय कभी नहीं जाना चाहिए. आप इस समय को अधिक अच्छी तरह जीती हैं. इस समय आपका जीवन के संघर्ष से परिचय नहीं होता, मौजमस्ती, घूमना-फिरना आप का जीवन होता है. पर यही जीवन हमेशा नहीं रहने वाला. एक समय आएगा जब आपको मौजमस्ती को पीछे छोड़कर आगे बढ़ना होगा. आपको जिम्मेदारियों को स्वीकार करना सीखना पड़ेगा. अगर इन्हें नहीं स्वीकार किया तो मानसिक द्वंद्व और संताप का अनुभव करेंगी. उम्र का हर पड़ाव एक जैसा नहीं होता. हर पड़ाव पर बदलाव आता ही रहता है. इसे स्वीकार करना ही समझदारी है. इसे न स्वीकार कर के आप पहले जिस तरह जी हैं, उस तरह जीने की कोशिश करेंगी तो तकलीफ तो होगी ही.

जीवन का नया पड़ाव:

कालेज का समय और उसके बाद के दो साल जीवन के सर्वश्रेष्ठ साल होते हैं. इसके बाद युवतियाँ शादी के सपने देखने लगती हैं. विवाह यानी परीकथा यह मान कर बैठने वाली लोगों के लिए विवाह यानी साज-श्रंगार, रोमांटिक हनीमून, परफेक्ट फेरीटेल समान विवाह और हनीमून के बाद जो जीवन शुरू होता है, वही सच्चा वैवाहिक जीवन. यह भी कह सकते हैं कि इसके बाद आप का नवजीवन शुरू होता है. इसके बाद जीवन के लक्ष्य बदलते हैं, जीवन जीने की रीति बदलती है, एक समय दोस्तों से भरा आप का दोस्तों का समूह अब छोटा हो कर कुछ खास मित्रों तक ही सीमित रह जाता है. अब मैं और मेरा जीवन यह मंत्र ऊपर चढ़ा देने का समय शुरू होता है. अब आप को पूरी तरह परिवार को समय देना होता है. आप के जीवन में आया नया व्यक्ति और उसके साथ जुड़े लोगों को समर्पित करना होता है. अगर आप इस बदलाव को धैर्य से स्वीकार नहीं कर सकतीं तो विवाह में समस्या खड़ी होने में देर नहीं लगती. यहां डराने का आशय नहीं, पर समय समय पर आप के जीवन में आने वाले मोड़ों को किस अभिगम से अपनाती हैं, यह समझने की बात है. समय समय पर प्राथमिकताएँ बदलती रहती है.

बदलाव का स्वीकार मैच्योरिटी बढ़ाएगा:

समय समय पर बदलाव आते रहते हैं. इन बदलावों को स्वीकार करने से ही मैच्योरिटी बढ़ती है. इन बदलावों को स्वीकार करेंगी तो जीवन जीने में सहजता रहेगी और अधूरेपन का अनुभव करती रहेंगी तो जीवन को अच्छी तरह जी नहीं पाएँगीं क्योंकि समय समय पर आने वाले बदलाव की संभालना ही उचित है, इन बदलावों को स्वीकार कर खुद को संभालेंगी तो जीवन को अधिक अच्छी तरह और खुशी से जी सकेंगी. समय किसी के लिए नहीं रुकता. आप को ही उसमें अनुकूलता साध कर उसमें खुद को, मन को ढ़ालना पड़ता है. इसलिए जीवन के हर पल को दोनों हाथ फैला कर अपनाएँ, हर क्षण को खुशी से जीना सीखें, हर पल को पाना सीखें, अपने लिए समय निकालें, पर जिम्मेदारी से भी मत भागें.

*****

सुनो ध्यान से बेटियाँ

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

विकसित होता देश है, फिर भी छोटी सोच.
हाथ बढ़ा धन माँगते, करे नहीं संकोच.
इर्द गिर्द हैं घूमते, जैसे उड़ते बाज.
रचे स्वांग मानव यहाँ, सर पर पहने ताज.

लालच कितना मन भरा, दौलत रखे अमीर.
नहीं गरीबी देखते, रखे कभी ना धीर.
सुनो ध्यान से बेटियाँ, बदल रहा परिवेश.
हो गर अत्याचार तो, दर्ज करो तुम केस.

कलयुग का यह दौर है, सभी चटाओ धूल.
जिनके मन में मैल हो, चुभे उन्हें भी शूल.
कितने राक्षस घूमते, करते माँग दहेज.
तुम कलयुग की बेटियाँ, बनो सूर्य सा तेज.

करे नौकरी बेटियाँ, भरती गगन उड़ान.
हैं लक्ष्मी का रूप वे, उनको दो सम्मान.
स्नेह मिले माँ बाप सा, ऐसी हो ससुराल.
ये बेटी है या बहू, पूछे लोग सवाल.

*****

कुमार विश्वास

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

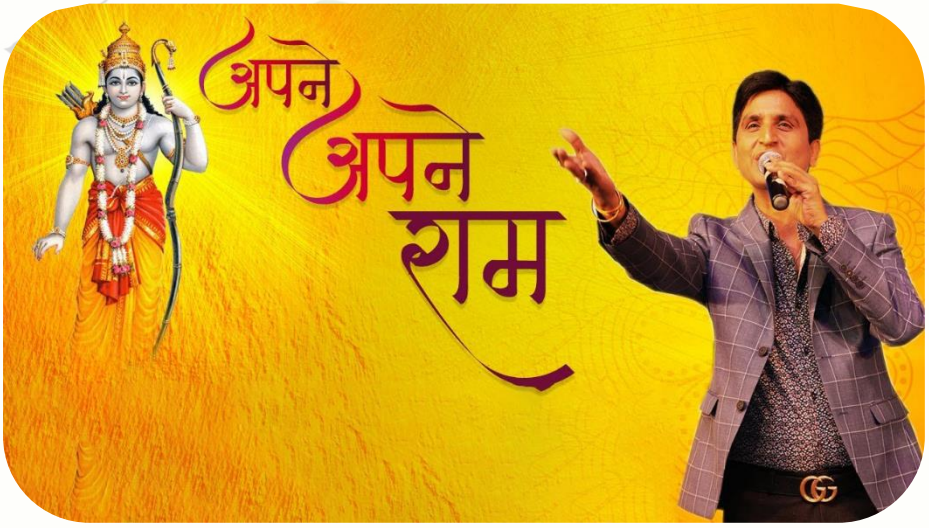

'अपने-अपने राम'' के सृजनकर्ता कविवर कुमार विश्वास के व्यक्तित्व को कौन नहीं जानता. उनकी गिनती लोकप्रिय साहित्यकारों में अग्रणी है. उनकी प्रतिभा को वंदन हैं, जिन्होंने भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र को पुनः सबके समक्ष लाने की पहल की है. उनकी काव्यप्रतिभा न सिर्फ भारत वरन विश्व के साहित्यिक जगत में, जन-जन में फूलों की खुशबू की तरह फ़ैल चुकी है. जिससे लोगों के मन में श्रीराम की मानस कथा को सुनने, पढ़ने व कहने की अभिलाषा जागृत होने लगी है. ऐसा कवि कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता. बल्कि वो तो देवदूत की भाँति भगवान के अवतार को घर -घर तक पहुँचाने हेतु मानव रूप में अवतरित हुए हैं. स्पष्ट, मधुर स्वर में लोगों के अंतर्मन को स्पर्श कर जाने की अद्भुत कला दृष्टिगत होती हैं.

इतनी प्रतिभा होते हुए भी सरल व्यक्तित्व के रूप में अपनी पहचान बनाना कोई सामान्य बात नहीं है. भगवान श्रीराम की भक्ति करनेवाले इतने सरल, सरस और सहज प्रकृति वाले ऐसे मानव को महामानव कहना चाहिए. उन्होंने राम नाम की शक्ति से आम जनमानस को परिचित कराने का बीड़ा उठाया हैं. वे अपनी काव्यकला के माध्यम से श्रीरामचरितमानस की पावन गाथा को बच्चे-बच्चे तक पहुँचाने में सफल हो रहे हैं. उनकी काव्यकृति सुनकर हर कोई मंत्रमुग्ध हो जाता है. लयबद्ध स्वर, मीठी-सुरीली मनमोहक आवाज से भक्तिभाव को जागृत करने की कला किसी जादूगर से कम नहीं है. यह इतना आसान और साधारण कार्य नहीं है. किसी कविता की चंद पंक्तियों को याद करने में कई दिन लग सकते हैं किन्तु विश्वास जी तो सहज रूप में गायन कर लेते हैं. उनकी अद्भुत प्रतिभा की कोई सीमा नहीं है जिसे किसी पैमाने से माप सके.

आज ज़ब सारी दुनिया पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण में सराबोर है ऐसी परिस्थिति में श्रीराम की मानस कथा के प्रति सबका ध्यानाकर्षण करने में श्री कुमार विश्वास की काव्यकथा विशेष योगदान दे रही है. बच्चों के भविष्य को सही दिशा और सुन्दर व्यक्तित्व स्थापित करने के लिए 'अपने -अपने राम' एक उत्कृष्ट माध्यम है. सनातन संस्कृति के संरक्षक के रूप में कुमार विश्वास अपनी काव्यकथा से ऐसी ही नित्य प्रति उन्नति करते रहें.उनके लिए हृदय से यही शुभकामनाएँ हैं.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

सबसे शक्तिशाली कौन

एक घने जंगल में एक बंदर और एक हाथी रहते थे.हाथी बड़ा शक्तिशाली था.वह ऊँचे और बड़े पेड़ों को एक ही बार में उखाड़ फेंक देता था.बंदर काफी कमज़ोर था, लेकिन वह बड़ा ही फुर्तीला और तेज था.दिनभर बंदर,जंगल के पेड़ों पर उछल कूद करता था.

दोनों बंदर और हाथी को अपने गुणों पर बहुत ही घमंड था. दोनों ही एक-दूसरे से खुद को ज्यादा अच्छा और बेहतर मानते थे.इस वजह से दोनों में हमेशा बहस होती रहती थी.

जंगल में एक तोता भी रहता था,जो अक्सर बंदर और हाथी की हरकतें को देखता था.वह इन दोनों के लड़ाई-झगड़े से परेशान हो चुका था. एक दिन उस तोते ने उन दोनों से कहा-"जिस तरह तुम दोनों लड़ते हो, इससे कोई फैसला नहीं होने वाला है.तुम दोनों में एक प्रतियोगिता के जरिए आसानी से यह बताया जा सकता है कि तुम दोनों में से सबसे शक्तिशाली कौन है."

बंदर और हाथी दोनों को तोते की बात समझ गया.दोनों ने फिर एक साथ पूछा-इस प्रतियोगिता में हमको क्या करना होगा?

तोते ने कहा-'इस जंगल को पार करने पर एक दूसरा जंगल आता है.जहाँ पर एक पुराना केले का वृक्ष है,जिस पर फल लगा हुआ है वह अनोखा केले का फल है.उस फल को खाने पर कभी समाप्त नहीं होता. तुम दोनों में से उस अनोखा केले के फल को जो पहले लाएगा, वह ही इस प्रतियोगिता का विजेता बनेगा और शक्तिशाली कहलाएगा.

तोते की बात सुनते ही बंदर और हाथी बिना कुछ सोचे-समझे दूसरे जंगल की तरफ निकले.बंदर ने अपनी फुर्ती दिखानी शुरू की.वह एक ही छलाँग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक पहुँच जाता.वहीं, हाथी तेजी से दौड़ने लगा और रास्ते में आने वाली हर चीज को अपने मजबूत शरीर से उखाड़ फेंकता.

कुछ छड़ पश्चात सामने नदी को देखकर बंदर हार मान लिया और हाथी को कहने लगा-" हाथी भाई! नदी में पानी भरा हुआ है मैं इसे कैसे पार कर सकता हूँ."तभी हाथी ने कहा-बंदर भाई, आप मेरे पीठ पर बैठ जाइए,मैं नदी पार करा देता हूँ.बंदर हाथी की बात मान लिया और वह हाथी के पीठ पर बैठ गया.इस तरह दोनों ने नदी पार कर,दूसरे जंगल में पहुँच गए. फिर दोनों ने मिलकर अनोखा केले की फल लगे हुए पेड़ को भी खोज निकाला.

सबसे पहले हाथी ने अपनी सूंड से उस पेड़ को गिराना चाहा, लेकिन वह पेड़ काफी मजबूत था.हाथी के प्रहार से वह पेड़ नहीं गिरा.फिर हाथी ने निराश होकर कहा-'मैं अब यह अनोखा केले के फल को नहीं तोड़ सकता.' बंदर बोला- 'चलो, मैं भी एक बार कोशिश करके देखता हूँ.'

बंदर फुर्ती से उस पेड़ पर चढ़ने लगा और उस डाली पर पहुँच गया.जहाँ पर अनोखा केले का फल लगा हुआ था.उसने वह फल तोड़ लिया और पेड़ के नीचे बैठे हुए हाथी को दिया.

इसके बाद दोनों वापस नदी पार करके अपने जंगल लौट आए और तोते को वह अनोखा केले का फल दिया.

फल पाने के बाद तोता जैसे ही इस प्रतियोगिता के लिए विजेता का नाम घोषित करने ही वाला था.तभी बंदर और हाथी ने मिलकर उसकी बात को रोक दिया.

दोनों ने एक साथ कहा-' तोते भाई, अब हमें विजेता का नाम जानने की आवश्यकता नहीं है.इस प्रतियोगिता को हम दोनों ने मिलकर पूरा किया है.हमें यह समझ में आ गया है कि हर किसी का गुण अपने आप में अलग और खास होता है. हमने यह भी फैसला किया है कि आगे से अब हम कभी भी इस बात पर बहस भी नहीं करेंगे और मित्र की तरह इसी जंगल में रहेंगे.'

तोते को बंदर और हाथी की बात सुनकर काफी खुशी हुई. उसने दोनों से कहा, 'मैं तुम्हें यही समझाना चाहता था कि अलग-अलग गुण और शक्तियाँ ही हमें एक दूसरे की मदद करने के काबिल बनाती हैं.साथ ही हर किसी की अपनी कमजोरियाँ भी होती हैं, इसलिए एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना ही सबसे अच्छा होता है.'

उसी दिन से हाथी और बंदर दोनों मित्र हो गए और वह जंगल में खुशी-खुशी रहने लगे.

बच्चों इस कहानी के माध्यम से हमने सीखा कि एक-दूसरे के गुणों का सम्मान करना और आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए.

अनन्या तंबोली, कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी

एक बार की बात है एक हाथी अपने झुंड के साथ घूम रहा था लेकिन अचानक से वह अपने झुंड से अलग हो गया उसने बहुत प्रयास किया की उसे हाथी का झुंड मिल जाए लेकिन उसे नहीं मिल रहा था.तो वह पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया और रोने लगा उस पेड़ के ऊपर एक बंदर बैठा हुआ था जब बंदर ने हाथी को देखा तो बंदर पेड़ से नीचे आया और हाथी से पूछा क्या हुआ हाथी तुम यहां अकेले क्यों बैठे हो हाथी ने कहा बंदर भाई मैं अपने साथियों के साथ घूम रहा था और अचानक से ही वह आगे निकल गए और मैं पीछे छूट गया मैंने उन्हें बहुत ढूंढा लेकिन वह मुझे मिल ही नहीं रहे.तब बंदर ने हाथी से कहा कोई बात नहीं मित्र चलो हम दोनों मिलकर तुम्हारे साथियों को ढूंढ लेंगे तब हाथी बोला मुझे बहुत भूख भी लगी है मुझे लगता है मैं ज्यादा दूर अब नहीं चल पाऊंगा तब बंदर ने कहा चलो आगे देखते हैं कुछ खाने को मिले तो खा लेंगे तभी अचानक उन्हें एक केले का पेड़ दिखाई दिया पेड़ में बहुत सारे पके पके केले थे लेकिन हाथी तो थक गया था वह केले तोड़ ही नहीं पा रहा था बंदर ने सोचा कि चलो मैं ही पेड़ पर चढ़ जाता हूं और सारे पके पके केले तोड़ लाता हूं यह सोचकर बंदर पेड़ पर चढ़ा और कुछ पके पके केले खुद खाने लगा और कुछ केले हाथी को दे रहा था ऐसे ही वह दोनों मिलकर पके केले पेट भर खा लिए. केले खाने के पश्चात दोनों फिर से उस हाथी के दोस्तों को ढूंढने लगे तभी अचानक नदी के किनारे उस हाथी के दोस्त दिखे वह नदी में पानी पी रहे थे .यह हाथी उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और जाकर उनके साथ वह भी नदी में मस्ती करने लगा सभी हाथियों ने मिलकर उस बंदर को धन्यवाद दिया.

कु. मोनिका साहू, पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

बंदर और दरियाई घोड़ा

एक जंगल में बंदर और दरियाई घोड़ा दोस्त थे. दोनो मे गहरी दोस्ती थी. एक दिन दोनो साथ मे खेल रहे थे. तभी बंदर को प्यास लगी. बंदर पास के तालाब मे पानी पीने गया. अचानक एक घड़ियाल ने आकर बंदर को पकड़ लिया और पानी मे खीचने लगा. बंदर जोर - जोर से बचाओ की आवाज करने

लगा. तब दरियाई घोड़े को उसकी आवाज सुनाई दी, यह तो मेरे दोस्त बंदर की आवाज हैं. वह दाैड़ता हुआ, वहां पहुचकर देखा तो घड़ियाल, बंदर को पानी मे खीच रहा था. दरियाई घोड़ें ने बिना देर किए बंदर को बचाने के लिए पानी मे कूद पड़ा और उसने अपने दोस्त बंदर को घड़ियाल से बचा लिया. बंदर बहुत खुश हुआ. बंदर ने दरियाई घोड़े को धन्यवाद दिया, तब दरियाई घोड़े ने कहा, धन्यवाद की कोई जरूरत नही दोस्त, आखिर दोस्त मुसिबत मे मदद नही करेगा तो कौन करेगा. दोनो वहा से जाने लगे, तब रास्ते मे एक केले का पेड़ दिखा. बंदर ने कहा दोस्त तुमने मेरी जान बचाई है, चलो मै तुम्हे केले खिलाता हू और इस तरह दोनो दोस्त खुशी - खुशी केले खाने लगे. केले खाने के बाद वे दोनो दोस्त उस जगह को छोड़कर दूसरे जगह पर रहने चले गए और एक साथ हंसते - खेलते रहने लगे.

कहानी से शिक्षा - मुसीबत आने पर घबराना नही चाहिए व उससे बचने के उपाय सोचने चाहिए. वक्त पड़ने पर अपनो पे मुसीबत आने पर उनका साथ देना चाहिए.

कुमारी प्रज्ञा श्रीवास, आठवीं, बस्तर द्वारा भेजी गई कहानी

मीलू की खोज

एक जंगल में एक हिप्पो का परिवार रहता था.उस परिवार में एक बच्चा था.उसका नाम मीलू था.मीलू बहुत ही शांत बच्चा था. एक दिन वह खेलते -खेलते बहुत दूर निकल गया और रास्ता भूल गया. रास्ता ढूंढते -ढूंढते वह थक गया.उसे भूख लगने लगी, तभी उसे एक चिड़िया मिली. उसने कहा क्या तुम मुझे थोड़ा खाना दोगी. चिड़िया बोली नहीं मैं तो बहुत छोटी हूं, मेरे पास तो इतना ही खाना है. इससे तुम्हारा पेट नहीं भरेगा. तुम किसी और के पास जाओ.मीलू और आगे गया तो उसे एक गिलहरी मिली,मीलू ने कहा क्या तुम मुझे थोड़ा खाना दोगी, गिलहरी बोली नहीं मेरे पास मेरे लिए ही खाना है और वह चली गई. फिर उसे एक हाथी मिला,मीलू ने कहा क्या तुम मुझे थोड़ा खाना दोगे,हाथी बोला मुझे बहुत भूख लगी थी. मैंने तो अपना सारा खाना खा लिया. फिर मीलू थककर एक पेड़ के नीचे बैठ गया, वह केले का पेड़ था.उस पेड़ पर एक बंदर रहता है, बंदर ने देखा कि मीलू बहुत थका हुआ हूं. उसने मीलू से कहा तुम कौन हो, यहां कैसे आ गए.मीलू ने सारी बातें बताई, फिर बंदर ने उसे केले खिलाएं और उसके घर पहुंचा दिया. इस प्रकार बंदर और मीलू दोस्त बन गए.

रामेश्वरी सी.के. जलहरे, बलौदा बाजार द्वारा भेजी गई कहानी

श्रेष्ठ कौन?

एक जंगल में बंदर और हाथी रहते थे. दोनों को अपने ताकत और गुण का घमण्ड था. दोनों की एक दूसरे से बिल्कुल भी ना बनती. दोनों के झगड़े से जंगल के सभी जानवर परेशान थे. भालू उन दोनों को समझाने का बहुत प्रयास करता पर दोनों अपने जिद में अड़े रहते की मैं श्रेष्ठ हूँ. एक दिन

भालू ने दोनों के सामने एक शर्त रखी की नदी के उस तरफ एक जादुई केले का पेड़ हैं. जो पहले जादुई केले को तोड़कर लायेगा वही श्रेष्ठ होगा. फिर क्या,,दोनों ने शर्त मान ली और झट से नदी की तरफ भागने लगे. बंदर उछल- कूद करते पहले ही नदी के पास पहुँच गया. लेकिन बन्दर नदी के तेज बहाव के कारण नदी पार नही कर पाया .हाथी उसके पीछे आया. बन्दर ने कहा मैं नदी पार नही कर सकता डूब जाऊंगा. अब तुम ही केला ला सकते हो. तब हाथी ने उसे अपने पीठ में बैठा के नदी पार कराया. बन्दर को समझ आ गया की आज हाथी ने उसकी मदद की इसीलिए हाथी श्रेष्ठ है. नदी पार करते ही जादुई केले का पेड़ दिखाई दिया. केला बहुत ऊँचाई पर लगा था. हाथी ने प्रयास किया पर तोड़ नही पाया. तब बन्दर ने पेड़ पर चढ़कर केले तोड़कर हाथी को दिया. अब हाथी को भी समझ आने लगा की बन्दर ने उसकी मदद की इसीलिए बन्दर श्रेष्ठ है. केले लेकर वो दोनों भालू के पास गए. भालू विजेता का नाम घोषित करने वाला था की बंदर और हाथी दोनों ने मिलकर कहा हम दोनों विजेता है और हँसने लगे और खुशी- खुशी रहने लगे. इस कहानी से ये सीख मिलती है किसी को कम या छोटा नही समझना चाहिए. सभी का अपना महत्व है

कु. संजना मानिकपुरी, कक्षा - पांचवी, शास. प्राथ. शाला बरदुली, जिला -मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

दरियाई घोड़े की दोस्ती

एक जंगल था, जहाँ पर बंदरो का राज था. उस जंगल मे केले के पेंड़ बहुत थे. उसी जंगल मे एक दरियाई घोड़ा था, जो अपने माता - पिता से बिछड़ कर उस जंगल मे पहुंच गया था. उसे भूख लगती तो वह केले खाने चाहता था, पर बंदर उसे अपने जंगल के केले खाने नही देते थे, जिससे वह उदास रहता था. एक दिन वह दरियाई घोड़ा घूम रहा था, तभी उसे एक बंदर के चीखने की आवाज सुनाई दी. दरियाई घोड़ा उस आवाज की ओर दौड़ कर गया तो देखा कि एक बंदर पानी मे गिर गया है और डूब रहा था, जिससे वह मदद के लिए चिल्ला रहा था. दरियाई घोड़े ने बिना देर किए, पानी मे जाकर बंदर को बचा लिया और बाहर ले आया. यह देख जंगल के सभी बंदरो ने दरियाई घोड़े को धन्यवाद किया और उसके साथ अपने गलत व्यवहार के लिए माफी मांगी. फिर जिस बंदर की जान दरियाई घोड़े ने बचाई थी,उसने दरियाई घोड़े को खूब सारे केले खाने को दिए और वे दोनो अच्छे दोस्त बन गए.

कहानी से शिक्षा - 1) हमे सभी से अच्छा व्यवहार बनाकर रखना चाहिए ताकि समय पड़ने पर हम एक-दूसरे की मदद कर सके.

2) मुसीबत मे पड़े हुए कि मदद जरूर करनी चाहिए. चाहे उसका व्यवहार आपके प्रति कैसा भी हो .

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

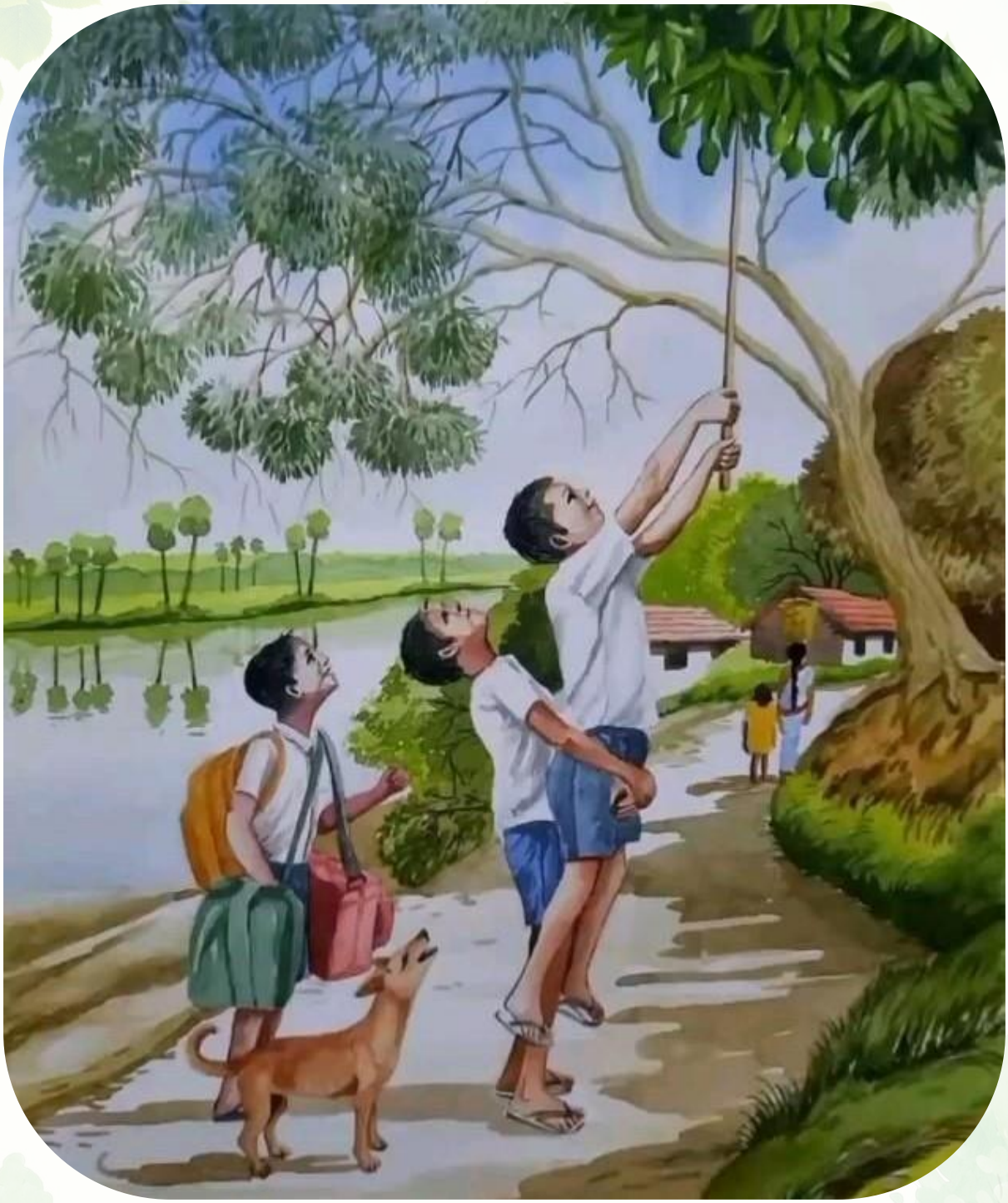

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

सुंदर घर, सुंदर जीवन

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

बीसवीं सदी के महान दार्शनिक जे कृष्णमूर्ति आज एक भुला दिया गया नाम है. 15 मई, 1895 को मद्रास और बेंगलुरु के बीच स्थित मदनापल्ली गाँव में पैदा हुए कृष्णमूर्ति के दादाजी संस्कृत के विद्वान थे. माता कृष्णभक्त, धर्म-परायण और मृदु स्वभाव की थीं. जब कृष्णमूर्ति साढ़े दस साल के थे तभी उनकी माँ की मृत्यु हो गई थी. कृष्णमूर्ति अक्सर मलेरिया से पीड़ित रहते थे. लंबा जीवन जी सकें ऐसी आशा नहीं थी. वह रोज स्कूल नहीं जा सकते थे. पढ़ने में कमजोर थे. उनकी गिनती मंदबुद्धि बच्चों में होती थी. बचपन से ही वह अंतर्मुखी थे. प्रकृति का बारीकी से निरीक्षण करते. खूब दयालु थे. स्कूल में गरीब बच्चों को अपनी पेन, पेंसिल, स्लेट और किताबें दे देते थे. घर आए भिखारियों को टोकरी भर कर चावल दे देते. घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी. थिरोसाॅफिस्ट पादरी लेड बीटर ने बालक कृष्णमूर्ति को देखा तो उसमें उन्हें असाधारण शक्तियाँ नजर आईं. उन्हें कृष्णमूर्ति जीसस क्राइस्ट और भगवान बुद्ध की कोटि के लगे. थियोसोफिल सोसाइटी की उस समय की प्रमुख एनीबेसेंट ने कृष्णमूर्ति को दत्तक ले कर उन्हें अँग्रेजी और अन्य विषय पढ़ाए. उन्हें शारीरिक रूप से सक्षम बनाया और उन्हें पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा. मैट्रिक में तीन बार फेल होने के बाद कृष्णमूर्ति ने पढ़ाई छोड़ दी.

15 साल की उम्र में कृष्णमूर्ति ने विश्वविख्यात पुस्तिका 'श्री गुरुचरण' लिखी. एनीबेसेंट ने उन्हें जगदगुरु बनाने के लिए 1911 में 'पूर्व के तारक संघ' की स्थापना की. दुनिया भर के लोगों को उसका सदस्य बनाया. अगस्त, 1922 में कृष्णमूर्ति को आध्यात्मिक अनुभव हुए.

दुनिया भर में फैली थियोसोफी की संस्थाओं में एक 'आर्डर आफ द स्टार इन द ईस्ट ' का अध्यक्ष पद जे कृष्णमूर्ति को दिया गया था. परंतु जीवन की अंतर्ज्योति का दर्शन कर चुके जे कृष्णमर्ति ने उस पद का त्याग कर ऐसी शिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया जहाँ विद्यार्थियों को संयम और सर्वांगीण शिक्षा का पाठ पढ़ाया जाए. उनके भाई नित्यानंद की 1925 में मृत्यु हो गई. अगस्त, 1929 में कृष्णमूर्ति ने जगदगुरु होने से मना कर दिया. उन्होंने 'तारक संघ' का विसर्जन कर दिया. संस्था को मिले दान को लौटा दिया. किसी भी संस्था, संघ, गुरु विचारधारा, मंत्रजाप, विधि और संप्रदाय को 'सत्य' का दुश्मन माना.

अब वह अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट के ओहायो नामक नगर में स्थाई हो गए. दुनिया भर की यात्रा करते रहे. हर किसी को संस्था, मंडल या अनुयायियों के बिना अकेला जीवन रहने और मुक्त जीवन जीने का संदेश देते रहे.

कहा जाता है कि उनमें चमत्कारिक अलौकिक शक्तियाँ थीं. उनके हाथ के स्पर्श से ही बीमारियाँ दूर हो जाती थीं. पर वह अपनी इस शक्ति का भाग्य से ही उपयोग करते थे. वह स्पष्ट कहते थे कि चमत्कार और अध्यात्म का कोई संबंध नहीं है.

हालीवुड की एक फिल्म कंपनी ने उन्हें एक फिल्म में बुद्ध का अभिनय करने के लिए उस समय पांच हजार डालर का ऑफर किया था. जिसके लिए उन्होंने मना कर दिया था.

कृष्णमूर्ति खुद को किसी का गुरु नहीं मानते थे. खुद को वह मात्र 'मार्गदर्शक' मानते थे. वह कहते थे, "आप को खुद अपना दीप बनना है. आप खुद अपने मित्र और शत्रु हैं." वह कहते थे कि जीवन की समस्याओं का मूल मन के अंदर जमा हुआ भूतकाल का स्तर ही है. पलपल की सदैव जागृति द्वारा ही मानव सुख-शांति से जी सकता है.

कृष्णमूर्ति के उस समय के मित्रों में तमाम सुप्रसिद्ध महारानियों से ले कर बौद्ध साधु भी थे. बर्नार्ड शाॅ, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और दलाई लामा भी थे. बर्नार्ड शाॅ ने कहा था, "कृष्णमूर्ति जैसा सुंदर आदमी मैं ने देखा नहीं है."

खलिल जिब्रान ने कहा था, "कृष्णमूर्ति ने मेरे कमरे में प्रवेश किया तो मैं ने मन ही मन अनुभव किया कि साक्षात प्रेम के अवतार पधारे हैं."

आल्डस हकसली ने कहा था, "कृष्णमूर्ति को सुनते हुए मुझे लग रहा था कि मैं बुद्ध को सुन रहा हूँ."

जे कृष्णमूर्ति के ऐसे तमाम विधान हैं, जो याद करने लायक हैं. वह कहते थे, "25 लाख वर्ष पूर्व हम जंगली थे. आज भी सत्ता, प्रतिष्ठा की चाहत, दूसरे की हत्या, ईर्ष्या आदि स्वरूप में हम जंगली ही हैं. मेरे लिए यह बहुत बड़ी खोज है. मैं नहीं मानता कि मानव जाति में आमूल परिवर्तन हुआ है."

वह कहते थे, "लाखों वर्षों से हम जैसे थे, वैसे ही हैं. लोभी, ईर्ष्यालु, आक्रामक, अनदेखा, चिंतातुर और हताश... हम धिक्कार, भय और नम्रता का विचित्र मिश्रण हैं. हम हिंसा और शांति दोनों हैं. हम ने बैलगाड़ी से ले कर विमान तक की प्रगति की है, परंतु मानसिक रूप से जरा भी नहीं बदले. हमें सुंदर घर तो बनाना आता है, परंतु उस घर में सुंदर जीवन जीना नहीं आता. दुनिया के लोग भले शांति, प्रेम, अहिंसा, दया, भाईचारा की बातें करते हों, पर इस जगत में सब उल्टा ही चल रहा है. बेबिलोन में खुदाई के दौरान वर्षों पूर्व का पत्थर का एक अवशेष मिला था. जिस पर लिखा था, 'यह अंतिम युद्ध होगा, परंतु उसके बाद पांच हजार युद्ध हुए और अभी भी चल रहे हैं. हर नए युद्ध में पहले के युद्ध की अपेक्षा अधिक से अधिक संपत्ति और मनुष्यों को क्रूरतापूर्ण खत्म किया जा रहा है. उनके कहने का तात्पर्य यह था कि यह जगत जंगल जैसा है, उजड्ड रण जैसा भी है, अंधकारमय भी है.

वह कहते थे, "मात्र पुस्तक की पढ़ाई भरोसेमंद नहीं होती. भरोसा अंतर्मन से आना चाहिए. आप अपना महत्व नहीं बढ़ाएँगे, धन और कीर्ति का ढ़ेर नहीं जमा करेंगे, जीवन को स्वर्ण बनाने के बजाय कबाड़ की तरह जीवन को कभी नहीं बनाएँगे. आप को जीवन की समग्रता समझनी होगी. उसके एक छोटे हिस्से के लिए नहीं. इसके लिए आप को पढ़ना चाहिए, आप को आकाश में देखना चाहिए, आप को गाना चाहिए, आप को नृत्य करना चाहिए, कविताएँ लिखनी चाहिए और दुख भी सहन करना चाहिए, जिससे जीवन को समझा जा सके."

वह कहते थे, "बड़ी से बड़ी कला यानी जीवन जीने की कला. जीवन यानी संघर्ष, अशांति और दुख- ऐसी वाहियात मान्यताएँ जीवन को बुझा नहीं सकतीं. जीवन कितना सुंदर, अद्भुत और जीने लायक है, इसका हमें भान नहीं है. पूर्वजन्म में प्रभु ने पाप की इस जीवन में शिक्षा दी ऐसी मान्यता जलते जीवनदीप को बुझने नहीं देती. जीवन जीने की कला क्या है, यह जानने का हमारे पास समय ही नहीं है. वैज्ञानिक बनने के लिए हम वर्षों खपा देते हैं, आश्रमों में जा कर बाकी का जीवन उसमें समर्पित कर देते हैं और जीवन निर्वाह के लिए कमाई करने में पूरा जीवन खर्च कर डालते हैं, परंतु जीवन जीने की कला क्या है, यह जानने के लिए हम जीवन का एक दिन भी नहीं खर्च करते. इसलिए जीवन जीने की कला अवश्य सीखनी चाहिए.

ऐसे क्रांतिकारी दार्शनिक जे कृष्णमूर्ति का 17 फरवरी, 1986 को अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट के ओहायो नगर में देहावसान हो गया था.

उनके अग्निदाह के समय पहले से व्यक्त की गई उनकी इच्छा के अनुसार मात्र सात व्यक्ति ही उपस्थित थे. सेंट जेवियर्स कालेज के अर्थशास्त्र विभाग के पूर्व प्राध्यापक बबाभाई पटेल ने जे कृष्णमूर्ति के बारे में अनेक पुस्तकें लिखी हैं. यहाँ दी गई जानकारी उनके और गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय के सौजन्य से दी गई है.

*****

विश्व गौरैया दिवस

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

रानी गौरैया को सभी गौरैया और गौरा अपना शुभ चिन्तक मानते थे.

रानी गौरैया सचमुच सभी गौरा और गौरैया का बहुत ध्यान रखती थी. सबके साथ मिल जुल कर वह रहती थी.

एक रोज रानी गौरैया ने अपने सभी बिरादरी के गौरा और गौरैया को बुला कर बोली परसों 20 मार्च को हम सब अपना विश्व गौरैया दिवस मनाएंगे. इस अवसर पर इस साल मैं एक सभी पंक्षियों की सम्मेलन बुलाना चाहती हूँ ताकी सभी पक्षी अपनी अपनी समस्या को सबके सामने रख सके और उसका समाधान कर सके.

यह सुझाव तो बहुत सुन्दर है वैसे हमारे अस्तित्व के समाप्त हो जाने के डर से सारा विश्व हर साल 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाता है.

इस बार हम अपना विश्व गौरैया दिवस सभी पक्षियों के साथ मिल कर मनाएंगे.

बहुत ही सुन्दर रहेगा हम सब इसका पूर्ण रुप से समर्थन करते हैं.

रानी गौरैया सबका समर्थन पा कर बहुत खुश हुई.

अगले दिन सम्मेललन कराने की सूचना सारे पक्षियों को दे आई और मोर हंस गरुण कबूतर बुलबुल बगुला बत्तक नीलकंठ तोता तीतर चातक कौआ शुतुरमुर्ग कोयल चील बाज गिद्ध

मैना सभी को विशेष रुप से सम्मेलन में अपनी बात कहने को कह आई.

सम्मेलन के दिन एक बड़े पंडाल के नीचे लगी मंच और कुर्सी पर पक्षी आ कर जमा होने लगे.

जब सारे पक्षी आ कर मंच पर बैठ गए तब रानी गौरैया ने सभी दूसरे पक्षियों का फुलों का माला पहना कर स्वागत किया और मंच से माइक ले कर कहने लगी आज विश्व गौरैया दिवस पर मैं अपनी बात आप सब के सामने रखना चाहती हूँ. हम पहले हर घर में अपना घोसला बना कर रहते थे. जब घर में हमारे रहने की जगह छीन गई तो हम घर छोड़ कर जंगल झाड़ी में रहने लगे.

हमारे बिरादरी के बहुत सारे लोगों की जहरीला दवा का फसलों पर छीड़काव से मौत हो गई. हम जहरीला भोजन कर के मर गए. इसलिए हमने फसलों को खाना बंद कर दिया और कीट पतंगों को खाना छोड़ दिया. हमारे बिरादरी के लोग जहर के फसलों पर छीड़काव से बहुत परेशान रहते हैं. इसलिए हमारी मांग है कि हमारे खाने पीने की अच्छी व्यवस्था की जाए और जहर मिला भोजन करने को न दिया जाए. तभी हमारा अस्तित्व बच पाएगा वनाॅ एक दिन हमारा पूर्ण विनाश हो कर ही रहेगा. रानी गौरैया के बात का सभी पक्षियों ने ताली बजा कर एक स्वर से स्वागत किया.

रानी गौरैया ने आगे कहा हमारे रहने के लिए लोग अपने घर में मोक्का झरोखा पटनी जरुर बनवाएं ताकी हम वहां अपना घोसला बना कर रह सके.

हर साल विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है मगर हमारे बचाने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है. हम चाहते हैं विश्व के हर देशो की सरकार हमारे बचाव के लिए काम करे ताकी हम जिन्दा रह सकें. हम अपनी बात यहीं समाप्त करती हूँ और निवेदन करती हूँ कि जो भी दूसरे पक्षी अपनी बात कहना चाहते हों वो मंच पर खड़े हो कर निःसंकोच कहें.

रानी गौरैया की बात सुन कर सबसे पहले गरुण राज मंच पर खड़े हो कर बोले मैं रानी गौरैया के हर बात का स्वगत करता हूँ और चाहता हूँ कि विश्व की हर सरकार हम पक्षियों के जीवन को बचाने के लिए ठोस कदम उठाए और हमारे मारने पर प्रतिबंध लगाए ताकी हम सभी पक्षी बिना डर भय के अपना जीवन जी सकें. इतना कह कर गरुण राज अपनी बात को समाप्त कर के बैठ गए.

फिर राष्ट्रीय पक्षी मोर मंच पर आ कर बोला जिस तरह से आज हम सब विश्व गौरैया दिवस मना रहे हैं उसी तरह हम एक दिन विश्व पक्षी दिवस भी मनाएं जिससे सारे पक्षी अपनी अपनी समस्याओं को सबके सामने रख सकें

इतना कह कर मोर ने अपनी बात समाप्त कर के बैठ गया.

फिर मंच पर गिद्ध आ कर बोला जिस तरह से गौरैया दिवस पर सभी पक्षी यहां इकठ्ठा हो कर अपनी बात सबके सामने रख रहे हैं उसी तरह हम गिद्धों का भी दिन प्रति दिन संख्या घटती जा रही है. हम भी सड़े गले जानवरों के मांस खा कर मर रहे हैं. इसलिए हमारे लिए खाने के लिए ताजा मांस दिया जाए ताकी हम सड़गले मांस न खा सकें हम अपनी बात यहीं पर समाप्त करते हैं.

फिर बारी बारी से कबूतर तोता मैना बत्तख कौवा चातक बगुला हंस ने भी अपनी बात सबके सामने रखा और अपने लिए भी बचाव की मांग रखा.

सभी पक्षी सम्मेलन के अंत में एक स्वर से यह प्रस्ताव पास किया गया कि हम पक्षियों को मार कर खाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए. और हमारे रहने के लिए बाग बगिचों जंगल को काटने पर प्रतिबंध लगाया जाए तभी हम पक्षियों का अस्तित्व बच पाएगा वर्ना एक दिन हम सारे पक्षी बिलुप्त हो जाएंगे

इस प्रस्ताव को सारे पक्षी मिल कर ताली बजा कर भरपूर समर्थन किया.

अन्त में रानी गौरैया ने सभी पक्षियों को जलपान करा कर सम्मेल की समाप्ती की घोषणा की. सभी पक्षी सम्मेलन से निकल कर अपने अपने ठीकाने की ओर जाने लगे.

*****

जादुई पिटारा

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

भारतीय बौद्धिक क्षमता का लोहा दुनिया मानती आई है, जिसे समय-समय पर सरकारें राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से आकार देती आई हैं परंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी2020) में जिस तरह की दूरगामी नीतियों को सम्मिलित किया गया है,उसके सकारात्मक परिणाम हमें कुछ वर्षों बाद दिखना शुरू हो जाएँगे. इस एनसीपी को वर्तमान और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों की परिकल्पना करके बनाया गया है, जो कि हमारे विज़न 2047 के मज़बूत आधारों में से एक साबित हो सकती है.

एनईपी-2020 के बाद आगामी वर्षों में कौशल विकास में हमारे नागरिक निपुण हो जाएँगे और वह नौकरी ढूँढ़ने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बन जाएँगे.

आज की स्थिति में बेरोजगारी की भयंकरता का अंदाज इससे लगाया जा सकता है कि एक राज्य में 15 मार्च 2023 को होने वाली परीक्षा में पटवारी सहित अन्य पदों के लिए राज्य में कर्मचारी चयन मंडल द्वारा कुल 9073 पदों को भरा जाना है, जिसमें 6755 पद पटवारी के हैं, जिसके लिए एक टीवी चैनल पर बताया गया कि करीब 12 लाख़ आवेदन प्राप्त हुए. एक मीडिया ग्रुप की 13 फरवरी की रिपोर्ट में सभी पदों के लिए 22 लाख़ आवेदनों की बात कही गई है. जिसमें पटवारी के लिए आवेदन करने वाले पीएचडी एमबीए बैचलर इन टेक्नोलॉजी जैसे शिक्षित छात्रों की संख्या लाखों में है.

इस स्थिति में सुधार के लिए एनईपी 2020 के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों के लिए सटीक योजनाएँ बनाई गई हैं, जिसके परिणाम हमें आगामी वर्षों में देखने को मिल सकते हैं.

इसकी नींव 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए तैयार की गई खेल आधारित शिक्षा अध्ययन सामग्री है, जिसका शुभारंभ माननीय केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने 20 फ़रवरी 2023 को किया है.

हम जादुई पिटारा, शिक्षा अध्ययन सामग्री को देखें तो इसकी मुख्य बातें निम्नलिखित है एनसीएफ-एफएस का प्रमुख परिवर्तनकारी पहलू, खेलते हुए सीखें'.बुनियादी चरण-उम्र 3-8 साल,खेलते हुए सर्वोत्तम और प्रभावकारी ढंग से सीखें न्यूरोसाइंस से लेकर शिक्षा तक विविध क्षेत्रों में अनुसंधान, कक्षा 1 और 2 पर भी लागू (उम्र 6-8 साल) - बड़ा बदलाव- बच्चे खेलते, मजे करते हुए सीखेंगे, और एफएलएन संभव हो पाएगा.

5 क्षेत्रों में सीखना और विकास, शारीरिक विकास, सामाजिक भावनात्मक व नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा एवं साक्षरता विकास, सुरुचिपूर्ण एवं सांस्कृतिक विकास, सीखने की सकारात्मक आदतों को इस चरण में विकास के एक अन्य क्षेत्र के रूप में शामिल किया गया है. खेलना सुनिश्चित करने के लिए,केवल किताबें ही नहीं,बल्कि सीखने और सिखाने के लिए अतिरिक्त संसाधनों का उपयोग किया जाना है. खिलौने, पहेलियाँ कठपुतलियाँ, पोस्टर, फ्लैश कार्ड, वर्कशीट्स और आकर्षक किताबें, स्थानीय परिवेश, संदर्भ और समुदाय.आम जीवन, स्थानीय संदर्भ और भी बहुत कुछ जादुई पिटारा में समाहित हैं.

विभिन्न संसाधन, विविधता और स्थानीय संसाधनों को समायोजित करने का लचीलापन आमोद-प्रमोद इत्यादि.

शिक्षा मंत्री के संबोधन में उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि प्लेबुक, खिलौने, पहेलियाँ, पोस्टर, फ्लैश कार्ड, कहानी की किताबें,वर्कशीट के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति, सामाजिक संदर्भ और भाषाओं को मिलाकर बना 'जादुई पिटारा जिज्ञासा को बढ़ाने और लोगों की विविध आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. उन्होंने यह भी बताया कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के तहत विकसित जादुई पिटारा 13 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है. यह सीखने-सिखाने के माहौल को समृद्ध करने और अमृत पीढ़ी के लिए इसे और अधिक बालकेंद्रित, जीवंत और आनंदमय बनाने की दिशा में एक बड़ी छलाँग है जैसा कि एनईपी 2020 में परिकल्पना की गई है. पीएम के विज़न के अनुरूप 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षण-अध्यापन सामग्री जादुई पिटारा लॉन्च की गई है. एनईपी - 2020 में 5+3+3+4 पाठ्यक्रम शैक्षणिक संरचना की परिकल्पना की गई है. शिक्षा मंत्रालय के तहत स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने प्रत्येक चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित करने के लिए प्रो. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय संचालन समिति का गठन किया है. शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुनियादी चरण (एफएस) के लिए 20 अक्टूबर, 2022 को एनसीएफ की शुरुआत की गई थी और पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार, एनसीईआरटी ने अध्ययन शिक्षण सामग्री (एसटीएम) विकसित और एकत्र की है. तदनुसार, बुनियादी चरण के लिए अध्ययन-शिक्षण सामग्री की जादुई पिटारा की अवधारणा का उपयोग करते हुए आज शुभारंभ किया

गया. शिक्षकों व छात्रों के एनईपी और एनसीएफ -एफएस को व्यवहार में लाने की उम्मीद है. उन्होंने एक राष्ट्रीय विचार मंच (थिंक-टैंक) के रूप में एनसीईआरटी से आग्रह किया कि सभी भारतीय भाषाओं में 'जादुई पिटारा' में सम्मिलित सामग्री का अनुवाद करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना चाहिए और इसकी पहुँच का विस्तार करने के साथ-साथ इसे सभी एससीईआरटी को बचपन में देखभाल और हमारे देश के शिक्षा परिदृश्य में बदलाव के लिए उपलब्ध कराना चाहिए. इन संसाधनों को डिजिटल रूप से दीक्षा प्लेटफॉर्म-पोर्टल और मोबाइल ऐप पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि सभी बुनियादी शिक्षण सामग्री मातृभाषा में होनी चाहिए.एनसीईआरटी ने प्रशिक्षकों की हैंडबुक मैपिंग से लेकर फाउंडेशनल स्टेज पर शिक्षकों के भविष्य के प्रशिक्षण के लिए एनसीएफ-एफएस के लक्ष्यों के लिए पंच कोषीय विकास और पाठ्यक्रम विकसित किया है.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि जादुई पिटारा,अमृत पीढ़ी के लिए सीखने सिखाने के माहौल को समृद्ध और बाल केंद्रित बनाने एक नई छलाँग है. स्थानीय संस्कृति, सामाजिक संदर्भ, रेगुलर शिक्षा से 13 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध जादुई पिटारा मील का पत्थर साबित होगा.

*****

करो पढ़ाई मन लगाकर

रचनाकार- अशोक 'आनन'

ख़ूब मनाई छुट्टी भइया!
खेले तुमने खखेल.
करो पढ़ाई मन लगाकर
वरना हो जाओगे फेल.

सोचो मन में , श्रेणी पहली
लाकर, होना पास.
वक़्त गया जो , उसे भुलाओ
यही समय है ख़ास.

वक़्त ज़रा भी व्यर्थ न जाए
करना है अब तुम्हें पढ़ाई.
गया वक़्त न होगा वापस
इसे कभी न खोना भाई.

जीवन में कुछ बनना हो तो -
समय व्यर्थ न टालो.
गौतम , गांधी , नेहरू- सा तुम
जीवन अपना ढालो.

*****

कोयल

रचनाकार- अशोक 'आनन'

मधुमास में आती कोयल.
पाती उसकी लाती कोयल.

डाली पर वह बैठ मजे से
आम कुतरकर खाती कोयल.

काली है पर , फिर भी देखो
सबके मन को भाती कोयल.

मीठी मिश्री जैसी लगती
बोली जब सुनाती कोयल.

बोलें मीठा बोल सभी से
हमको यही सिखाती कोयल.

*****

कुल्फ़ी

रचनाकार- अशोक 'आनन'

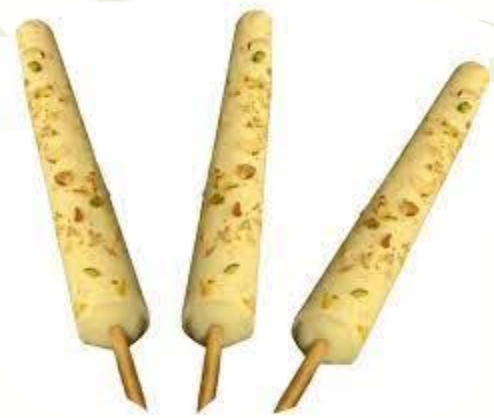

कुल्फ़ीवाला भैया आया.
ठंडी - मीठी कुल्फ़ी लाया.

टन - टन - टन - टन घंटी सुनकर
झटपट पहुंचे पैसे लेकर.

धक्कम - धक्का , भीड़म - भाड़
खाकर ठंडी हो गई दाढ़.

रानी कुल्फ़ी , राजा आम.
खाते सुबह , दुपहर , शाम.

*****

सर्वोत्तम दवा: ख़ुशी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

विश्व में ऐसा कोई मानव नहीं होगा जो ख़ुश रहना न चाहता हो, आज के युग में खुशियाँ पाने की होड़ सी लगी हुई है. आजकल ख़ुशी के लिए मानव हद से बाहर जाकर कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहता है, इसके लिए चाहे अनेक अन्य मानवों को दुखी भी क्यों न करना पड़े. सुख और खुशी जो कई बार हमारी प्रतिष्ठा, रुतबा, नाम के आधार पर भी होती है. ये सब हमारे पक्ष में होने पर ही हमें ख़ुशी मिलती है.

इस प्रकार की खुशी को अगर हम वर्तमान में दो देशों की एक वर्ष से चल रही लड़ाई के नजरिए से देखें तो ऐसा महसूस होता है कि दोनों की खुशी, जीतने में ही है अभी एक दिन पहले ही दुनिया के शक्तिशाली देश के राष्ट्रपति नें उस देश में प्रवेश करने और अन्य शक्तिशाली देश ने वैश्विक परमाणु विध्वंसक गतिविधियाँ देखने की संधि को तोड़कर उसका जवाब दिया. जिससे दोनों देशों की नाक की लड़ाई दुनिया को खाक कर खुशी प्राप्त करने की ओर चल पड़ी है. खुशी पैसों, लड़ाई में वर्चस्व और रुतबे से नहीं बल्कि परिस्थितियों और संपूर्ण सृष्टि के हित पर निर्भर करती है. कोई अगर अपने नसीब से शक्तिशाली है तो खुशनसीब नहीं हुआ बल्कि जो अपने नसीब से खुश है वह खुशनसीब है, क्योंकि दुनिया की सर्वोत्तम शक्तिशाली दवा ख़ुशी है, इसलिए खुश रहो, मस्त रहो, मुस्कुराते रहो.

अगर हमारी परिस्थितियाँ अच्छी नहीं हैं तो पैसा भी हमें खुश नहीं कर सकता. जैसे अगर हमारे घर में कोई बीमार है, हमारे घर में सब कुछ ठीक नहीं है, झगड़े होते हैं तो पैसा उन परिस्थितियों को ठीक नहीं कर सकता. ऐसी जगह पर पैसा काम नहीं आता है तो यह कहना मुश्किल है कि पैसों पर खुशियाँ निर्भर करती है. पैसों से घर खरीद सकते हैं, पर उसमें रहने वाला परिवार खरीदा नही जा सकता. परिवार के प्यार की सच्चाई तथा गहराई को खरीद पाना नामुमकिन है. रिश्ते पैसों के दम पर बनाये जा सकते हैं. पर मोल देकर बनाये रिश्तों को बचाए रखना मुश्किल है. धन आराम की व्यवस्था कर सकता है, मन

के चैन की नही.जीवन को सुविधाजनक बनाने की हर वस्तु खरीदी जा सकती है, परंतु उससे मिलने वाली खुशी व्यक्ति के वश में नहीं होती. खुशी व्यक्ति के अंदर होती है. उसे खरीदा नहीं जा सकता.

ख़ुशी का मतलब, हम जो भी हैं, जैसे भी हैं, हर हाल में अपनी स्थिति से संतुष्ट रहना ही ख़ुशी है. हम किसी को प्यार करें, कोई हमसे प्यार करे, यह ख़ुशी के लिए आवश्यक है. जो लोग विभिन्न कारणों से ख़ुश नहीं रहते, उन्हें छोटे बच्चों तथा पशु पक्षियों से प्रेरणा लेकर सदैव ख़ुश रहने का प्रयास करना चाहिए. वर्तमान समय में हम संचार के साधनों जैसे, मोबाइल तथा दूसरी सुख सुविधाओं के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि, उनके न रहने पर हमें दुख का अनुभव होता है. मोबाइल के बिना तो ऐसा लगता है जैसे जिंदगी ठहर गई हो. इसलिए आज के समय में अपनों तथा अजनबियों के प्यार भरे साथ के अलावा जीवन में सुख सुविधाओं का होना भी ख़ुशी के लिए कुछ हद तक अनिवार्य हो सकता है. हमारे लिए इंसान तथा पशु पक्षियों का सच्चा प्यार ही ख़ुशी है. हम सभी ने कभी न कभी किसी ग़रीब आदमी को भी अपने परिवार या मित्रों के साथ ख़ुशी से हँसते मुस्कुराते अवश्य देखा होगा.यह सोचना कि ये हो जाएगा या वो मिल जाएगा तब मैं ख़ुश हो जाऊँगा, सिर्फ़ एक छलावा है, क्योंकि इच्छाएँ अनन्त हैं. केवल इनकी पूर्ति से स्थाई ख़ुशी नहीं मिल सकती. ख़ुश रहने की पहली शर्त है, अपने सीमित साधनों में संतुष्ट रहना.

हम मनुष्य हैं इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है? परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति हैं! इससे बड़ी और कौन सी ख़ुशी चाहिए. इस पृथ्वी पर केवल मनुष्य ही खुशी का राज जानना चाह रहा है आखिर क्यों? क्योंकि केवल मनुष्य ने ही सारे तंत्रों को बिगाड़ कर रखा है ! इस दुनिया में अगर मनुष्य न होता तो शायद सब जीव खुश रहते.पेड़-पौधे,पक्षी, सारे प्राकृतिक जीव हम मनुष्यों की वजह से ही तो दुखी हैं.

क्या कभी किसी पेड़ को खुशी का राज पूछते हुए देखा है? कोई जीव जंतु, कोई चिड़िया, कोई नदी, सूरज, चाँद-तारे कभी किसी से पूछते हैं कि खुशी का राज क्या है? मनुष्य के अतिरिक्त यह प्रश्न कोई नहीं पूछता. असल में खुशी का कोई राज है ही नहीं. हमारी प्रकृति है खुशी! बस अपनी प्राकृतिक स्थिति में रहें, हम खुश रहेंगे. कोई भी खुश रहेगा अगर वह अपनी प्राकृतिक अवस्था में रहता है तो खुशी प्रेम दया, करुणा, प्रार्थना यह सभी मानवीय अनुभूतियाँ स्वतंत्रता की ही तरह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है,जो प्रकृति हमें देती है.

*****

सुधरेंगे हालात

रचनाकार- डॉo सत्यवान सौरभ, हरियाणा

तू भी पायेगा कभी, फूलों की सौगात.
धुन अपनी मत छोड़ना, सुधरेंगे हालात.

सफलता का विचार अक्सर कोई उद्देश्य प्राप्त करने और अपनी महत्वाकांक्षा को साकार करने से जुड़ा होता है. बहुत से लोग सफलता की आकांक्षा रखते हैं क्योंकि इसे जीवन की उपलब्धि के मापक के रूप में देखा जाता है. हालाँकि, सफलता हमेशा तत्काल नहीं होती और इसके आने में समय लगता है. जब लोगों को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपेक्षा से अधिक समय तक इंतजार करना पड़ता है, तो ऐसा कहा जाता है कि उन्हें देर से सफलता मिली है. आखिर विलंबित सफलता अनिश्चित काल तक क्यों बनी रहती है?

इसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश लोगों के मन में अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए एक समय सारणी होती है. वे आशा करते हैं कि वे बहुत अधिक प्रयास करेंगे और कम समय में सफल होंगे. सफलता में देर झुँझलाहट और निराशा का कारण बन सकती है. लोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता पर संदेह करना शुरू कर सकते हैं और आशा खो सकते हैं. परिणामस्वरूप वे अंततः प्रेरणा खो सकते हैं, और अपने सपनों को छोड़ सकते हैं.

विलंबित सफलता का एक अन्य कारक हमेशा के लिए छूटे हुए अवसरों की संभावना है. लोगों के पास आमतौर पर अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए एक रणनीति होती है. यह रणनीति अक्सर एक विशेष क्रम में कई क्रियाओं को पूरा करने के लिए कहती है. यदि बाद में सफलता मिलती है तो यह रणनीति गड़बड़ा सकती है, और लोग उन अवसरों से चूक सकते हैं जिनकी उन्होंने आशा की थी. उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यवसाय शुरू करना चाहता है, तो हो सकता है कि उसने इसे करने के लिए एक निर्दिष्ट अवधि निर्धारित की हो. यदि सफलता अपेक्षा से अधिक समय लेती है, तो वे अपनी कंपनी को लॉन्च करने का मौका खो सकते हैं जो उनका मूल उद्देश्य था.

छूटे हुए अवसर कभी-कभी विलंबित सफलता का दुष्प्रभाव हो सकते हैं. लोग अक्सर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के बाद अपने जीवन को तब देखते हैं जब वे उन्हें निर्धारित करते हैं. वे खुद को एक विशिष्ट करियर बनाने, कहीं नई जगह स्थानांतरित होने, या जीवन के एक विशिष्ट तरीके का नेतृत्व करने की कल्पना कर सकते हैं. लेकिन यदि सफलता अपेक्षा से अधिक समय लेती है, तो वे इन अवसरों से चूक सकते हैं. हो सकता है कि वे उस जीवन शैली को जीने में सक्षम न हों जिसकी उन्होंने योजना बनाई थी, जिस करियर की उन्होंने आशा की थी, उसे प्राप्त न कर सकें, या उस स्थान पर न रह सकें जिसकी उन्होंने कल्पना की थी.

सफलता में देर के परिणामस्वरूप आत्मविश्वास की हानि हो सकती है. जब लोग अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तब उन्हें पूरा करने की अपनी क्षमताओं पर बहुत भरोसा होता है. यदि सफलता अपेक्षा से अधिक समय लेती है तो इस दृढ़ विश्वास को चुनौती दी जा सकती है. लोग उनके कौशल और क्षमताओं पर संदेह करना शुरू कर सकते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास कम हो सकता है.

विलंबित सफलता के परिणामस्वरूप गति में कमी आ सकती है. यदि जीत में देर हो रही है, तो रणनीति गड़बड़ा सकती है और गति खो सकती है. यदि वे प्रेरणा खो देते हैं और अपने उद्देश्यों की दिशा में काम करते रहने के लिए प्रेरित नहीं होते हैं तो उनका भविष्य का प्रदर्शन महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित हो सकता है.

जाने अपनी प्रेरणा को बनाए रखना और अपने उद्देश्यों पर अपना ध्यान केंद्रित रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि सफलता हमेशा जल्दी नहीं मिलती है. यहाँ तक कि अगर इसमें थोड़ा समय लगता है, तो लगातार प्रयास करने से हमें अंततः सफलता मिल सकती है. इसलिए हमेशा याद रखिये और चलते रहिये जब तक जीवन है-

तू भी पायेगा कभी, फूलों की सौगात.
धुन अपनी मत छोड़ना, सुधरेंगे हालात..

*****

हमारी किस्मत खुली

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं हमारी किस्मत खुली
अहिंसात्मक सोच सच्चे उपयोग की युक्ति मिली
आध्यात्मिकता से आत्मशुद्धि की ताकत मिली
लोकतंत्र न्याय बंधुत्व की सामूहिक विरासत मिली

भारत में धर्मनिरपेक्षता की सौगात मिली
अधिकारों की रक्षा कर्तव्यों के पालन के लिए
संविधान जैसी अनमोल ताकत मिली
नए भारत का निर्माण की शक्ति मिली

हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं हमें मां भारती मिली
भारतीय सभ्यता संस्कृति हमें मिली
हमारी पीढ़ियों की किस्मत खुली
भारतीय हवा में सांस लेने की चाहत मिली

*****

तिरंगा

रचनाकार- शालिनी यादव, कक्षा -चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग

भारत की है जान तिरंगा,
भारत का है सम्मान तिरंगा.
तीन रंगों का प्यारा तिरंगा,
पूरे जहां में लहराए तिरंगा.
शहीदों का कफन है तिरंगा,
सबके मन में लहराए तिरंगा.
हर भारतीय की है जान तिरंगा,
पूरे भारत में लहराए तिरंगा.

*****

चालाक लोमड़ी

रचनाकार- खुशबू साहू, कक्षा -चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग

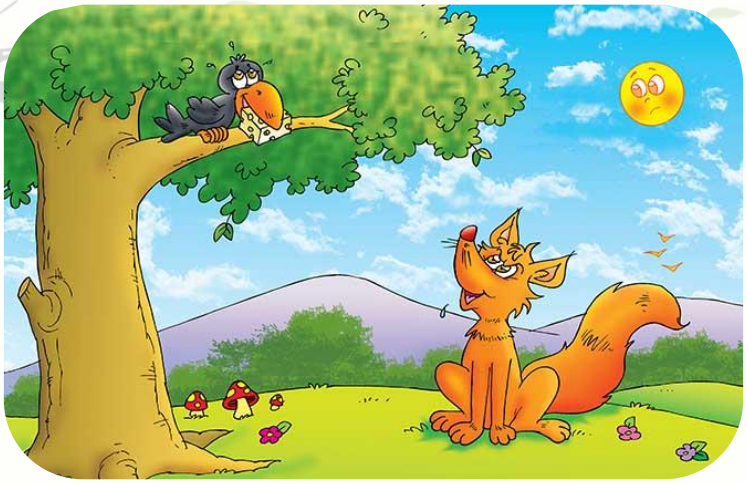

एक कौआ पेड़ की डाली पर बैठा था. वह अपनी चोंच में एक रोटी लिए हुए था. एक बड़ी सयानी लोमड़ी उधर से निकली.कौए की चोंच में रोटी का टुकड़ा देख कर उसके मुंह में पानी आ गया. उसने सोचा काश! यह रोटी मुझे मिल जाए. फिर उसे पाने के लिए लोमड़ी को एक उपाय सूझा. वह कौए से बोली भैया आपकी आवाज बहुत मधुर है एक गीत तो सुनाओ.

प्रशंसा सुनकर कौआ कांव-कांव करने लगा और रोटी नीचे गिर गई. लोमड़ी रोटी उठाकर जंगल की ओर चले गई.

*****

बंदर मामा

रचनाकार- खुशबू साहू, कक्षा -चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग

बंदर मामा चले स्कूल,
पहन के रंग-बिरंगा सूट.
अकड़-अकड़ कर चलते हैं,
हेलो-हाय सबसे करते हैं.

*****

इंद्रधनुष

रचनाकार- खुशबू साहू, कक्षा -चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला कोलिहापुरी, दुर्ग

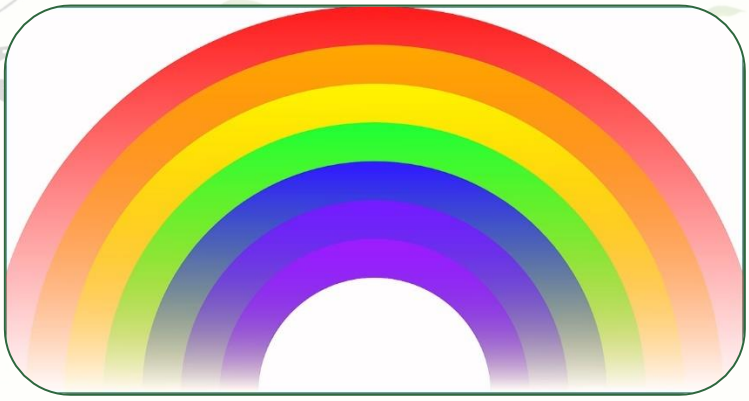

सात रंगों का है यह संगम,
इंद्रधनुष की नौका सुंदर.
आसमान की बढ़ती रौनक,
इस कोने से उस कोने तक.

*****

मानव संग्रहालय

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

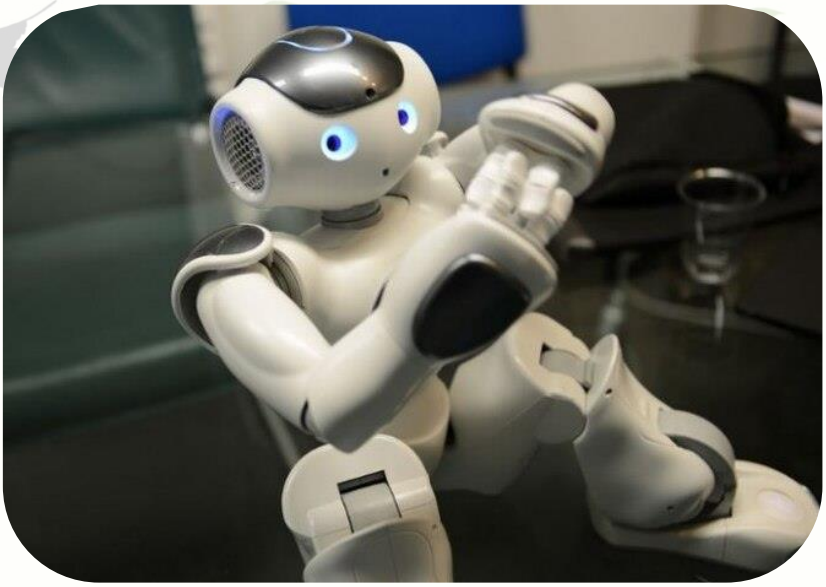

साल 3050, फ्लाइंग कार पार्किंग में लैंड कर, रोबो परिवार के बाल रोबोट खिड़की की ओर दौड़े. वहाँ सामने बोर्ड लगा था - 'ह्युमन जू' और टैगलाइन थी 'जाति भूल चुकी मानव-जाति. अंदर प्रवेश करते ही था दंभी लोगों का पिंजरा. इस पिंजरे में रहने वाले भौंहें चढ़ाए आने-जाने वालों को घूर रहे थे. पिंजरे के बोर्ड पर लिखा था कि मनुष्यों में यह जाति सब से अधिक देखने को मिलती है और ज्यादातर यह अन्य को तुच्छ मानती है. इसकी मुख्य खुराक है अपना बखान.

एक जैसे लग रहे दंभी मनुष्यों को देखना छोड़ रोबोट परिवार दूसरे पिंजरे की ओर पहुँचा, जो था लालची लोगों का पिंजरा. पिंजरे के बाहर से जू देखने आए रोबोट जैसे ही पैसा दिखाते, अंदर रहने वाले मनुष्य खुश हो जाते और रोबोट जो कहते, वह करने को तैयार हो जाते. एक सामान्य कागज के टुकड़े के लिए इस तरह पागल होते मनुष्यों को देख कर रोबोट परिवार को बहुत मजा आया. बाल रोबोट को वहाँ समय बिताना अच्छा लग रहा था, पर अभी उन्हें अन्य जाति के मनुष्यों को भी देखने जाना था.

खूंखार मनुष्यों के पिंजरे के सामने भीड़ अधिक थी. इसमें सब से खूंखार मनुष्य का पिंजरा अलग था. यह विश्वासघाती मनुष्यों की जाति थी. एक डिजिटल गाइड बता रहा था कि इस जाति से खूब सँभल कर रहना. यह आप के साथ होगी, आप को लगेगा भी कि यह आप के साथ है, पर यह पीठ पीछे कब वार कर दे, आप को पता नहीं चलेगा. इनकी मुख्य खुराक अपने ही लोगों के साथ विश्वासघात करना है.

बीच में एक छोटा पिंजरा था, जिसमें सरिया की जगह काँच लगा हुआ था. ये ऐसे लोग थे, जिनमें आत्मविश्वास की कमी थी. ये लोगों के सामने आने से कतराते थे. ध्यान से देखने पर ही दिखाई देते थे. इसके पीछे उन लोगों का पिंजरा था, जो तंत्र-मंत्र और कुछ विचित्र विधियाँ करते थे. हर किसी की अँगुलियों में तरह-तरह की अंगूठियाँ और गले तथा कलाई में रंग-बिरंगे धागे बँधे थे. पिंजरे पर लगे बोर्ड पर लिखा था- मनुष्य की इस जाति को बहुत आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है.

इसके अलावा बिना वजह गाली देने वाले, लेडी रोबोट पर बुरी नजर डालने वाले, बात-बात में झगड़ने वाले तथा हर बात में झूठ बोलने वालों के पिंजरे थे.

रोबोट परिवार बाहर निकल रहा था, तभी रोबो गवर्नमेंट की ओर से घोषणा फ्लैश हुई.

हमें बनाने वाले मानवों से अच्छे गुणों को ले कर मानवता नाम की चिप बनाई गई है. हर रोबोट से निवेदन है कि अगर इस चिप को खरीद कर वह खुद में लगवाता है तो उसकी बैटरी लाइफ कमाल की हो जाएगी. रोबो परिवार खुशी से चिप खरीदने के लिए आगे बढ़ा. तभी लालची मनुष्यों के पिंचरे से कोई चिल्लाया, "चार चिप साथ खरीदना तो एक फ्री मांगना."

*****

सबसे छोटा होना

रचनाकार- प्रभुदयाल श्रीवास्तव, मध्य प्रदेश

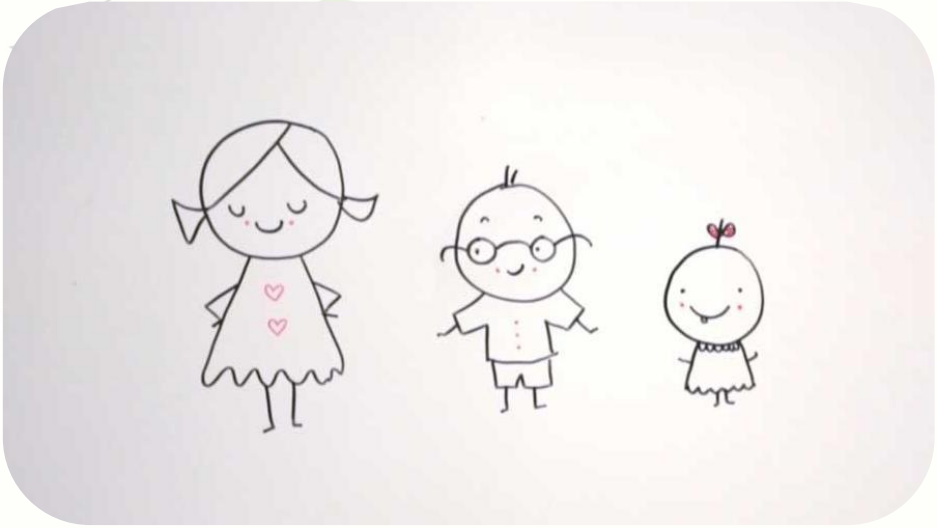

सभी समझते मुझको भोंदू,
कहते नन्हा छौना.
पता नहीं क्यों लोग मानते,
मुझको महज़ खिलौना.

कभी हुआ सोफा गीला तो,
डाँट मुझे ही पड़ती है.
बिना किसी पूछताछ माँ,
मुझ पर ही शक करती है.
मैं ही क्यों रहता घेरे में,
गीला अगर बिछौना.

चाय गिरे या ढुलके पानी,
मैं घोषित अपराधी.
फिर तो मेरी डर के मारे,
जान सूखती आधी.

पापा का सारा गुस्सा,
मुझको पड़ता ढोना.

दिन भर पंखे चलते रहते,
बिजली रहती चालू.
दोष मुझे देकर सब कहते,
यह सब करता लालू.
बहुत कठिन है भगवन घर में,
सबसे छोटा होना.

*****

बसंती रंग

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

लगे हे मौर आमा मा, बसंती रंग निक भाथे.
सुनाथे कोयली कुहकी, धरा मधुमास हा आथे.
बइठ के डार मा भौंरा, करे रसपान फुलवा के.
मगन हो नाचथे तितली, अगासा रंग बगराथे.

पपीहा तान जब छेड़ै, मिलन बर नैन हर तरसै.
पिया आही इहाँ जोही, अहा! बड़ मोर मन हरसै.
दिखाये रात दिन सपना, घुमाहूँ संग मा तोला.
नहीं संदेश कोनो आए, विरह के नीर हा बरसै.

गहूँ हर झूमथे सुग्घर, दिखे जस सोन के बाली.
हँसे ये मेड़ के परसा, फूल धरे रंग लाली.
मटर अरसी चना सरसों, धरा के शोभा बढ़ाथे.
गिरे ये फूल परसा के, सजाथे फाग के थाली.

*****

पिज्जा

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

हाईवे पर बने विशाल फूड जोन में केवला को नौकरी मिल गई थी. बस, कोने में खड़े रहना था और टेबल खाली होते ही उस पर पड़ी डिसें और नैपकिन सहित सारे कचरे को उठाकर डस्टबीन में डाल कर टेबल साफ करना था. पहले ही दिन महंगी गाड़ियों से आने वाले सुसंस्कृत लोगों को खाना खराब करते देख केवला को बहुत गुस्सा आया था, पर वहां वह कुछ कह नहीं सकता था.

घर में मर गए बेटे के नन्हे से बच्चे को सूखी रोटी और लहसुन की चटनी खिलाते समय वह यही सिखाता था कि भोजन भगवान है, इसलिए इसे चूर भर भी थाली में नहीं छोड़ना चाहिए. पर उस हिसाब से देखा जाए तो यहां तो सभी थोड़ा-थोड़ा भगवान को छोड़कर चले जाते हैं. टेबल साफ करते समय केवला माफी मांगते हुए कहता कि भगवान इन्हें माफ करना.

वहां खाने की चीजों के भाव अंग्रेजी में लिखे थे, इसलिए उसे पता नहीं चला कि कौन चीज कितने की है. पर जिस दिन उसे पता चला कि एक छोटी सी रोटी, जिस पर कुछ लगा होता है, लोग उसे पिज्जा कहते हैं, उसका भाव उसके एक सप्ताह के वेतन के बराबर है, उस दिन उसे सारी रात नींद नहीं आई थी.

रोज-रोज आने वालों तमाम लोग उस पिज्जा को खाते थे. खास कर छोटे बच्चे तो जिद कर के उसे मंगाते. जब भी केवला छोटे बच्चों को पिज्जा खाते देखता, उसे अपने पौत्र दीनू की याद आ जाती. बूढ़े केवला के दिल में एक युवा इच्छा जाग उठी कि एक दिन वह अपने दीनू को पिज्जा जरूर खिलाएगा.

साढ़े सात सौ में कितने दिन का राशन आ जाएग, यह सोच कर केवला पीछे हट जाता. पर एक दिन उसे लगा कि यहां रोजाना बच्चे खुशी खुशी पिज्जा खाते हैं तो उसके दीनू ने कौन सा गुनाह किया है?

केवला खुद्दार था, इसलिए वह पिज्जा मांग नहीं सकता था. आखिर उसने पूरे एक महीने दो घंटे अधिक काम कर के पिज्जा खरीद ही लिया. शाम को छुट्टी होने पर वह पिज्जा ले कर घर पहुंचा. डिब्बे में देना अच्छा नहीं लगा, इसलिए उसने टूटी-फूटी थाली में निकाल कर दीनू के आगे पिज्जा रख दिया. दीनू उसे प्यार से देखने लगा. केवला को लग रहा था कि पिज्जा मुंह में रखते ही दीनू उछल पड़ेगा. दीनू ने ऐसी रोटी पहली बार देखी थी. एक टुकड़ा तोड़कर मुंह में रख कर जोर से बोला, "दादा यह तो एकदम फीका है, थोड़ी लहसुन की चटनी दो न."

*****

भारतीय संविधान

रचनाकार- सलिल सरोज, नयी दिल्ली

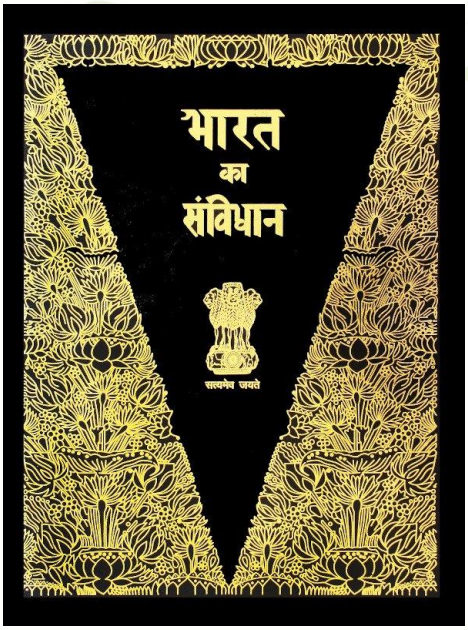

स्वतंत्रता मिलने के बाद, संविधान निर्माताओं का सपना शासन के ऐसे व्यवहार्य मॉडल को विकसित करने का था जो लोगों की प्रधानता को केंद्र में रखते हुए राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा करे. संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता ने देश को एक उत्कृष्ट संविधान प्रदान किया है जिसने पिछले सात दशकों में राष्ट्र के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में काम किया है. देश लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता के लिए भारत के संविधान द्वारा निर्धारित मजबूत इमारत और संस्थागत ढाँचे के लिए ऋणी है. हमारा संविधान भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प है. वास्तव में, यह लोगों को सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता हासिल करने का वादा है; विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था और पूजा की स्वतंत्रता; स्थिति और अवसर की समानता; और सभी के बीच - भाईचारे को बढ़ावा देना, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता को सुनिश्चित करना. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने बहुत स्पष्ट रूप से विभिन्न प्रतिबद्धताओं को स्पष्ट करते हुए मुख्य अपेक्षाओं को रेखांकित किया. उन्होंने कहा: "संविधान तैयार करने में हमारा उद्देश्य दो गुना है: राजनीतिक लोकतंत्र के रूप को निर्धारित करना, और यह निर्धारित करना कि हमारा आदर्श आर्थिक लोकतंत्र है और यह भी निर्धारित करना है कि प्रत्येक सरकार, जो भी सत्ता में है, प्रयास करेगी आर्थिक लोकतंत्र लाने की…"

भारत का संविधान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र के लिए एक संरचना प्रदान करता है. यह शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीकों से विभिन्न राष्ट्रीय लक्ष्यों पर जोर देने, सुनिश्चित करने और प्राप्त करने के लिए भारत के लोगों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है. यह केवल कानूनी पांडुलिपि

नहीं है; बल्कि, यह एक ऐसा वाहन है जो समय की बदलती जरूरतों और वास्तविकताओं को समायोजित और अनुकूलित करके लोगों के सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने के लिए देश को आगे बढ़ाता है. भारत को राज्यों के संघ के रूप में बनाना, कानून के समक्ष समानता और कानूनों की समान सुरक्षा संविधान का सार है. साथ ही, संविधान समाज के वंचित और वंचित वर्गों की जरूरतों और चिंताओं के प्रति भी संवेदनशील है.

29 अगस्त 1947 को, संविधान के मसौदे की तैयारी के लिए डॉ बी आर अम्बेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा द्वारा मसौदा समिति का चुनाव किया गया था. संविधान सभा स्वतंत्र भारत के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार करने के कार्य को सटीक रूप से तीन साल से भी कम समय में पूरा करने में सक्षम थी - दो साल, ग्यारह महीने और सत्रह दिन. उन्होंने 90,000 शब्दों में हाथ से लिखा हुआ एक बढ़िया दस्तावेज़ तैयार किया. 26 नवंबर 1949 को, यह भारत के लोगों की ओर से गर्व से घोषणा कर सकता है कि हम एतद् द्वारा इस संविधान को अपनाते हैं, इसे लागू करते हैं और खुद को देते हैं. कुल मिलाकर, 284 सदस्यों ने वास्तव में संविधान के पारित होने के रूप में अपने हस्ताक्षर किए. मूल संविधान में एक प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियाँ शामिल हैं. नागरिकता, चुनाव, अनंतिम संसद, अस्थायी और संक्रमणकालीन प्रावधानों से संबंधित प्रावधानों को तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया. भारत का शेष संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ. उस दिन, संविधान सभा का अस्तित्व समाप्त हो गया, 1952 में एक नई संसद के गठन तक खुद को भारत की अस्थायी संसद में बदल दिया.

भारत के संविधान की प्रस्तावना उन मूलभूत मूल्यों, दर्शन और उद्देश्यों को मूर्त रूप देती है और दर्शाती है जिन पर संविधान आधारित है. संविधान सभा के सदस्य पंडित ठाकुर दास भार्गव ने प्रस्तावना के महत्व को निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त किया: "प्रस्तावना संविधान का सबसे कीमती हिस्सा है. यह संविधान की आत्मा है. यह संविधान की कुंजी है." ... यह संविधान में स्थापित एक गहना है... यह एक उचित पैमाना है जिससे कोई भी संविधान के मूल्य को माप सकता है."

संविधान, लेखों और खंडों के संग्रह से कहीं अधिक है. यह एक प्रेरणादायक दस्तावेज है, हम जिस समाज के आदर्श हैं और यहाँ तक कि जिस बेहतर समाज के लिए हम प्रयास कर रहे हैं, उसका एक आदर्श है. भारत का संविधान अपनी तह में हमारी सभ्यतागत विरासत के आदर्शों और मूल्यों के साथ-साथ हमारे स्वतंत्रता संग्राम से उत्पन्न विश्वासों और आकांक्षाओं को भी समाहित करता है. संविधान हमारे गणतंत्र के संस्थापकों के सामूहिक ज्ञान का प्रतीक है और संक्षेप में, यह भारत के लोगों की संप्रभु इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है.

संविधान सभा के विशिष्ट सदस्यों के साथ-साथ संविधान की मसौदा समिति द्वारा किए गए अथक प्रयासों ने हमें एक ऐसा संविधान विरासत में दिया है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है. उन्होंने शानदार तरीके से शासन की एक अनूठी योजना तैयार की, जो न केवल सरकार के एक लोकतांत्रिक

स्वरूप के लिए बल्कि एक समावेशी समाज के लिए भी उपलब्ध कराती है. इस तरह के एक संपूर्ण दस्तावेज को रखने का उद्देश्य, यहां तक कि न्यूनतम विवरण भी शामिल है, सिस्टम में निश्चितता और स्थिरता को बढ़ावा देना है. संविधान द्वारा परिकल्पित मुख्य लक्ष्य जीवन रेखा के रूप में जवाबदेही के साथ गरिमापूर्ण मानव अस्तित्व और सभी की भलाई के लिए एक कल्याणकारी राज्य की शर्त है.

भारत का संविधान जो समय-समय पर चुनावों का प्रावधान करता है, प्रतिनिधियों के एक समूह से दूसरे समूह को राजनीतिक सत्ता का लोकतांत्रिक हस्तांतरण सुनिश्चित करता है. पिछले कुछ वर्षों में, निस्संदेह भारत में लोकतंत्र और गहरा हुआ है. लोक सभा के सत्रह आम चुनाव और राज्य विधानमंडलों के लिए अब तक हुए तीन सौ से अधिक चुनाव लोगों की बढ़ी हुई भागीदारी के साथ हमारे लोकतंत्र के सफल कामकाज की गवाही देते हैं. निस्संदेह, भारतीय मतदाताओं ने परिपक्वता प्रदर्शित की है जिसने इसे दुनिया भर से प्रशंसा दिलाई है.

भारत में लोकतंत्र परिपक्व हो चुका है, और सभी बाधाओं के बावजूद, हमने अपनी संसदीय प्रणाली को बनाए रखा है. राजनीतिक स्थिरता, पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय मतदाताओं और राजनीतिक व्यवस्था की परिपक्वता की साक्षी रही है. 1.2 बिलियन से अधिक लोगों के साथ दुनिया के दूसरे सबसे बड़े आबादी वाले देश के रूप में, वास्तविक चुनौती भाषा, धर्म, क्षेत्र, जाति, संस्कृति, जातीयता और अन्य कारकों के आधार पर लोगों की असंख्य पहचानों को संरक्षित और संरक्षित करना है. उदार राजनीतिक प्रणाली और उत्तरदायी लोकतांत्रिक संस्थानों ने विविधता में एकता और लोगों के बीच समावेश की भावना को सुरक्षित करने में अच्छा प्रदर्शन किया है. वास्तव में, यह हमारी बहुदलीय प्रणाली है जो लोगों की अधिक राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है और भारतीय जनता की विविधता और बहुलता को प्रतिबिंबित करती है.

राजनीतिक संस्थाएँ और ढाँचे न केवल समाज को प्रतिबिंबित करते हैं, बल्कि वे इसे प्रभावित और परिवर्तित भी करते हैं. इस संदर्भ में, भारत की संसद सामाजिक परिवर्तन लाने और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को प्रभावित करने में प्रत्यक्ष और कंडीशनिंग की भूमिका निभाती है. लोगों की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था होने के नाते, संसद सभी सरकारी गतिविधियों की जीवन रेखा है. समग्र रूप से संसदीय गतिविधि - कानून बनाना, वित्त को नियंत्रित करना और कार्यकारी शाखा की देखरेख - विकास के पूरे स्पेक्ट्रम को कवर करती है. यह सदन के पटल पर है कि कुछ प्राथमिक प्रक्रियाओं को गति दी जाती है जो सार्वजनिक जीवन में व्यवस्थित परिवर्तन और नवाचारों का रास्ता खोलने की क्षमता रखती हैं. चूँकि सरकार के संसदीय स्वरूप में कार्यपालिका विधायिका का निर्माण है और विधायिका कार्यपालिका पर नियंत्रण रखती है, कोई भी सरकार विधायिका द्वारा दिए गए निर्देशों की अनदेखी नहीं कर सकती है.

एक के बाद एक आने वाली सरकारों ने विभिन्न विधानों और नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से एक कल्याणकारी राज्य की सुविधा के लिए संविधान के निर्माताओं के सपने को साकार करने का प्रयास

किया है. परिणामस्वरूप, हमने बहुत कुछ हासिल किया है और कई क्षेत्रों में सफल हुए हैं; फिर भी, ऐसे कई अन्य क्षेत्र हैं जिन पर अभी भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है. महिलाओं के सशक्तीकरण, बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर, स्वच्छ भारत मिशन, नागरिकों को वित्तीय और अन्य सब्सिडी, लाभ और सेवाओं का सीधा हस्तांतरण, गरीबों के लिए बैंकिंग सुविधाओं में वृद्धि और जो बैंकिंग द्वारा कवर नहीं किए गए थे, जैसे नीतिगत हस्तक्षेप प्रणाली, किसानों के लाभ के लिए नीतियाँ और कार्यक्रम, वंचित लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ आदि संविधान निर्माताओं के सपने को साकार करने में काफी मददगार साबित होंगी.

महात्मा गांधी ने भारत की विशिष्ट और विशेष परिस्थितियों पर लागू सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में भारत के नए संविधान की कल्पना की थी. 1931 की शुरुआत में, गांधीजी ने लिखा था: “मैं एक ऐसे संविधान के लिए प्रयास करूँगा जो भारत को गुलामी और संरक्षण से मुक्त करेगा. मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूँगा जिसमें गरीब से गरीब यह महसूस करे कि यह उनका देश है जिसके निर्माण में उनकी एक प्रभावी आवाज है: एक ऐसा भारत जिसमें कोई उच्च वर्ग या निम्न वर्ग के लोग नहीं हैं, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदाय एक साथ रहेंगे सही सामंजस्य के साथ. ऐसे भारत में छुआछूत के अभिशाप के लिए कोई जगह नहीं हो सकती. हम शांति से रहेंगे और बाकी दुनिया न तो शोषण करेगी और न ही शोषित रहेगी… यह मेरे सपनों का भारत है जिसके लिए मैं संघर्ष करूँगा."

संविधान लोगों को उतना ही सशक्त बनाता है जितना कि लोग संविधान को सशक्त करते हैं. भारतीय संविधान के निर्माताओं ने बहुत अच्छी तरह से महसूस किया कि एक संविधान, चाहे वह कितना भी अच्छा लिखा गया हो और कितना विस्तृत हो, इसे लागू करने और इसके मूल्यों के अनुसार जीने के लिए सही लोगों के बिना बहुत कम सार्थक होगा. और इसमें उन्होंने आने वाली पीढ़ियों में अपना विश्वास दर्शाया है.

*****

तनु की सूझबूझ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

अप्रैल का महीना था. स्कूलों की वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किये जा रहे थे. इस वर्ष तनु अपने स्कूल के कक्षा पाँचवीं में प्रथम आयी थी. उसके छोटे भाई शुभम ने भी कक्षा तीसरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी. दोनों भाई-बहन स्कूल से अंकसूची लेकर आये और बैठक कमरे में टेबल पंखे को चालू करके सोफे पर बैठ गये. उनके मम्मी-पापा घर पर नहीं थे. फिर दोनों को एक-दूसरे की अंकसूची देखने की इच्छा हुई; लेकिन सबसे पहले अंकसूची दिखाने के लिए कोई तैयार नहीं थे. इस तरह दोनों में अंकसूची के लिए छीना-झपटी होने लगी.

झगड़ते-झगड़ते अचानक शुभम का हाथ पंखे से टच हो गया. चालू पंखे में करंट प्रवाहित होने के कारण उसका एक हाथ पंखे से चिपक गया. शुभम की चीख सुनकर तनु सहम गयी. फिर तुरंत उसने दीवार की खूँटी पर टंगी सायकिल की पंचर ट्यूब से शुभम को पकड़कर पंखे से अलग किया. तनु एकदम घबरा गयी. अचेत शुभम को पलंग पर लिटाकर पड़ोस की कौर अंटी को बुलाने गयी. कौर अंटी के आते ही मम्मी-पापा भी आ गये. तनु ने अपने मम्मी-पापा को घटना की पूरी जानकारी दी. पापा तुरंत डॉक्टर को बुलाने चले गये. मम्मी शुभम को गोद में लेकर पलंग पर बैठ गयी. उपचार के बाद शुभम को होश आया. डॉक्टर तनु के पापा से बोले- "चंद्राकर जी, घबराने की कोई बात नहीं. मैंने इंजेक्शन लगा दिया है. ये टेबलेट्स शाम और सुबह लगातार दो दिन तक देते रहिएगा." डॉक्टर के चले जाने के बाद एकत्रित हुए लोग तनु की सूझबूझ की चर्चा करने लगे.

"छोटी सी बच्ची ने क्या दिमाग लगाया." खान चाचा ने दाढ़ी खुजलाते हुए बोला.

"थैंक गाॅड! " जाॅन अंकल ने हामी भरी.

घटना के बारे में सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य होने लगा. मुसीबत के समय क्या दिमाग लगाया है. वाह , बहुत खूब...जैसे शब्द जनसमूह से निकल रहे थे. कौर अंटी ने तनु से पूछा- "तनु बिटिया, तुम ने शुभम भाई का हाथ पंखे से चिपकने पर उसे अलग करने के लिए साइकिल-ट्यूब का ही उपयोग क्यों किया?"

सहमी हुई तनु बताने लगी- "आंटी जी, हमारी रूबीना मैडम है न, जो हमें विज्ञान पढ़ाती है.उन्होंने बताया था कि रबड़, चमड़े, मोम, सूखे कपड़े, सूखी लकड़ी विद्धुत के कुचालक हैं. इन पर विद्युत यानी करंट का कोई प्रभाव नहीं पड़ता. इनमें करंट प्रवाहित नहीं होता.भाई का हाथ पंखे से चिपकने पर मुझे रबड़ ट्यूब का ख्याल आया और इसी से शुभम को पकड़कर पंखे से अलग किया." यह सुनकर उपस्थित सभी तनु के सूझबूझ की खुलकर तारीफ करने लगे.

तनु ने मुसीबत के समय अपने छोटे भाई शुभम की जान बचाई, जो वाकई प्रसंशनीय थी.

*****

वृक्ष

रचनाकार- नंदिनी राजपूत, कोरबा

वृक्ष हमें देते प्राणवायु, जिससे बढ़ती जीवन आयु.
पथिकों को आराम दिलाती, छाया इसकी खूब लुभाती.

शीतल हवा जब चलती, मतवाले मन में खुशी उमड़ती.
रंग-बिरंगे फूल जब खिलते, लोगों को आकर्षित करते.

रस इसका पी लेने को, मतवाला भौंरा है झूमता.
मीठे फल जब मुँह में डलते, बुद्धि बल तन को मिलते.

*****

क्षत्राणी ओ क्षत्राणी

रचनाकार- नंदिनी राजपूत, कोरबा

क्षत्राणी ओ क्षत्राणी! तू है राजपूतों की रानी.
तुझसे ही बनी है इतिहास की सारी कहानी.
जौहर कर तू ने एक दिन, अपनी लाज बचाई.
तेरे साहस से भारत में, नारी ने महिमा पाई.

तुझसे भारत की आन है, तू धरा की शान है.
तू गौरव है नारी का, देश का तू अभिमान है.
नाम है मेरा नंदिनी, देश की वीर क्षत्राणी हूँ.
मधुर राग का गीत नहीं, मैं ओज की वाणी हूँ.

*****

प्रणाम करते हैं

रचनाकार- प्रदीप कुमार शर्मा

हम आह्वान करते हैं ,हम सम्मान करते हैं.
जो बच्चों के हित में काम करें,प्रणाम करते हैं.

घर की भाषा में काम हो, सुंदर संख्या ज्ञान हो
सब बच्चें खुशी-खुशी सीखें,सुबह से ऐसा शाम हो!

प्यार हो सम्मान हो,सबका ज्यादा नाम हो.
सीखना ही सीखना हो,बस ऐसा परिणाम हो.

हम आह्वान करते हैं ,हम सम्मान करते हैं.
जो बच्चों के हित में काम करें,प्रणाम करते हैं.

तैयार करते हैं,हम सत्कार करते हैं .
जो बच्चों के हित में काम करें प्रणाम करते हैं

कविता गान करते हैं, कहानी शान करते हैं .
वस्तुओं को गिनकर पहचाने,ऐसा संख्या ज्ञान करते हैं.

हम आह्वान करते हैं ,हम सम्मान करते हैं.
जो बच्चों के हित में काम करें ,प्रणाम करते हैं.

संवाद करते हैं, खुल कर बात करते हैं .
ऐसे खुले प्रश्नों का भी डटकर, जवाब करते हैं.

वर्ण अक्षर पढ़ते हैं,शब्द पहचान करते हैं.
उन शब्दों से फिर वह तो, वाक्य निर्माण करते हैं.

हम आह्वान करते हैं ,हम सम्मान करते हैं.
जो बच्चों के हित में काम करें ,प्रणाम करते हैं.

दौड़ लगाते हैं, धूम धमाल करते हैं .
हर सपनों को सच कर दे, ऐसा काम करते हैं.

लेखन शान करते हैं,रंग में जान भरते हैं.
अपनी अभिव्यक्ति से ऐसा चमकान करते हैं.

हम आह्वान करते हैं हम सम्मान करते हैं
जो बच्चों के हित में काम करें प्रणाम करते हैं.

*****

तीन दोस्त

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

यीशु ओम और रुद्राक्ष तीनों एक दूसरे के पक्के दोस्त थे. तीनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे. तीनों पढ़ने में बहुत तेज थे तीनों एक ही बस्ती में रहते थे जहां पर गरीब लोगों की बस्ती थी. तीनों के पापा बाजार में सब्जी का दुकान लगाते थे

वार्षिक परीक्षा में तीनों फस्ट डिवीजन से जब पास हुए तो तीनों का फोटो अखबार में प्रकाशित हुआ.

बस्ती के सभी लोगों ने तीनों को स्कूल की परीक्षा में प्रथम आने पर बहुत बधाई दी.

एक रोज यीशु अपने दोस्त ओम और रुद्राक्ष से बोला हमारी एक महीने की छुट्टी हो गई है हम चाहते हैं इस छुट्टी में कुछ काम कर के स्कूल का कापी किताब फीस और ऐडमिशन का खर्चा निकाल ले तो कैसा रहेगा? "

बहुत बढिया रहेगा. इससे हमारी छुट्टी का सदुपयोग भी हो जाएगा और स्कूल का खर्चा भी निकल आएगा. ओम और रुद्राक्ष काम करने को राजी हो गए.

तीनों दोस्तों के काम करने की बात जान कर यीशु के पापा अपने दोस्त मोनू वर्मा की चिप्स फैक्टरी में चिप्स पैक करने के काम पर लगा दिया. दिन भर तीनों दोस्त चिप्स फैक्टरी में काम करते और शाम को घर आ जाते थे.

एक महीना कैसे बीत गया कुछ पता ही नहीं चला.

एक महीना पुरा हो जाने पर फैक्टरी मालिक ने तीनों के उनके काम का पन्द्रह पन्द्रह हजार रुपया मजदूरी दे कर बोले बच्चों तुम सब को जब भी स्कूल से छुट्टी मिले हमारी फैक्टरी में काम करने आ जाना इससे तुमको अपने स्कूल का फीस वगैरह का खर्चा अपने पापा से नहीं मांगना पड़ेगा.

फैक्टरी मालिक मोनू वर्मा की बात सुनकर यीशु ओम और रुद्राक्ष बहुत खुश हुए और छुट्टी के दिन आने का वादा कर के अपने घर की ओर चल दिए.

मोनू वर्मा तीनों बच्चों को फैक्टरी के बाहर खड़ा हो कर तब तक देखते रहे जब तक तीनों आंखों से ओझल नहीं हो गए

*****

आइसक्रीम वाला

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

बाजार गली मोहल्ले में
आया आइसक्रीम वाला.
भोपू बजा कर शोर मचाया
देखो आइसक्रीम वाला.

बच्चे बड़े सब आ जाओ
जो चाहे वह खाओ.
मांग कर हमसे आइसक्रीम
अपनी प्यास बुझाओ

पांच दस बीस पचास का
मैं आइसक्रीम हूं लाया.
जो रुपया ले कर आया
वह आइसक्रीम पाया.

डंठी मीठी मलाई से भरी
टेस्टी आइसक्रीम है देखो.
जो चाहे जी मागे
ले कर हमसे खाओ.

*****

आते ही गर्मी के

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

सारे कपड़े उतर गए
आते ही गर्मी के.
जाड़े से छुट्टी मिल गई
आते ही गर्मी के.

लस्सी कुल्फी की दुकान सज गई
आते ही गर्मी के.
माजा पेप्सी डियू कोला फ्रुटी आ गया
आते ही गर्मी के.

कूलर पंखा एसी चल पड़े
आते ही गर्मी के.
सर्द हवा चली गई परदेश
आते ही गर्मी के.

तन से निकल रहा पसीना
आते ही गर्मी के.
लस्सी गन्ने का रस बिक रहा
आते ही गर्मी के.

*****

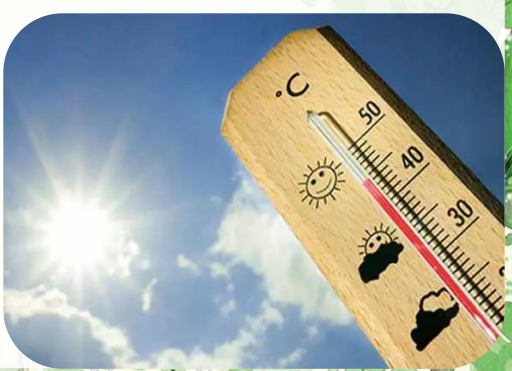

होली

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

देखो देखो रंगों का मौसम आया है
सबके मन को रंगीन बनाया है
बोले सब मीठी मीठी बोली
साथ मिलकर सब खेलें होली
सबके दिल से नफरत को मिटाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है.
हो रही रंग गुलालों की बारिश
बच्चे बूढ़े पूरी कर रहे अपनी ख्वाहिश
बिछड़े हुए सब मित्रों को मिलाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है..
सब के घर बन रही गुजिया मिठाई
चारो तरफ से महकती खुशबू आई
सबके दिल के गम को छुपाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है.

*****

मोर पाठशाला

रचनाकार- नरेन्द्र कुमार दिवाकर, कोरबा

ज्ञान ज्योति हे नाव जेखर,
डोंगरी के तिर म हवे जेहर.
एखर अंदाज हवे निराला,
मोर सुईआरा के पाठशाला.

नोनी- बाबू पढ़े आथें,
जिनगी अपन गढ़े आथें.
जईसे फूल के माला,
मोर सुईआरा के पाठशाला.

आजू-बाजू घनघोर जंगल,
जीव-जन्तु के हवे मंगल.
हाथी भालू के हे बोलबाला,
मोर सुईआरा के पाठशाला.

रुख- राई ,पहाड़- पर्वत संग सुघ्घर दिखे नदी-नाला,
साफ- सुथरा बने चुक- चुक ले मैं बताव जी काला-काला.
मोर सुईआरा के पाठशाला.
मोर सुईआरा के पाठशाला.

*****

बालवाड़ी

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

अ आ इ ई, वर्णमाला को पढ़लो जी.

उ ऊ ए ऐ, गुरुजी की बोलो जय.

ओ औ अं अः, पढ़ने लिखने में है मजा.

एक दो तीन चार, गिनती पढ़ने को हैं तैयार.

पांच छः सात आठ, मिलकर पढ़ें सबके साथ.

नौ दस ग्यारह बारह, बालवाड़ी सबसे प्यारा.

तेरह चौदह पंद्रह सोलह, ऐसे पल को कभी ना खोना.

सत्रह अठ्ठारह उन्नीस बीस, खेल खेल में गिनती सीख.

*****

गिलहरी

रचनाकार- राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव, विदिशा

छत पर धूम मचाए गिलहरी.
यहाँ-वहाँ छिप जाए गिलहरी.

सूनेपन का लाभ उठाकर
आँगन में आ जाए गिलहरी.

कभी-कभी पेड़ों पर चढ़कर
कुतर-कुतर फल खाए गिलहरी.

दौड़-भाग से फुरसत पाकर
झबरी पूँछ हिलाए गिलहरी.

कभी दूर से, कभी पास से
मेरा मन बहलाए गिलहरी.

*****

हाथी और बंदर

रचनाकार- सतीश "बब्बा"

देशाह वन में बहुत से जानवर रहते थे. उसी में एक हाथी और एक बंदर भी रहते थे. हाथी को अपने शरीर और बल का अभिमान था.

बंदर अक्सर देशाह वन के बाहर गाँव की ओर निकल जाता और खेतों से भर पेट खाकर आ जाया करता था.

हाथी ने सोचा कि, 'मैं भी आज बंदर का पीछा करता हूँ. आखिर हाथी भी खेतों में पहुँच गया.

किसानों ने हाथी को देखा तो खेत उजड़ने के डर से किसान एकत्र होकर पूरा दिन हाथी को दौड़ाते रहे, हाथी बचते - बचाते, किसी तरह से जंगल के समीप पहुँच गया.

शाम से पहले बंदर को अपने घर पहुँचना था, वह भी जंगल के प्रवेशद्वार में पहुँच गया.

वहीं पर हाथी थका - हारा विक्षिप्त अवस्था में पड़ा था. आखिर बंदर को दया आ गयी. उसने हाथी से पूछा, "क्या हुआ दादा? आपको क्या हो गया?"

हाथी ने बंदर को पूरा हाल बताया और कहा, "बंदर भैया, भूख के मारे जान जा रही है! कुछ उपाय करो न भाई. मैं तुम्हारे चक्कर में आज परेशान हो गया, मुझे तुम्हारी नकल नहीं करना चाहिए था.

"सभी जीव को किसी की नकल नहीं करनी चाहिए. और अपनी स्थित का ख्याल रखना चाहिए. मुझे अभिमान था, मैं फल पा गया, अब मदद करो नहीं भूख से मर जाऊँगा!"

बंदर ने कहा, "चिंता न करो, आओ मेरे साथ! आओ दादा धीरे - धीरे उस केले के खेत तक!"

"नहीं, मुझे किसान मार डालेंगे!" हाथी ने कहा.

बंदर ने कहा, "तुम चुपके से चलो, मैं खिलाता हूँ, तुम्हें कोई नहीं जान पाएगा!"

किसी तरह एक केले के पेड़ तक पहुंच कर हाथी धम्म से गिर पड़ा.

बंदर केले के पेड़ में चढ़कर, केले के फल गुच्छे के गुच्छे हाथी के मुँह में डालने लगा. कोई आवाज नहीं हुई और किसी को पता भी नहीं चला और हाथी की कुछ भूख मिट गई.

हाथी ने बंदर का शुक्रिया अदा किया और दोनों देशाह वन के अंदर अपने - अपने घर की ओर चल दिए.

*****

फीके पड़ते होली के रंग

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

होली ऐसा रंगबिरंगा त्योहार है, जिसे लोग पूरे उत्साह और मस्ती के साथ मनाते रहे हैं. होली के दिन सभी बैर-भाव भूलकर एक-दूसरे से परस्पर गले मिलते थे. लेकिन सामाजिक भाईचारे और आपसी प्रेम और मेलजोल का होली का यह त्यौहार भी अब बदलाव का दौर देख रहा है. फाल्गुन की मस्ती का नजारा अब गुजरे जमाने की बात हो गई है. कुछ सालों से फीके पड़ते होली के रंग अब उदास कर रहे हैं. शहर के बुजुर्गों का कहना है कि ' न हंसी- ठिठोली, न हुड़दंग, न रंग, न ढप और न भंग' ऐसा क्या फाल्गुन? न पानी से भरी 'खेळी' और न ही होली का शोर. अब कुछ नहीं, कुछ घंटों के रंग-गुलाल के बाद सब कुछ शांत. होली की मस्ती में अब वो रंग नहीं रहे. आओ राधे खेला फाग होली आई....ताँबा पीतल का मटका भरवा दो...सोना रुपाली लाओ पिचकारी...के स्वर धीमे हो गए हैं.

फाल्गुन लगते ही होली का हुड़दंग शुरू हो जाता था. मंदिरों में भी फाल्गुन आते ही 'फाग' शुरू हो जाते थे. होली के लोकगीत गूँजते थे. शाम होते ही ढप-चंग के साथ जगह-जगह फाग के गीतों पर पारंपरिक नृत्य की छटा होली के रंग बिखेरती थी. होली खेलते समय पानी की खेली में लोगों को पकडक़र डाल दिया जाता था. कोई नाराजगी नहीं, सब कुछ खुशी-खुशी होता था. वसंत पंचमी से होली की तैयारियाँ करते थे. चौराहे पर समाज के नोहरे व मंदिरों में चंग की थाप के साथ होली के गीत गूँजते थे. रात को चंग की थाप पर गैर नृत्य का आकर्षण था. बाहर से फाल्गुन के गीत व रसिया गाने वाले रात में होली की मस्ती में गैर नृत्य करते थे.

पहले की होली और आज की होली में अंतर आ गया है, कुछ साल पहले होली के पर्व को लेकर लोगों को उमंग रहती थी, आपस में प्रेम था. द्वेष भाव नहीं था. आपस में मिल कर लोग प्रेम से होली खेलते थे. मनोरंजन के अन्य साधनों के चलते लोगों की परंपरागत लोक त्योहारों के प्रति रुचि कम हुई है.

इसका कारण लोगों के पास समय कम होना है. होली आने में महज कुछ ही दिन शेष हैं, लेकिन शहर में होली के रंग कहीं नजर नहीं आ रहे हैं. एक माह तो दूर रहा अब तो होली की मस्ती एक-दो दिन भी नहीं रही. मात्र आधे दिन में यह त्योहार सिमट गया है. रंग-गुलाल लगाया और हो गई होली.

जैसे-जैसे परंपराएँ बदल रही है, रिश्तों की मिठास खत्म होती जा रही है. जहाँ तक होली का सवाल है तो अब मोबाइल और इंटरनेट पर ही 'हैप्पी होली' शुरू होती है और खत्म हो जाती है. पहले जैसा हर्षोल्लास नहीं रह गया है. पहले बच्चे टोलियाँ बनाकर गली-गली में हुड़दंग मचाते थे. होली के 10-12 दिन पहले ही मित्रों संग होली का हुड़दंग और गली-गली होली का चंदा इकट्ठा करना और किसी पर भी बिना पूछे रंग उड़ेल देने से एक अलग प्यार दिखता था. इस दौरान गाली देने पर भी लोग उसे हँसी में उड़ा देते थे. अब तो लोग मारपीट पर उतारू हो जाते हैं.

पहले सबकी बहू-बेटियों को लोग अपने जैसा समझते थे. पूरा दिन घरों में पकवान बनते थे और मेहमानों की आवभगत होती थी. अब तो सबकुछ बस घरों में ही सिमट कर रह गया है. आजकल तो रिश्तों में मेल-मिलाप की कोई जगह ही नहीं रह गई है. मन हुआ तो औपचारिकता में फोन पर हैप्पी होली कहकर इतिश्री कर ली जाती है. अब रिश्तों में वह मिठास नहीं रह गयी है. पहले लड़कियाँ भी घर-घर जाकर होली की खूब हुल्लड़ मचाती थीं. अब माहौल ऐसा हो गया है कि यदि कोई लड़की किसी रिश्तेदार के यहां ही ज्यादा देर तक रुक गई तो परिवार के लोग चिंतित हो जाते हैं कि क्यों इतनी देर हो गयी. अब लोगों को रिश्तों पर भी उतना भरोसा नहीं रह गया है.

दूसरी ओर, होली के खान-पान में भी अब अंतर आ गया है. गुझिया, पूड़ी-कचौड़ी, आलू दम, खोवा आदि मात्र औपचारिकता रह गई है. अब तो होली के दिन भी मेहमानों को कोल्ड ड्रिंक्स और फास्ट फूड जैसी चीजें परोसी जाने लगी हैं. वहीं, होलिका के चारों तरफ फेरे लगाकर सुख-शांति की कामना करना, गोबर से विभिन्न आकृति के उपले बनाना, दादी-नानी का मखाने वाली माला बनाना, रंग-बिरंगी ड्रेस में अपनी सखी-सहेलियों संग घर-घर मिठाई बाँटना, गेहूँ के पौधे भूनना और होली के लोकगीतों को गाना. अब यह सब परंपराएँ तो अब नाम के ही रह गए हैं.

होली रोपण के बाद से होली की मस्ती शुरू हो जाती थी. छोटी बच्चियाँ गोबर से होली के लिए वलुडिये बनाती थी. उसमें गोबर के गहने, नारियल, पायल, बिछिया आदि बनाकर माला बनाती थीं. अब यह सब नजर नहीं आता. होली से पूर्व घरों में पलाश के फूलों को पीस कर रंग बनाए जाते थे. महिलाएँ होली के गीत गाती थी. होली के दिन गोठ भी होती थी जिसमें चंग की थाप पर होली के गीत गाए जाते थे. बसंत पंचमी से ही फाग के गीत गूँजने लगते थे. आज के समय कुछ मंदिरों में ही होली के गीत सुनाई देते हैं. होली के दिन कई समाज के लोग सामूहिक होली खेलने निकलते थे. साथ में ढोलक व चंग बजाई जाती थी, अब वह मस्ती-हुड़दंग कहाँ?

अब होली केवल परंपरा का निर्वहन रह गया है. हाल के समय में समाज में आक्रोश और नफरत इस कदर बढ़ गई है कि कई परिवार होली के दिन घर से निकलना ही नहीं चाहते. लोग साल दर साल से जमकर होली मनाते आ रहे हैं. इस पर्व का मकसद कुरीतियों व बुराइयों का दहन कर आपसी भाईचारे को बनाए रखना है. आज भारत देश मे समस्याओं का अंबार लगा हुआ है. बात सामाजिक असमानता की करें, इसके कारण समाज में आपसी प्रेम, भाईचारा, मानवता, नैतिकता खत्म होती जा रही हैं. कभी होली पर्व का अलग ही महत्व था, होलिका दहन पर पूरे परिवार के लोग एक साथ उपस्थित रहते थे. और होली के दिन एक दूसरे को रंग लगा व अबीर उड़ाकर पर्व मनाते थे. लोगों की टोली भाँग की मस्ती में फगुआ गीत गाते हुए घर-घर जाकर होली का प्रेम बाँटती थी.

अब हालत यह है कि होली के दिन आधे से अधिक लोग खुद को कमरे में बंद कर लेते हैं. हर माह, हर ऋतु किसी न किसी त्योहार का संदेश लेकर आती है. हमारे त्योहार हमें जीवंत बनाते हैं, ऊर्जा का संचार करते हैं, उदास मनों में आशा जागृत करते हैं. अकेलेपन के बोझ को थोड़ी देर के लिए ही सही, कम करके साथ के अहसास से परिपूर्ण करते हैं, यह उत्सवधर्मिता ही तो है जो हमारे देश को अन्य की तुलना में एक अलग पहचान प्रदान करती है. होली पर समाज में बढ़ती द्वेष भावना को कम करने के लिए मानवीय व आधारभूत अनिवार्यता की दृष्टि से देखना होगा

*****

ऋतुचक्र

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

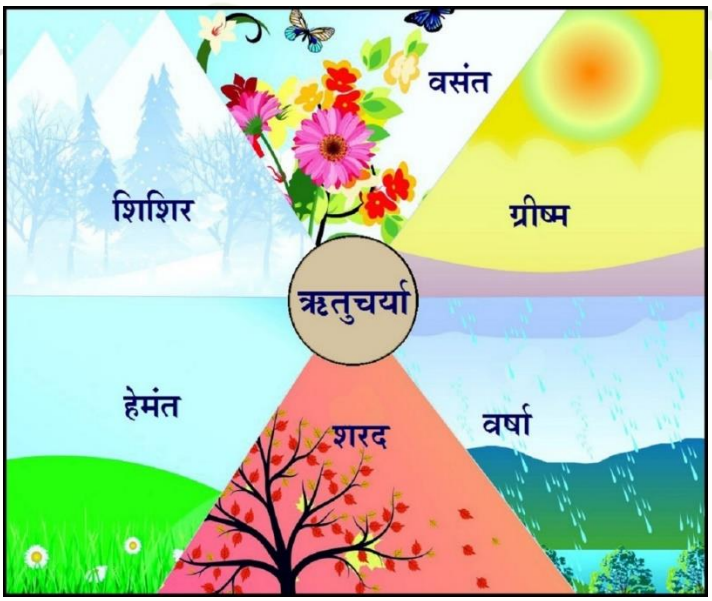

भारतवर्ष में छह ऋतुएँ हैं
ऋतु को मौसम भी कहते.
ऋतुओं के रंग न्यारे - न्यारे
जिसमें हम सब हैं रहते.

एक वर्ष में मास हैं बारह
छह ऋतुओं के दो - दो मास.
ग्रीष्म, वर्षा. शीत नाम से
तीन प्रमुख ऋतुओं का वास.

चैत्र और बैशाख मास तक
कहलाता ऋतुराज 'वसंत' .
फसल, पौध, फल - फूल हैं खिलते
शीतकाल का होता अंत.

जेष्ठ - आषाढ़ में 'ग्रीष्म' ऋतु हो
पड़ती है तब भीषण गर्मी.
शीतल छाँव में सुख मिलता है
आँधी, लू करती हठधर्मी.

श्रावण - भादों मासों में ही
ऋतुओं की रानी 'वर्षा' आती.
रिमझिम - रिमझिम पानी बरसे
भू पर हरियाली है छाती.

आश्विन से कार्तिक मास तक
शरद 'ऋतु का होता है काल.
निर्मल नभ दिखलायी देता
शीतल हवा दिखाती चाल .

मार्गशीर्ष से पौष मास तक
ऋतु कहलाती है' हेमंत '.
वातावरण सुहाना होता
गर्मी का हो जाता अंत.

माघ से फाल्गुन मास शिशिर का
इसमें होता भीषण शीत.
पेड़ों में पतझड़ होता है
कोहरा, गलन करे भयभीत.

होता है ऋतुचक्र अनूठा
देती प्रकृति हमें सुख - कष्ट.
प्राणी मौसम को यदि सह ले
कभी न आशा - बल हो नष्ट.

*****

होली है

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

होली है, भाई होली है.

बंदर काका भांग पिए हैं
करता श्वान ठिठोली है.

खुशी में डूबा जंगल है
आया पर्व सुमंगल है.
कोकिल, मैना गाएँ गीत
कौवे ने छेड़ा संगीत.

बिल्ली - चूहा रंग खेलते
मस्त गधों की टोली है.

लगा शेर को रंग गुलाल,
हाथी पानी रहा उछाल.
बुलबुल - गौरैया हैं संग,
तितली को करती हैं तंग.

ठुमक - ठुमक कर नाचा मोर,
हवा फागुनी डोली चहूँ ओर.

मधुमक्खी ले आई शहद,
साथी सभी हुए गदगद.
तोते ने भी किया न देर,
लगा दिया था फलों का ढेर.

सबने खाया - पिया प्रेम से
भरी हर्ष से झोली है.
होली है, भाई होली है.

*****

समय

रचनाकार- सीखा मसीह, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार गवर्नमेंट अंग्रेजी माध्यम स्कूल

समय सबके पास होता है, सबके पास 24 घंटे ही होते हैं. हम सभी को समय का उपयोग करना अच्छी तरह से सीखना चाहिए. कुछ लोग समय का उपयोग गलत तरीके से करते हैं. अगर हम समय का सही तरीके से उपयोग करेंगे तो हमें जिंदगी में बहुत कुछ हासिल होगा. समय सबके पास जरूर होता है. अगर समय एक बार चला जाए तो वापस कभी नहीं आता. इसीलिए हमें अपने समय का सही तरीके से उपयोग करना चाहिए . सबको अपने जिंदगी में समय का महत्व पता होना चाहिए. क्योंकि समय कब कौन सा मोड़ ले ले, यह हमें पता नहीं रहता है. अगर समय कोई गंभीर मोड़ ले तो हमें उसका सामना करना चाहिए. तभी हम आगे बढ़ सकते हैं. इसीलिए सब कहते हैं समय बलवान होता है इंसान नहीं . यह बात सभी व्यक्तियों पर लागू होती है.

*****

जल

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा- सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

जल है तो कल है ऐसा कहा जाता है क्योंकि जल हमारे जीवन की बहुत उपयोगी चीज है जिसके बिना हम जिंदा नहीं रह सकते. इसके कई नाम है जैसे- पानी, नीर, वारि ,आदि. हम खाना खाते समय ,कपड़े धोते समय ,बर्तन धोते समय और ऐसे बहुत से कामों में इसका उपयोग करते हैं . जल हमारे पृथ्वी में 75%भाग में है. समुद्र के पानी को हम पी नहीं सकते क्योंकि यह बहुत खारा होता है और इसमें कई प्रकार का प्रदूषण भी होता है, जिसे हम "जल प्रदूषण" के नाम से जानते हैं. इसमें "जलीय पौधे", "जलीय जंतु" आदि होते हैं जिससे कि पानी गंदा होता है.

हम इस पानी को उबालकर शुद्ध करके पी सकते हैं जिससे कि इससे हमें कोई नुकसान नहीं होगा.

ज्यादातर पानी को गंदा हम लोग ही करते हैं जैसे हम कचरे को नदी, तालाब में बहा देते हैं जिससे कि नदी का पानी समुद्र में जाकर प्रदूषित कर देता है. हम पानी को प्रदूषित न करें तो यह हमारे लिए बेहतर होगा. पानी हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है जिसके बिना हम जिंदा नहीं रह सकते, इसलिए हमें पानी का कम से कम उपयोग करना चाहिए और उसे गंदा होने से भी बचाना चाहिए पानी के प्रदूषित होने से बहुत सी परेशानियां भी होती है अब तो पीने लायक पानी भी कम होने लगा है और अगर पानी ही नहीं रहेगा तो फिर बिजली कैसे बनेगी? इसका भी ख्याल रखना चाहिए और हमें जल को प्रदूषित होने से रोकना चाहिए.

*****

पहेलियां

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार

1. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की डोरी थी जिनके हाथों में
शौर्य और वीरता झलकता इनके हर बातों में।
अपने लाल को बांध पीठ पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ाए
मनु नाम की थी वो बेटी जिसने अंग्रेजो को रूलाए
बताओ मैं कौन हूं?

2. चेतक घोड़ा जिनकी शान,
भारत माता के है वो इन।
जंगल -जंगल की मारी छान,
वह थे पूरे मेवाड़ की शान.
बताओ मैं कौन है?

3. सत्य, अहिंसा के सच्चे पुजारी
चरखा,लाठी और खादी धारी.
सबके बटूओ की शान बढ़ाते,
सबको सच की राह दिखाते
बताओ मैं कौन हूं?

4. सन 65 की जंग हुई तो,
घुटने में आया पाकिस्तान.
मंत्र अनोखा दिया राष्ट्र को,
जय जवान जय किसान
बताओ मैं कौन हूं?

5. तुम मुझे खून दो का दिया नारा,
जय हिंद के नारों से गूंजा भारत सारा।
देश की आजादी खातिर गए समुंदर पार,
उनके शौर्य के आगे अंग्रेज गए हार
बताओ मैं कौन हूं?

6. 1928 मैं साइमन कमीशन का किया बहिष्कार
अंग्रेजों ने कर दिया उन पर लाठी से प्रहार
साइमन गो बैक कर दिया नारा
देश पर अपना सर्वस्य निछावर कर डाला
बताओ मैं कौन हूं?

7. सीधी भाषा सीधी बोली पर थे गर्म विचार,
गीता रहस्य नाम की पुस्तक लिखी थे बड़े समझदार सारी दुनिया को स्पष्ट कहना था उनका,
आजादी है हमारा जन्मसिद्ध अधिकार
बताओ मैं कौन हूं?

उत्तर- 1. रानी लक्ष्मीबाई, 2. महाराणा प्रताप, 3. महात्मा गांधी, 4. लाल बहादुर शास्त्री, 5. सुभाषचंद्र बोस, 6. लाला लाजपत राय, 7. बालगंगाधर तिलक

*****

आम

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़

आम फलों का राजा है
खट्टा मीठा ताजा है.
गर्मी के मौसम में आता
सब बच्चों के मन को भाता.
आओ पेड़ पर चढ़ जाए
डाल पकड़कर उसे हिलाएं.
आम गिरता टप -टप-टप
बिनो- बिनो झटपट -झटपट.
आम का अचार बनाये
खा -खा हम मजे उड़ाएं..

*****

होली

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़

देखो देखो रंगों का मौसम आया है
सबके मन को रंगीन बनाया है
बोले सब मीठी मीठी बोली
साथ मिलकर सब खेलें होली
सबके दिल से नफरत को मिटाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है.

हो रही रंग गुलालों की बारिश
बच्चे बूढ़े पूरी कर रहे अपनी ख्वाहिश
बिछड़े हुए सब मित्रों को मिलाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है.

सब के घर बन रही गुजिया मिठाई
चारो तरफ से महकती खुशबू आई
सबके दिल के गम को छुपाया है
देखो देखो रंगों का मौसम आया है.

*****

मेरा घोड़ा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

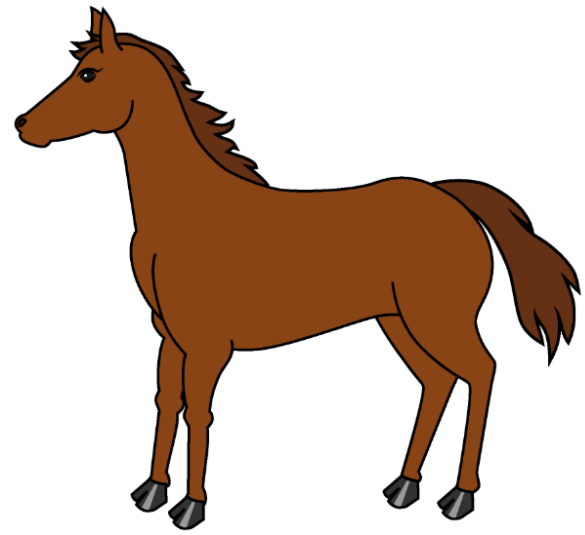

मेरा घोड़ा नंबर वन.

है भले ही लकड़ी की,
पर बढ़िया कद-काठी.
यह घोड़ा होकर भी,
मेरा बहुत अच्छा साथी.
इस पर मैं बैठा बन ठन.
मेरा घोड़ा नंबर वन.

लाल लगाम है इसका,
सफेद रंग चमकदार.
हृष्ट-पुष्ट तंदुरुस्त,
लगता बड़ा पानीदार.
चलता उठा कर गरदन.
मेरा घोड़ा नंबर वन.

मैं बोलूँ चल रे घोड़ा,
फिर सरपट दौड़ लगाता.
पूरे बरामदे में ही मुझे,
दुनिया की सैर कराता.
गाँव शहर कभी वन.
मेरा घोड़ा नंबर वन.

*****

वृक्ष

रचनाकार- सीखा मसीह, कक्षा-सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार गारमेंट
अंग्रेजी माध्यम स्कूल तारबाहर, बिलासपुर

मैं एक बड़ा सा वृक्ष हूं जो, धरती की सुंदरता बढ़ाता हूं.
मैं इस धरती के लोगों की मदद करता हूं,
कोई रास्ता भटका तो उसके लिए छाया देकर उसका घर बन जाता हूं.
मैं सबको अपने हवा के द्वारा ऑक्सीजन देता हूं,

मुझे डर लगता है कि कोई मुझे काट ना दे.
मैं सभी को ताजा ताजा फल देता हूं कि लोग भूखे ना रहे.
किसी को भूख लगे तो मैं उन्हें अपनी लकड़ियां देखकर उनका चूल्हा बन जाता हूं.
मैं धरती मां की मिट्टी से जीवित हुआ हूं,

मेरा शरीर का हर हिस्सा धरती मां की मिट्टी से जुड़ा हुआ है.
मैं एक वृक्ष हूं जो हमेशा लोगों की सेवा करता हूं,
जरूरत पड़े तो मैं लोगों के लिए जान भी कुर्बान कर दूंगा.
इतना मदद करने के बाद भी लोग मुझे अपना नहीं मानते .

*****

पढ़ना जरुरी है

रचनाकार- खेमराज साहू 'राजन', भिलाई

जीवन में आगे बढ़ना है ,
पढ़ना लिखना जरुरी होगा.
माँ बाप के नाम रोशन करना है,
पढ़ना लिखना जरुरी होगा.

जीवन मे नाम कमाना है,
शिक्षा के दीप जलना होगा.
जीवन में कुछ पाना है,
भविष्य बनाना जरुरी होगा.

शिक्षा से संस्कारी बनना है,
संस्कार से नया समाज बनाना होगा.
जीवन में उन्नति पाना है
विद्यालय रोज जरुर जाना होगा.

जीवन में आगे-आगे बढ़ना है,
पढ़ाई लिखाई अब करना होगा.
हम सबको शिक्षा का अधिकार है,
अधिकार के लिए लड़ना जरुरी होगा.

अधिकार के साथ ही साथ,
कर्तब्यो का भी बोध कराना होगा.
जीवन में नैतिकता भी जरुरी है
पढ़ना लिखना भी अब जरुरी होगा.

*****

धान अऊ किसान

रचनाकार- श्रीमती युगेश्वरी साहू, बिलाईगढ़

हमर छत्तीसगढ़ के प्रमुख फसल धान हे
खून पसीना बहाके उपजावत ओला किसान हे.
किसान हर चिखला पानी म मेहनत करथे
धन्य हे ओखर चोला सर्दी गर्मी ल सहत रहिथे.
तब जाके मिलथे हमन ल बोरा-बोरा धान
धन्य हे मोर छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढिया किसान.
पहिली के किसान नागर बइला ह संगवारी बनाय रहय
चटनी बासी खावय शरीर ल स्वस्थ्य बनाय रहय.
आज के जमाना म खेती होथे टेक्टर अऊ थ्रेसर से
विज्ञान के चमत्कार म खुश अऊ मुक्त हावय प्रेसर से.

धान के खेती हर अरबढ़ सुख देथे
किसान मन के मन ल हर लेथे.
छत्तीसगढ़ के माटी हर उगलथे सोन सही धान

घर म आथे धान गदगद हो जाते लईका सियान.
धान के निकले चाउर के कतका करों बखान
चीला, सोहारी,खुर्मी,आइरसा बनथे एखर पकवान.
आनी -बानी के हावय धान ओमा ले निकले सादा पिसान
धन्य हे धान के उपजोइया मोर छत्तीसगढ़िया किसान.

*****

निपुण भारत

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार

निपुण भारत का है यह मीठा सपना,
पढ़ना-लिखना सीखे हर बच्चा अपना.
क, ख, ग, घ सीखें और पाएँ अक्षर ज्ञान,
पुस्तक को देख कर रखें अपने विचार.

सब बच्चे शाला के बन सकें होनहार,
समझ के साथ सीखें पढ़ना-लिखना.
बेसिक गणना करना, बात अपनी कहना,
पाएँ बुनियादी कौशल, सृजन नया करना.

तीन से ग्यारह साल तक पूरे होंगे आयाम,
ना आए आगे कक्षा में कोई परेशानी.
इसीलिए हो रही है पहले से तैयारी,
संख्यापूर्व धारणा व कराए संख्या ज्ञान.

स्थानीय समझ व मापन उन्हें समझाएँ,
पैटर्न पर पकड़ कुछ अच्छी हम बनाएँ.
आँकड़ों को व्यवस्थित करना उन्हें सिखाएँ,
गणितीय सोच व कौशल जीवन में अपनाएँ.

*****

जल

रचनाकार- गरिमा बरेठ, कक्षा- सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

जल है जीवन का आधार,
जल न फेको बेकार.
पानी है कितना अनमोल,
जानते हम इसका मोल.

जल ही जीवन है ,
पानी है जीवन की आन.
पानी है तो सब कुछ है,
पानी है धरती की शान.

पानी बिन धरती है सूनी,
बिन पानी है साँस अधूरी.
पानी बिन हो जाएँगे वीरान,
नदी-नाले, खेत-खलिहान.

जल से ही हम जीवन पाते,
जल बिन हम न रह पाते.

पानी में बसी सबकी जान,
आओ अब कुछ कर दिखाते.

चलो आज पानी बचाते हैं,
जल न होगा तो कल भी न होगा.
पानी की हर बूंद बचाते चलो,
जीवन का जश्न मनाते चलो.

*****

बुलंद हौसला

रचनाकार- सृष्टि प्रजापति, सातवीं, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

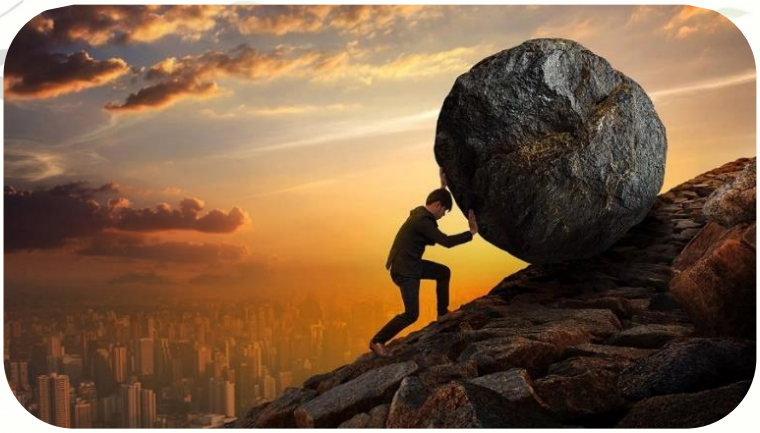

सपने तो सभी के होते हैं.
सच सिर्फ कुछ ही कर पाते हैं.

हौसले बुलंद न हों तो बाकी सारे रह जाते हैं.
मेहनत में विश्वास रखो किस्मत पर ध्यान न दो.
अरे! किस्मत तो खुद ही बदल जायेगी.
जब वह तुमको मेहनत करता पायेगी.

हौसला रखो और एक राह चुन लो.
वही है जो तुम्हें मंज़िल तक पहुँचाएगी.
जब चल रहे होगे, परेशानियाँ बहुत सी आएँगी.
हिम्मत तुम्हारी देख, देर तक ना टिक पाएँगी.

अपना सब अर्पण कर दो, उस मंज़िल की आस में.
भले ही रास्ते पर कोई न हो आज तुम्हारे साथ में.
यक़ीन रखना एक दिन, पूरी कायनात साथ हो जाएगी.
अपने मंज़िल की ठान लो मंज़िल तुम्हें मिल जाएगी.

*****

कौन है शिक्षक

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

शिक्षक वो नहीं होते, जो पाठ्यपुस्तक का पाठ पढ़ाकर कक्षा से चले जाए,
शिक्षक तो वो होते हैं, जो पूरे जीवन का पाठ पढ़ाकर, हमारे दिल और यादों में हमेशा रहते हैं

शिक्षक तो वो होते हैं जो हमारी हर अच्छी चीज़ों पर हमें प्रोत्साहित ही नहीं करते बल्कि हमारी बुरी आदतों पर हमें रोकते है

शिक्षक तो वो होते हैं जो कभी भी हमें छोड़कर नहीं जातें, वो और उनकी बातें हमेशा हमारे साथ रहती हैं

शिक्षक तो वो निर्माणकर्ता होते हैं जो मिट्टी को सोना बनाते हैं
शिक्षक तो वो जौहरी होते हैं जो हमें तराशकर हीरा बनाते हैं

शिक्षक वो दीपक होते हैं जो खुद जलकर , दूसरों के घरों को रोशन करते हैं
शिक्षक वो दानी होते हैं जो हमें ज्ञान का दान देकर, हमारा जीवन संवारते हैं

*****

हो सकता है

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान

एक बार की बात है एक चीनी किसान था जिसका घोड़ा भाग गया. उस शाम सभी पड़ोसी आ गए और बोले, "यह बहुत बुरा है." और किसान ने कहा, "हो सकता है." अगले दिन घोड़ा वापस आया और अपने साथ सात जंगली घोड़े ले आया. और सभी पड़ोसियों ने आकर कहा, "यह बहुत अच्छा है, है ना?" और किसान ने कहा, "हो सकता है."

अगले दिन उसका बेटा, जो इन घोड़ों में से एक को वश में करने का प्रयास कर रहा था, और उसकी सवारी कर रहा था और फेंक दिया गया, उसका पैर टूट गया. और सारे पड़ोसी शाम को आ गए और कहा, "अच्छा, यह बहुत बुरा है, है ना?" और किसान ने कहा, "हो सकता है."

अगले दिन भरती अधिकारी सेना के लिए लोगों की तलाश में इधर-उधर आ गए. उन्होंने उसके बेटे को ठुकरा दिया क्योंकि उसका पैर टूट गया था. और सभी पड़ोसी उस शाम के आसपास आए और कहा, "अच्छा, क्या यह अद्भुत नहीं है?" और किसान ने कहा, "हो सकता है."

कहानी का नैतिक: हमें अपने साथ होने वाली चीजों को अच्छे या बुरे के रूप में लेबल करने में सावधानी बरतनी चाहिए. ब्रह्मांड की कारण श्रृंखला जटिल और अनंत है. वास्तविक जीवन की कहानियां सुखद अंत के बाद भी जारी रहती हैं.

*****

ज्ञानवर्धक बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश

1. रंग-बिरंगा पंछी हूं मैं
जम कर डांस दिखाता,
सिर पर मेरे कलगी होती
बोलो क्या कहलाता?

2. मध्य हटे तो कल बन जाता,
अंत हटे तो कम.
राष्ट्रीय पुष्प सब कहते मुझको,
याद करो हरदम.

3. जंगल का में नही हूँ राजा,
लेकिन मेरी शक्ति आपार.
अति फुर्तीला धावक हूँ मैं,
खाल हमारी चित्ती दार.

4. भारत की मैं रक्षा करता,
चार अक्षर का मेरा नाम,
पर्वतों का मैं हूँ राजा
बड़ा सरल है मेरा नाम.

उत्तर- 1. मोर, 2. कमल, 3. चीता, 4. हिमालय

*****

सरसराते हवाओं का झोंका

रचनाकार- अशोक श्री "आशु", शिवरीनारायण

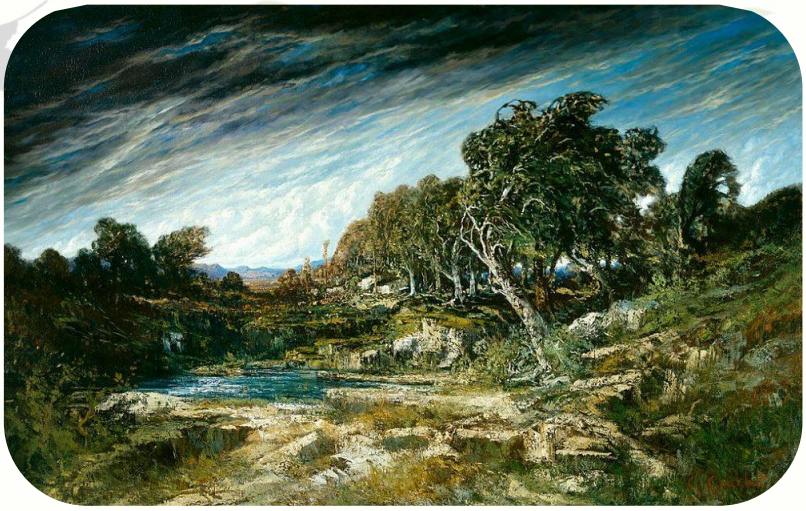

सरसराती हवाओं की लहर आने लगी है,
कुछ नमी तो थोड़ी तपन भी छाने लगी है.

मौसम भी तो अब अंगड़ाई लेने लगी है,
पतझर का संदेशा अब तो देने लगी है.

चौक-चौबारे फूल-पत्तों से ढँकने लगे हैं,
नदियाँ-पहाड़ अब सजने-सँवरने लगे हैं.

खनखनाहट पत्तों से अब आने लगी है
कोई चरचराहट कदमों की आने लगी है.

पगडंडियाँ नदारद और अंजान हो गईं.
बहार पतझर पर लो मेहरबान हो गई.

स्वागत को आतुर कोयल कूकने लगी है,

वासंती हवा फिजाओं में महकने लगी है.

महकते बौरों से अमराई लदने लगी है,
पंखुड़ियाँ पलाश की अब दहकने लगी हैं.

दिशा-दिशा धरा में नगाड़े गूंजने लगे है,
फागुन फाग में अब तो रंग-रंगने लगा है.

*****

जादुई पलाश फूल

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

मदनपुर नामक एक गांव था.वहां एक किसान अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहता था.उसकी पत्नी किसान के काम में मदद करती थी, उसकी बेटी का नाम गौरी था.

किसान पहुंच गरीब था वह दिन- रात मेहनत करके अपने परिवार का भरण पोषण करता था. एक दिन गौरी स्कूल से पढ़कर जब लौट रही थी तो, उसे जंगल के रास्ते में एक पौधा दिखा वह उस पौधे को लेकर घर आ गई और आकर अपनी मां से कहती है देखो मां मैं एक पौधा लाई हूं, उसकी मां कहती है जब इस पौधे को बगीचे में लगा देना पौधे को लेकर गौरी बगीचे में जाती है और मां के साथ उस पौधे को वह लगा देती है. धीरे-धीरे वह पौधा बड़ा होने लगता है और एक पेड़ बन जाता है उसमें बहुत सुंदर नारंगी रंग के फूल खिलने लगते हैं. वह फूल की खुशबू और चमक पूरे चारों तरफ छाई रहती थी उन्होंने जब इस पेड़ को देखा तो बड़ा आश्चर्य लगता था. धीरे-धीरे किसान का काम बढ़ने लगा और वह बहुत अच्छे से रहने लगा. एक दिन अचानक किसान की तबीयत बहुत बिगड़ गई और वह बीमार होकर बिस्तर पर पड़ गया इसे देख कर उसकी पत्नी और बेटी बहुत दुखी रहने लगे, सभी डॉक्टर से इलाज कराने पर तबीयत ठीक नहीं हो रही थी डॉक्टरों ने कह दिया था कि अब किसान ठीक नहीं हो सकता गौरी चुपचाप जाकर उसी पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगी तब वह कहता है कि गौरी तुम क्यों रो रही हो गौरी कहती है कि, मेरे पिताजी की तबीयत ठीक नहीं है पौधा कहता है बस इतनी सी बात है, तुम ऐसा करो मेरे पेड़ से दस फूल और दस पत्ती ले लो और उसे कूटकर पीसकर उबाल के उसका रस निकाल लेना और फिर उसे अपने पिताजी को देना इससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हो जाएगा. गौरी ने वैसा ही किया और देखा कि उसके पिता जी धीरे-धीरे ठीक हो गए. एक दिन वहाँ से व्यापारी गुजर रहे थे,उन्होंने रात में देखा वाह कितना सुंदर पेड़ है जो चमक रहा है उसकी खुशबू भी बहुत अच्छी आ रही है उन्होंने उस पेड़ के बारे में पूछा किसान से.

किसान ने बताया कि हां यह पेड़ मेरी बेटी लेकर आई है उसी ने लगाया है और व्यापारी चले गए.एक दिन किसान का परिवार मेला देखने गया व्यापारी जब लौटे तो देखा कि बगीचा सुना है तब उन्होंने उस पेड़ को काटना चाहा जैसे ही उन्होंने उस पेड़ को काटा उस पेड़ ने उन्हें करंट लगाकर दूर फेंक दिया दोनों डर गए इतने में किसान का परिवार आ गया और,उन्होंने पूछा कि आप क्या कर रहे हो,तब व्यापारियों ने कहा कि हम इस पेड़ को अपने साथ ले जाना चाह रहे थे क्योंकि यह बहुत कीमती पेड़ है पर हम समझ गए कि यह पेड़ जादुई है,जो कि हमें झटका दे रहा था हमें माफ कर दीजिए हम दोबारा गलती ऐसी नहीं करेंगे. तब गौरी ने बताया कि हां पिताजी यह पेड़ जादुई है इसी के फूल और पत्ती से आपकी तबीयत भी ठीक हुई थी. जब किसान ने यह सुना तो उसने पेड़ को बहुत प्यार से देखा और उसकी सेवा पूरे परिवार मिलकर करने लगे. गौरी ने उस गिरे हुए नारंगी फूल को उठाकर घर में बहुत सारा रंग तैयार किया फिर सब ने मिलकर उस रंग से होली खेली.

*****

सफलता मचाएगी शोर

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 7 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

आने वाली परीक्षा है,
कर लो अब तैयारी.
अच्छे नम्बर पाना मुझको,
सोच बनालो प्यारी.

पढ़ो अच्छे से मन लगाकर,
समय अभी है बाकी.
हर पल का उपयोग करो,
बनाओ समय-सारणी.

छोड़ो व्यर्थ चीजों को,
करो इनकी अवहेलना.
मोबाइल, टी वी दूर रखो अब,
पढ़ाई करो अब तो न.

कड़ी मेहनत अब करो,
लगाओ पढ़ाई पर ज़ोर.
चुपचाप अध्ययन करो,
सफलता मचाएगी शोर.

*****

दोस्ती

रचनाकार- सागर कुशवाहा, स्वामी आत्मानंद से गफ्फार तार बहार बिलासपुर

सात रंग की चिड़िया, जब जब मेरे आंगन आए, नाचे फूल- बगीचे नाचे, चहल पहल भर जाए.

वह हंस दे तो सारे हंस दे वह गऐ को गाए, जब जब आती झटपट कहती आओ खुशी लुटाए.

बैठ पास, फिर खोला करती मधुर दोस्ती के पन्ने,कहती छोड़ उदासी खाओ सागर मीठे गन्ने.

(दोस्ती में मुश्किल के दिन जब छोड़ देते हैं सब साथ हमारा तब आता है दोस्त काम हमारा)

जब भूख लगे तो फिर,ले आती छुपा कहीं से खूब बड़ा एक आम, खाता जाता हंसता जाता उसमें हंसी तमाम.

मैं कहता हूं चिड़िया बोलो,नाम तुम्हारा क्या क्यों,तुम इतनी खुश दिल हो जी काम तुम्हारा क्या.

चिड़िया बोली सात रंग की चिड़िया हूं, मैं स्वप्न नगर से आई.

लोग मुझे अच्छे लगते हैं,प्यार करें जो जी से.

घर-घर गाती हूं मैं,गीत दोस्ती के प्यारे, जिससे उतरे सबके घर चंदा झिलमिल तारे.

हाथ हाथ में लेकर फिर वह नाचे गाऐ, सबसे बढ़कर प्यार यही है वह सब जग को सिखलाऐ.

बिना मोल के सागर तुम को,मिला दोस्ती का गहना, दुनिया में अनमोल यही है,बात याद रखना.

कहकर उड़ी उड़ी जाती,चिड़िया खुले गगन में, देख रहा मैं देखा करता, खुश होकर मन में.

यही दोस्ती मिल जाए तो,सब कुछ जग में अपना,वरना सब कुछ पाकर भी है सूना जग सूना.

*****

कौन है वो

रचनाकार- सृष्टी प्रजापति, स्वामी आत्मानंद तारबहार

कौन है वो.
जो हमे गिरते-गिरते बचाती है.
बिन बताए ही हर बात जान जाती है.
खुशी हो या गम उससे छुप नही पाता है.
चोट हमे लगे दर्द उसे भी हो जाता है.
तबियत हमारी खराब हो जाए रात-भर वो नही सो पाती है.

एक रोटी माँगो तो दो देकर जाती है.
जन्मदिन पर हमारे लिए खिर-पूरी बनाती है.
मानो उसके हाथो में जादू है.
करेले की सब्जी को बोल के खिला देती आलू है.

उसकी गोंद मे राज सिंघासन जैसा लगता है.
उसकी चुडियाँ गिनने मे बडा आनंद आता है.
मुझे बहुत खुशी है,की वह मेरे पास ही रहती है.
वो कोई नही मेरी माँ कहलाती है.

*****

बंदर मामा

रचनाकार- आशीष मोहन

बंदर मामा सोच रहे
जो बन जाऊँ वन मंत्री
चप्पा-चप्पा पहरा कर दूँ
खड़े रहेंगे संत्री!

i

फिर कोई न काट सके वन
मार सके न शेर
जो आयेगा बुरी नीयत से
कर देंगे हम ढेर!

फिर जंगल के कोने-कोने
होगा केवल मंगल
मानव के मंगल के घर
जंगल.. जंगल.. जंगल..!

*****

चीं-चीं चिड़िया सोची

रचनाकार- आशीष मोहन

ii

चीं-चीं चिड़िया सोची
मैं वन की मुखिया होती

सब करते बस शाकाहार
आपस में होता प्यार ही प्यार

चिड़िया की इस बात से
शेर को था ऐतराज

दूर एक डाली में बैठा
गुर्रा रहा था बूढ़ा बाज़

देख के बूढ़ी लोमड़ी आई
सुनो-सुनो एक कथा सुनाई

देखो हाथ में अंगुली पाँच
सबके अलग-अलग हैं साँच

दुनिया में कई रंग हैं
लोगों के अपने ढंग हैं

जो जैसा है रहने दो
खुद जिओ और जीने दो!

*****

बाल गीत

रचनाकार- आशीष मोहन

नानी हमसे इतनी
कंजूसी ठीक नहीं
हम बच्चों से इतनी
मक्खीचूसी ठीक नहीं

थोड़ी-थोड़ी गाँठ को खोलो
मुख से मीठा बोलो

जो कहना है हमसे कह दो
कानाफूसी ठीक नहीं

नानी हमसे इतनी
कंजूसी ठीक नहीं
हम बच्चों से इतनी
मक्खीचूसी ठीक नहीं

ये क्या नानी, पिया न पानी
मायूसी की क्या है कहानी

हम बच्चों की मान भी जाओ
रूसा-रूसी ठीक नहीं

नानी हमसे इतनी
कंजूसी ठीक नहीं
हम बच्चों से इतनी
मक्खीचूसी ठीक नहीं!

*****

शेर सिंह का जंगल में ऐलान

रचनाकार- आशीष मोहन

आज शेर सिंह ने कर दिया
जंगल में ऐलान
आओ मिल होली मनाए
जंगल की देहलान

पंछी प्रेम के रंग रंगेंगे
आसमान को नीला
मछली प्रीत के रंग से करदे
पोखर का जल पीला

हाथी दादा शेरसिंह के
गाल मलेंगे रंग
बिल्ली संग चूहे की होगी
जंगल में हुड़दंग

भालू चाचा मस्ती में हो
खूब पिएँगे भंग

सबके सब रंग जाएँगे
मस्ती में एक रंग

इस होली रंग ही रंग होंगे
जंगल की देहलान !

*****

महल गाड़ी नहीं चाहिए

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

हम थोड़े में संतुष्ट हो
वह अनुभूति वापस आएं
महल गाड़ी नहीं चाहिए
पुराना घर वापस आएं

बीते हुए बचपन के दिन
कितने सुहाने हसमुख थे
काश कभी ऐसा
करिश्मा भी हो जाए

बचपन के वह सुहाने
फ़िर से दिन लौट आएं
नया ज़माना छोड़
पुराने जमाने में लौट जाएं

समय चक्र विनती है
कुछ पीछे घूम जाएं
मम्मी पापा छोटी बहन
ऊपर से वापस आ जाएं

फ़िर घर में साथ बैठ
हसीं ख़ुशी से देर तक बतियाएं
हे समय का चक्र विनती हैं
कुछ पीछे घूम जाए

मोबाइल कार कंप्यूटर
सभ वापस चले जाएं
मम्मी पापा परियों की मुझे
बस वहीं कहानी सुनाएं

बड़ी हुई भारी जिम्मेदारी से
थक गया हूं वह वापिस छूट जाए
बचपन के वह सुहाने
दिन वापस अ ा जाएं

कुएं तालाब पर रोज़ नहाएं
वह दिन वापस आएं
मस्ती करें मम्मी पापा से डॉट खाएं
बचपन में ही सारा जीवन बताएं

*****

होली

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, पाटन

होली आगे रंग उड़ावत, ढोल बजाववव जी.
गाँव गली मा नाचत गावत, चलव मनाववव जी.

बरा ठेठरी खुरमी कुसली, बड़ ममहावत हे.
महतारी हा रांधत रांधत, सुग्घर गावत हे.

भाई बहिनी घर घर जाके, रंग लगावत हे.
लइकामन पारा पारा मा, दउड़त जावत हे.

जम्मों मनखे निकलव बाहिर, अउ जुरियाववव जी.
गाँव गली मा नाचत गावत, चलव मनाववव जी.

होली होथे परब मया के, बबा सिखावत हे.
लइका मन ला कथा कहानी, फाग सुनावत हे.

ये जिनगी सुख दुख के मिंझरा, तको बतावत हे.
छोड़व झन सत के रद्दा ला, ये समझावत हे.

सुनव गुनव सब बात बबा के, अउ अपनाववं जी.
गाँव गली मा नाचत गावत, चलव मनाववं जी.

*****

नारियों का सम्मान ही महिला दिवस

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

महिला दिवस का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण होना चाहिए;-

नारी तुम शक्ति स्वरूपा हो
नारी तुम श्रद्धा समर्पण हो,
नारी तुम आस विश्वास हो
नारी तुम सृष्टी का विकास हो.

ऐसे महान नारी शक्ति को नमन है,जिनके मात्र उपस्थिति से शक्ति,सामर्थ्य,और समृद्धि की श्री वृद्धि हो जाती है.इसीलिए इनको शक्ति स्वरूपा कहा जाता है.मानव जाति के लिए नारी ही एक ऐसा आधार है,जो मानव को सामर्थ्यवान बनाती है,मानव का प्रेरणाश्रोत बनती है.मानव का मार्गदर्शक बनती है.यह भी कहा जाना अतिश्योक्ति नही होगी की-

एक नारी सभी पर भारी,
नारी के बिना जग अंधियारी.
नारी है तो जग उजियारी
नारी से ही उपजी सृष्टी सारी.

"नारियों के सम्बन्ध में यह कहा जाता है की जहाँ नारियों की प्रतिष्ठा होती हैं, सम्मान होता है,जहाँ नारियाँ पूजी जाती है,वहीं देवताओं का वास होता है."

अक्षरशः सत्य बात है,बिना नारियों के सम्मान के,नारियों के प्रतिष्ठा के, घर नहीं बनता, परिवार,मानव समाज में सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती.मानव समाज को जोड़ने,मानव समाज को समृद्ध और संस्कारवान बनाने का यदि किसी ने सार्थक काम किया है तो वह है नारी शक्ति.

नारी को शक्ति स्वरूपा कहा गया है,तो इनको यूँ नहीं कहा गया है.इनके पास शक्ति के साथ क्षमा भी है.पीड़ा के साथ धैर्यता भी है.सर्जक के साथ संहारक भी हैं.माता के साथ सम्पूर्ण नाता भी है.तभी तो कहा गया है-

नारी तुम मात्र,जग में महान हो
सृष्टि के विकास की,पहचान हो.
तुम ही आदि-अंत की,विधान हो
तुम ही ईश्वर की बड़ी,वरदान हो.

उपरोक्त शक्तियों के श्रोत माता शक्ति के बारे मे जितना भी कहा जाय कम है. यदि हम कोई विशेष बात करें तो वह है नारी सम्मान की, नारी अस्मिता की, नारी सशक्तिकरण की, नारी के अधिकार की.और इस पर मानव समाज को शासन, प्रशासन को, विशेष पहल करने की आवश्यकता है.और इन सब बातों पर जब विशेष पहल होगी तो निश्चित ही नारी जाति का सम्मान होगा.हमारा सामाज भी गौरवान्वित होगा.हम आए दिन नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं,मात्र बात करने से कुछ नही होगा,उस पर हमे जमीनी स्तर पर काम करना होगा.उनके अधिकार के लिए हमे आगे आना होगा.हमे उनके लिए समर्पित होना होगा.

इसी आशा विश्वास और अपैक्षा के साथ दे नमन है-

नारी से सारा जहान है
नारी ही जग मे महान है,
तू ही शक्ति की खान है
तू ही ऊर्जा,क्षमतावान है."

*****

बाल शिक्षाप्रद हाइकु

रचनाकार- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', सारंगढ़-बिलाईगढ़

धान के ढेर
चहकती चिड़ियाँ
दाने बिखेर.

बच्चे हैं कच्चे
चाँद-सूरज-तारे
मन के सच्चे.

दीपक जला
खिल गई रोशनी
अंधेरा भगा.

रवि अनूप
चहचहाये खग
महकी धूप.

गुड़िया रानी
पीती चुल्लू सा पानी
हुई सयानी.

फलों की शान
गुठली के भी काम
खास है आम.

मन बावरा
पेड़ों में गिलहरी
फुदक रही.

पंखों के बल
उड़ान भरे पंछी
मिट्टी से नभ.

नभ में तारे
परेशान दिखते
चाँद खोजते.

रिश्ते संज्ञान
उड़ गई पतंग
ऊँची उड़ान.

गुच्छे में सजे
टप टप महुआ
टपक रहे.

चिड़िया नन्हीं
धूप से मुरझाई
बिल्ली मुस्काई.

नीड़ बनाने
उड़ गये विहग
तृण ले कर.

भीतर घुसी
शुद्ध पानी ले आई
कुएँ से बाल्टी.

*****

होली हुड़दंग

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

पीला, लाल, हरा, गुलाल, लेकर आना हमजोली.
रंगों का बौछार और हंसी-खुशी से आयी है होली.

निर्मल रंग की साड़ी पहन के निकालना आंगन में.
पकड़ हाथों में पिचकारी राह देखूंगा खुली लेन में.

स्वागत करेंगे तुम्हारी इंद्रधनुषी आकाशीय सतरंग.
झूमेंगे, नाचेंगे, मस्ती में चूर हम दोनों पियेंगे भांग.

राधा-कृष्ण की मधुर प्रेमकथा फाग गीत गाऊंगा.
थिरक उठेगी प्रकृति ऐसा ढोल-नगाड़ा बजाऊंगा.

मत काटना तुम हरे वृक्षों को करने होलिका दहन.
खोकर अपनी प्राणवायु सभ्य से असभ्य हो मगन.

मोक्षाग्नि में जला दो अपने अंदर की सारी बुराईयां.
नैतिकता, व्यवहार, जीवन चरित्र न बदले यारियां.

मनाओ वसंतोत्सव एकता व भाईचारे का संदेश हो.
सामाजिक, संस्कृति और मुस्कान का समावेश हो.

*****

मन अच्छा लगे तो

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

जब मन अच्छा लगता है, तो सारी दुनिया अच्छी लगती है.

जब भूख लगती है तो सबका स्वाद अच्छा लगता है.

जब प्यास लगती है तो पानी की क़ीमत समझ आती है

जब जिंदगी में परवाह करने वाला न हो तो प्यार की क़ीमत समझ आती है.

जब स्वयं को मान न मिले तो अपमान का भाव समझ में आता है.

*****

घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है

रचनाकार- किशन सनमुख दास भावनानी, महाराष्ट्र

घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है
क्योंकि ये भगवान हैं
कुछ बुजुर्गों की
अजीब कहानी है

हमने अपने जीवन में
सुख चैन रूपी बहुत
कुछ कमाया है
क्योंकि हमारे ऊपर
बुजुर्गों का साया है

घर में बुजुर्गों जरूरी है
क्योंकि ये भगवान हैं

कुछ बुजुर्गों की
अजीब कहानी है

ना खाने को रोटी
आंखों में बस पानी है
शरीर के हाथों हारे
यह मन के जवान हैं

हम सब को समस्याओं
से बचाया है
जीवन में पूरा परिवार
सुख चैन पाया है

जीवन में कभी ठोकर
नहीं खाया है
क्योंकि हमारे सिर पर
बुजुर्गों का साया है

समाज में सम्मान दिलाया है
जीने का तरीका सिखाया है
जिम्मेदार नागरिक का पाठ पढ़ाया है
क्योंकि हमारे ऊपर बुजुर्गों का साया है

*****

तितली

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

तितली रानी बड़ी सयानी,
करती हरदम वह नादानी.
फूल- फूल पर बैठ बैठकर,
भरती पेट मधु को चूस कर.

रंग बिरंगी रंगों वाली,
नीली पीली पंखों वाली.
डाल डाल पर मंडराती है,
सबके मन को लुभाती है.

बागों की हो शान बढ़ाती,
सबके मुख मुस्कान हो लाती.
मधुर मधुर तुम गीत सुनाती,
बड़े बुढ़े सबको हो भाती.

जब कोई तुमको छूने जाता,
झट से उड़ जाती आकाश.
कभी किसी के हाथ न आती,
चाहे फेंके कोई कितने पाश.

*****

जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

1. पाँव नहीं पर नाचय गोल, आगू-पाछू लइका डोल.
पातर बाती येला नेत, खेलत खानी करले चेत.

2. लानव लकड़ी देवव छोल, आगू-पाछू चोक्खू गोल.
जतके जादा खावय मार, भागय दुरिहा पल्ला झार.

3. दू थँगिया हे एखर हाथ, चमड़ा रब्बड़ देवय साथ.
मारय गोली नेत लगाय, चलव बतावव येहा काय.

4. लोहा, टीना झट चटकाय, रब्बड़ येला तुरत हराय.
भुँसा बीच सूजी लय खोज, रथे गोलवा, चाकर सोज.

5. बिना पाँव के चलथे घात, बिहना संझा दिन अउ रात.
टिकटिक रेंगय तीनों हाथ, पोंछत राहय अपने माथ.

6. इक महतारी, लइका तीस, सात रंग मा सबो गढ़ीस.
एक बछर मा बारा बेर, जम्मों परथें येखर फेर.

7. शुरू कटे ता बनथे गीत, बीच कटे ता संत पुनीत.
कटे आखिरी बनथे यार, एक संग मा सुर रसदार.

8. मोर नाँव मा आखर तीन, उड़ियाथौ पर हरँव मशीन,
सीधा-उल्टा एक समान, झटपट मोला तैं पहिचान.

9. लाली डिबिया पींयर पेट, राखय लाखों दाँत समेट.
फरय पेड़ मा, नइ हे नार, बड़ गुणकारी, बड़ दमदार.

10. एक नानकुन मटकूदास, कपड़ा पहिरै बीस पचास.
लाली सादा एखर रंग, रोवाथे, बड़ करथे तंग.

1- भौंरा (लट्टू) 2- इब्भा (गिल्ली), 3- गुलेल,4- चुंबक,5- घड़ी, 6- महीना, 7- संगीत, 8- जहाज 9- अनार, 10- गोंदली

*****

गजब लुहाथे मोबाइल

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

सात समुंदर पार सुनाथे,
लगथे जइसे, भेंट कराथे,
फोटू खींच, गीत तैं सुनले.
सुघर सुहाथे मोबाइल.

सेंती-मेंती सेल्फी लेलव,
खूब गेम घर बइठे खेलव,
कॉल वीडियो, सिरतों देखत,
नशा चढ़ाथे मोबाइल.

पढ़ई-लिखई, पाँव पछेलय,
मया मितानी मन ले मेलय,
घुरघुरहा घरखुसरा जइसे,
बइठ पहाथे मोबाइल.

*****

रसमलाई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

देख रसमलाई मन ललचाये,
चाहे कोई कितना समझाये.

रंग-रूप आँखों को अति भाता,
जी करता है, दिनभर मैं खाता.

दिखती सौम्य, शांत, अतिशय सुंदर,
पौष्टिकता का यह भरा समुंदर.

महक दुग्ध का मन को हरषाये,
देह सुदृढ़कर मन सबल बनाये.

प्रोटीन, फैट, कैलोरी वाली,
रहे क्षीरसागर में इठलाती.

मम्मी डाँटे, पापा भी टोकें,
मुझे रसमलाई खाने से रोकें.

*****

नवाचार

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

पढ़ना-लिखना होगा मजेदार,
अपनाएगें जब हम नवाचार.

डाँट-डपट ना अनुशासन से,
सीखें बच्चे अपने मन से.
उछलकूदकर, खेल तमाशा,
खुश होंगे पा अपनी भाषा.
तभी बनेंगें सब भागीदार,
अपनाएगें जब हम नवाचार.

चाहे जो भी वह करने दें,
रंग सलोना नित भरने दें.
देखभाल कर जानेंगे सब,
समझ बनेगी, मानेंगे तब.
सहज करेगें सारा स्वीकार,
अपनाएगें जब हम नवाचार.

दौड़, कबड्डी, खो-खो खेलें,
खूब मजे शाला में ले लें.
शिक्षा के प्रति हो अनुरागी,
मिले नहीं फिर शाला त्यागी.
शिक्षा पर है सबका अधिकार,
अपनाएगें जब हम नवाचार.

*****

गरमी के छुट्टी मा ममा गाँव चलव

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

कालकूत गरमी मा इस्कूल ले दु महीना के छुट्टी होगे हे. अब फेर इस्कूल खुलही असाढ मा. लइकामन मा टी.वी.,मोबाइल, कंप्यूटर, लेपटाप, विडियो गेम, देख-खेल के दिन ला पहाहीं अउ असकटाहीं घलाव. एकर ले बाँचे बर दाई-ददा मन हा गरमी के छुट्टी बिताय खातिर कोनो नवा-नवा जघा मा घुमे जाय के उदिम करहीं. कोनो पहाड़, कोनो समुंदर , कोनो देव-देवाला अउ कोनो पिकनिक वाले जघा मा जाँही अउ सुग्घर समे बिता के आहीं. येहा अच्छा बात हे के नवा-नवा जघा देखे अउ घुमे ला मिलही,ओखर बारे मा जाने-समझे के मउका घलाव मिलही. फेर ये दरी लइका मन के संग हम सबो झन अपन-अपन दादा-दादी अउ नाना-नानी के घर गरमी छुट्टी बिताय ला चलीन. मोर गोठ कोनो आरूग अउ नेवरिया गोठ नो हे फेर ये हा समे के माँग बनत जावत हे. पहिली के समे मा गरमी छुट्टी के मतलब हा कका-ममा के गाँव जवई होवय. सबले जादा लइका मन सधाय रहंय के कब गरमी के छुट्टी लगही अउ तुरते ममा गाँव जाबो.

गरमी के छुट्टी हा हमर दिन-रात एकसुरहा जीवन शैली ले थोरिक बिसराम लेके नाँव हरय. कुछू नवा करे के समे हरय. अइसन मउका मा हमन काबर कुछू नवा करे के जघा मा अपन जरी ले जाके मिले के सुअवसर ला गवाँईन. एखरे सेती लइका मन के संगे-संग हमु मन ला संघरा अपन सियान मन के आसिरबाद अउ अनुभव के मोती पाय बर ए दरी गरमी के छुट्टी मा कका-ममा गाँव चलीन. लइका मन तकनीक के आय ले अपन सरी संसार अपन एकठन नान्हें खोली ला समझे लागथें. संसार के सरी जिनिस के गियान अउ दरसन उन्ला एक बटन दबाय ले हो जाथे. उंखर इही भरम ला टोरे खातिर पुरखा मन के गाँव-गंवई बच्छर मा एक बेर जरुर जाना चाही. आजकाल के लइका मन ला नहर, नंदियाँ, तरिया, कुआँ,पहाड़, खेत-खार, बारी-बखरी, बगीचा ए सबके सउँहत दरस करे खातिर ममा गाँव जाना

चाही. अइसन ला देखे ले,इंखर ले खेले ले गजब मजा आही लइका मन ला. एक बेर आय ले घेरी-बेरी इहेंच आय के ओखी खोजहीं. परकीति ला छु-टमर के देखहीं अपन सवाल के जवाब घलो पाहीं. इंखर जिनगी मा का महत्तम हे एहू ला बने लकठा ले जानही. एखर रक्छा अउ संरक्छन काबर जरुरी हे एहू ला गुनहीं. कुल मिलाके तकनीक के संगे-संग अपन परियावरन अउ परकीति ले घलाव जुङ पाहीं.

गरमी के छुट्टी मा अपन पुरखा के गाँव जाय के सबले कीमती अउ जबर फायदा हे अपन परवार,अपन दादा-दादी अउ नाना-नानी ले भेंट करई. ए मन हा गियान अउ अनुभव के खजाना होथे जेखर लाभ हमन ला सोज्झे मा मिलथे. गाँव परवार मा जाय ले कका-काकी, बुआ-फुफा, बङे ददा-दाई ,ममा-मामी अउ इंखर लोग-लइका ले मेल-मिलाप होथे. अइसन जघा मा मान अउ मया भरपुरहा मिलथे जेखर सुरता जिनगी भर नइ भुलावय. आजकाल के उत्ता-धुर्रा भरे जिनगी मा बने ढंग के अपन बाप-महतारी अउ भाई-बहिनी भर ला जान पाथे अउ बाँकी नता-गोता परवार ला टीवी मा देखथे-सुनथे. गरमी के छुट्टी हा हमला सोनहा मउका देथे के अपन परवार ला काम-बुता ले समे निकाल के समे देइन अउ उंखर बीच मा रहीन. लइका मन ला तो बिक्कट मजा-मस्ती, मया अउ मान मिलथे अइसन जघा मा जाके. परवार के मया महत्तम समझ मा आथे. दिनभर बदमासी अउ मस्ती ममा गाँव मा लइका मन के चिन्हारी बनथे. बाग-बगीचा मा आमा-अमली टोरई अउ तरिया-नंदिया मा दिन भर डुबकई गाँव-गंवई मा ही होथे अउ कहूँ नहीं.

परवार मा संघरा रहे के नेंव परथे लइका मन के मन मा. जुरमिल के बुता-काम अउ जिमेदारी ला निभाय के सीख एकमई परवार ले लइका मन ला मिलथे. सब मा सहजोग के सुग्घर भावना के दरस होथे. गाँव मा सादगी,सफई अउ सुद्ध जीनिस के भरमार होथे. हवा,पानी के संगे संग मया-दुलार मा कोनो परकार के कोनो मिलवट नइ रहय. बिन तकनीक के, बिन बङे-बङे सुख-सुबिधा के असल अराम कइसे गाँव के जिनगी मा होथे एला देखे-सीखे के मउका गरमी के छुट्टी मा ही मिल सकथे. अपन भाखा, अपन बोली,अपन रीति-रिवाज, तीज-तिहार,परमपरा अउ मान्यता के साक्छात दरसन होथे. ए सब जिनिस हा लइका के जिनगी मा बङ भारी बदलाव ला सकथे. लइका के सोंच अउ समझ हा बिकसित होथे. अपने घर-परवार अउ जरी ले जुरे के समे मिलथे. अपन दादा-दादी, नाना-नानी ले गियान अउ अनुभव के बीज मंतर पाय के इही बेरा होथे. किसा-कहिनी के अथाह सागर होथे ए सियान मन हा. इंखर ए सरी वो जरुरी जानकारी मिलथे जौन जिनगी जीये बर बङ जरुरी होथे. जिनगी के मीठ अउ करू अनुभव ला अपन सियान मन ले सीखे के बेरा गरमी के छुट्टी मा ए दरी झन गवावव. घुमे-फिरे के संगे-संग जिनगी के नीक अउ गिनहा गोठ के गियान अपने सियान ले मिलना सोना मा सोहागा जइसन बात हरय. हमला अइसन कोनो मउका ला कभू नइ चूकना चाही.

लइका मन मा मया,मान-गउन, सहजोग, जिमेदारी अउ परवार,नता-लगवार के जरी ले जुरे के महत्तम खच्चित बाँटना चाही. अच्छा संस्कार , संवेदना अउ एखर सुद्धता हा हमर जिनगी मा बहुत महत्तम राखथे. अइसन कीमती जिनिस ला पाय बर हमला कोनो दुकान, इस्कूल अउ संस्थान मा जाय के जरुरत नइहे. सिरिफ गरमी के छुट्टी मा अपन पुरखा के गाँव-गंवई, घर-परवार ले सहज अउ सरल होके जुरव.

अपन बबा-ददा ले मिलव अउ सेवा करव. एखर बदला मा गियान अउ अनुभव के मेवा पावव. लइकामन ला तो जरुर ए दरी गरमी के छुट्टी मा जिनगी के अमोल अनुभव ले बर कका-ममा गाँव ले चलव. ए कदम हा,ए उदिम हा हमला अउ लइकामन ला नवा जोस अउ उरजा दीहि अपन रास्ता ला निभाय बर. अपन जिनगी के सिरतोन सबक सीखे बर बबा-ददा के कोरा मा समे बिताना बड़ जरुरी हावय आज के समे मा. आज हमर संस्कार मा गिरावट, मया मा मिलावट,तन-मन मा नकली सजावट के चलन बाढ गेहे. एखर ले बाँचे खातिर अपन पुरखा के जरी ले जुरे रहना अति आवश्यक हे अउ जरी ले जुरे खातिर अपन सियान मन के आसिरबाद अउ गियान के गंगा मा डुबकी लगाना बड़ जरुरी होथे. ए सब ला सिद्धो मा सकेले बर हमला अपन कका-ममा गाँव-गंवई गरमी मा जाना बड़ जरुरी हावय. ता फेर आवव चलिन अपन-अपन ममा-कका गाँव गरमी के छुट्टी मा मया के छँईहा मा समे बिताय खातिर.

*****

हौसला

रचनाकार- शिखर चंद जैन, KOLKATA

मम्मी - मम्मी जल्दी से कुछ करो वरना हम सब दम घुट कर मर जाएंगे.चिंटू चींटा बुरी तरह घबराया हुआ था.

मम्मी एंटी ने उसे शांत करते हुए पूछा," अरे बेटा तू इतना घबराया हुआ क्यों है ? ऐसी क्या बात हो गई ?"

मम्मी किसी ने हमारे बिल के दरवाजे पर सफेद रंग का विशाल पत्थर रख दिया है. अब हम बाहर कैसे जाएंगे? चिंटू ने हांफते हुए कहा.

थोड़ा धैर्य रखो, तुम मेरे साथ चलो.देखते हैं क्या किया जा सकता है. एंटी ने उसे साथ आने का इशारा किया और दरवाजे की तरफ चल पड़ी.

एंटी ने पहले दूर से उस चीज को गौर से देखा. फिर नजदीक जाकर सूंघने लगी और कुतरने की कोशिश की.सुगंध और स्वाद से वह समझ गई कि यह तो कोई दालमखाना है जो कहीं से लुढ़क कर यहां आ गया है.

एंटी ने हंसते हुए कहा ,"चिंटू बेटा, यह पत्थर नहीं ; हमारा भोजन है. इसे दालमखाना कहते हैं. यह काफी पौष्टिक होता है.या तो हम सब मिलकर इसे कुतर डालेंगे या अपनी ताकत से धकेल सकते हैं.अगर जरा सी तेज हवा चली तो यह खुद ही कहीं उड़ जाएगा.तुमने इसे पत्थर कैसे समझा? क्या इसे नजदीक से आकर नहीं देखा था?"

"नहीं मैंने तो इसे सफेद पत्थर समझ लिया और डर कर दूर से ही भीतर भाग आया." चिंटू ने कहा.

एंटी ने उसे समझाया," बेटा कभी भी पलायनवादी मत बनो.मुसीबतें जीवन का जरूरी हिस्सा हैं.उन्हें नजदीक जाकर समझो और उनका मुकाबला करो.इस तरह भागकर तुम ना मुसीबतों से छुटकारा पा सकते हो न कभी तरक्की कर सकते हो.इस बात पर एक छोटी सी कहानी सुनो जिससे तुम्हें बात ज्यादा आसानी से समझ में आएगी.एक बार धरती की गोद में दो बीज पड़े हुए थे. एक बीज में से अंकुर फूटा और धरती फाड़ के ऊपर की तरफ सिर उठाने लगा तो सुस्त पड़े दूसरे बीज ने कहा ,दोस्त ऊपर जाने की गलती मत करना. देखते नहीं रोज कितना कंपन होता रहता है.कोई गाड़ी ,जानवर या इंसान तुम्हें या तो तुम्हें रौंद डालेगा या कोई पक्षी खा जाएगा. बीज ने कोई उत्तर नहीं दिया.वह मुस्कुराने लगा. लेकिन उसने अपनी विकास यात्रा जारी रखी.धीरे-धीरे ऊपर पहुंचा तो सूर्य का प्रकाश, हवा ,पानी आदि सब उसका साथ देने लगे. इनका साथ पाकर वह एक पौधे में परिवर्तित होने लगा. दूसरा बीज धरती के अंदर ही रह गया. जबकि साहसी बीज पौधे से पेड़ बन गया. और फिर खुद ही असंख्य बीजों का स्रोत भी बन गया.लोगों को फूल और फल दिए. सबको छाया दी. जबकि दूसरा बीज अब तक नष्ट हो चुका था. जीवन में तरक्की वही कर पाते हैं जो मुसीबतों से डरने की बजाय आगे बढ़कर उनका मुकाबला करते हैं. डरने वाले या पलायवादी जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं."

मम्मी की बात सुनकर चिंटू अपने भीतूपन और अधीरता पर बहुत शर्मिंदा हुआ.उसने वादा किया कि वह अब साहसी बीज जैसा बनेगा

*****

कोयल रानी

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

कोयल रानी होकर मतवाली
कूक रही है डाली-डाली.
सुबह-शाम घूम-घूम कर
अपनी मधुर आवाज छेड़ रही है.
सबको सुंदर लग रही है
कोयल की मधुर बोली.
कोयल रानी होकर मतवाली
कूक रही है डाली-डाली.
बसंती हवा भोर की चल रही रसीली
पेड़ों में छिपकर कोयल छेड़े तान सुरीली.
कुहू-कुहू कुहके पिया को
ढूंढे होकर वह मतवाली.
कोयल रानी गाती सुंदर और है निराली.
कोयल रानी, कोयल रानी
बहुत सुंदर और प्यारी.

*****

चल विद्यालय

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

पढ़ने लिखने पाने ज्ञान,
चल विद्यालय पाने मान.

पढ़ लिख कर करना तुम राज,
मौज उड़ाना पाना शान.

भोजन भी अब मिलता रोज
चल विद्यालय खुशियाँ तान.

पिकनिक मस्ती होगी मौज,
चल विद्यालय बन विद्वान.

नई ड्रेस पाकर भैया,
चल विद्यालय बनो सयान.

*****

कैसे घटे मुटापा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

दौड़ने जा रहे हो,
सेहत बना रहे हो.

उठ के बड़े सवेरे,
व्यायाम कर रहे हो.

सब खाते हैं हलवा,
तुम चने खा रहे हो.

कैसे घटे मोटापा?
पुस्तक पढ़े जा रहे हो.

सेहत की खातिर अब तुम,
मेहनत किए जा रहे हो.

देख बदलती काया,
खुश होते जा रहे हो.

*****

जंगल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

छोटा सा खरगोश,
रहे नहीं खामोश.
वन में वह दौड़ता,
मन में भरकर जोश.

काला-काला भालू,
सब कहते हैं कालू.
पेड़ पर चढ़कर करे,
नए कमाल वह चालू.

*****

मोनू की दूकान

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

मोनू हाथी ने खोली,
जंगल में एक दूकान,

उस दूकान में रखा था,
खाने का सभी सामान.

बन्दर ने बिस्कुट खाया,
हिरणी को माज़ा भाया,

खरगोश ने कुतरा केक,
चीता ने पीजा खाया.

चली दुकान हुआ कमाल,
हुआ मोनू मालामाल.

*****

जीवन के सरगम

रचनाकार- ज्योत्सना कुशवाहा, सूरजपुर

मैंने खिलती हुई कली से पूछा- क्या गा सकती हो गाना?
या यूं ही खिलना सीखा खिलकर मुरझा जाना?

कहा कली ने-खिलना भी क्या गीत से कम है,
खिलाना और बिखरना ही जीवन का सरगम है.

मैंने फूल से पूछा- कैसे हँसते खिलते फल बन जाते,
इसके बाद न मिलते हँसकर.

कहा फूल नें- हँस-हँस कर हम हँसी लुटाएँ ,
हमने तो इतना सीखा है हँसते-हँसते फल बन जाएं.

बहती हुई हवा से पूछा-बड़ी तेज रफ्तार तुम्हारी
रात-दिन चलती रहती हो कभी न थक कर हिम्मत हारी.

बोली हवा-जीवन है चलने का नाम,
सारे जग को खुशबू देती मुझको है आराम हराम.

मैंने सागर की सीपी से पूछा- रहती हो सागर में छिपकर,
कैसे मोती पा जाती हो जरा बताओगी कुछ इसपर?

बोली शीपी-सहकर थपेडे नापी सागर की गहराई,
लहरों के संग उछली कूदी, तब जाकर यह मोती पाई

*****

त्यौहार

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे, बेमेतरा

ये व्रत त्यौहार है न
जो जोड़ती है हमें
इतिहास से,अतीत से,
परम्पराओ से अपनी संस्कृति से
ये रीतियां यूँ ही नही बनी है
हर मौसम में
भारतवर्ष में
उत्सव ,त्यौहार
मनाए जाते है
खुशी के गीत गाये जाते है
देवी,देवता,पीतर
वृक्ष,नदी,हवाओ को
सभी को पूजा जाता है
बढ़ती है प्रीति
जीवांत हो उठती है रीति

प्रेम,सोहदर्य बढ़ता जाता है
इन त्योहारों से अपना इतना गहरा नाता है
रोपा लगाने का
नई फ़सल के आने का,
फसलों के कट जाने का
मौसम परिवर्तन का ,
सूर्य के दक्षिणायन का
पूनम के चाँद करवाचौथ का
विभिन्न धर्म
राष्ट्रीय पर्व का
बेहद खूबसूरती से मनाते
हर जन है
आपस मे जोड़ती सभी को
प्रेम की लड़ियों सी गूँथती सभी को
उल्लास,उत्सव से भरी
खुशियों के पल से सजी
हमे प्रिय है ये त्यौहार

*****

जूनून-कुछ कर गुजरने का

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे, बेमेतरा

हौसला बुलन्द और
इरादे मजबूत हो
तो नदियां भी क्या
समुन्दर भी राह देती है.

खुद पे भरोसा और
बाजूओं में दम हो
तो मिलता है मौका
तकदीर साथ देती है.

हारकर जो मायूसी में
चूर हो गया
मिलेगी कैसे सफलता
जो मेहनत से दूर हो.

आगे वही बढ़ता है
गिरने से जो ना डरता है
जी जान से जो जुटता है
मंजिल उसी को मिलती है.

ईमानदारी का साथ
खुदा का आशीष हो
जीत उसी की होती है
जिसमे लक्ष्य का लगन हो.

*****

जिंदगी कहती है

रचनाकार- शालिनीपंकज दुबे, बेमेतरा

मैं सुख हूँ,ऐश्वर्य हूँ
तू मुझमे आसक्त हो
तुझे खुशियां इतना दूँ
तू मेरा ही भक्त हो.

मन तो है चंचल और
ये जीवन पल छीन
सब से विरक्त हो
पा जाऊँ साहिल.

ये आत्मा है तेरा
और परमात्मा तू मेरा
फिर क्यों है ये फासले
जींवन और मरण ही.

लाख लुभावना हो जगत
पर प्रीति तेरे चरणों से

अब मोहमाया में ना उलझूँ
चाहे जीवन या मरण हो.

प्रभु मेरे तू जग का पालनहार है
इस सृष्टी का रचनाकार है
कण कण में तू ही बसा हुआ
हमे हर पल ये स्मरण हो.

अब जीवन की नैया पार लगादे
सत्य का ज्ञान हमे करादे
भटके हुए पथिक हम
शांति की राह दिखा दे.

*****

लक्ष्य की ओर

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

दौड़ सकता है तो दौड़, भाग सकता है तो भाग.
मंजिल पाने के लिए, अंतर्मन में लगी है आग.

ठण्डे खून के उबलने तक या खून सूखने तक.
पागलपन की जुनून तक या मुर्दा बनने तक.

जब तक मंजिल ना मिले, राहों में तुम रुकना नहीं.
चुनौतियों के सामना करना, स्वयं कभी टूटना नहीं.

जीवन की सांसें फूलने तक या सांसें रुकने तक.
कंकाल के राख उड़ने तक या चमड़े गलने तक.

कुछ विरोधी और बुरे लोग, तुम्हें पथ से भटकायेंगे.
खूब हंसी उड़ेगी गलियों में, जन भ्रमजाल फैलायेंगे.

मिट्टी में दफन होने तक या सब कुछ खत्म होने तक.
आत्मा की शुद्धि होने तक या परमात्मा दिखने तक.

डटे रहना मैदान में वीर योद्धा, शत्रुओं को करने ढेर.
धीरज रखना साहस भरकर, जीत में भले होगी देर.

हार के काली रात के बाद, आयेगी सफलता भोर.
दृढ़ आत्मविश्वास से बढ़ा, कदम लक्ष्य की ओर.

*****

स्वाभिमान है तेरा असली गहना

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान

लिखना सिखा,
पढ़ना सिखा,
सबसे आगे बढ़ना सीखा,
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?

सहना सीखा,
लड़ना सीखा,
दर्द में भी मुस्कुराना सिखा,
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?

जिम्मेदारियां सीखी,
हिस्सेदारीयां सीखी,
गिरते हुए उठना सिखा,

स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?

श्रृंगार सीखा,
बेहतरीन व्यवहार सीखा,
बरसों से देखे सपने तोड़ने सीखें,
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?
स्वाभिमान बचाना क्यों नहीं सीखा?

स्वाभिमान है तेरा असली गहना,
लोगों की बातों में क्यों तुझे बहना,
बन जा निडर, नहीं अब सहना,
स्वाभिमान बचाना तुझे सीखना,
स्वाभिमान बचाना तुझे सीखना

*****

जब जब सावन आता है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

जब-जब सावन आता है.
बादल घिर-घिर जाता है.
बिजली तेज चमकती है.
रिमझिम बूंद बरसती है.
मेघ ढोलक बजाता है.
मोर मगन हो जाता है.
मेंढक भी गीत गाते हैं.
झींगुर सरगम सुनाते हैं.
संगीत मय रात होती है.
सावन की बरसात होती है

*****

वज़ूद चाहता हूँ

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

न मैं मूल,न सूद चाहता हूँ,
मैं वजूद व स्थान चाहता हूँ.
पूरे मेरे भी अरमान हो,
मैं भी पतंग सा उड़ूं,
मैं अब आसमान चाहता हूँ.
मैं वजूद व स्थान चाहता हूँ.
मुझे भी खाद पानी मिले,
फूलों जैसा मैं भी
हमेशा मुस्कान चाहता हूँ.
मैं वजूद व स्थान चाहता हूँ.
चमकते तारों को मैं भी ,
आने हाथ से छूने के लिए
कंधा रूपी सोपान चाहता हूँ.
बस वजूद व ध्यान चाहता हूँ.

*****

समय

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

समय न ठहरा है कभी,रुके न इसके पाँव.
संग समय के जो चले, पहुंचे अपने गाँव.

जब हम समय बर्बाद करते हैं, तो हम अवसरों से भी चूक जाते हैं. समय किसी का इंतजार नहीं करता और एक बार चला गया तो हमेशा के लिए चला गया. एक और तरीका है जिससे हम समय बर्बाद करते हैं वह है सोशल मीडिया पर घंटों बिताना या टीवी देखना. जबकि ये गतिविधियाँ सुखद और मनोरंजक हो सकती हैं, वे हमारे जीवन में कोई वास्तविक मूल्य नहीं लाती हैं. इसके बजाय, वे हमें और अधिक महत्वपूर्ण चीजों से विचलित करते हैं जैसे प्रियजनों के साथ समय बिताना, हमारे लक्ष्यों का पीछा करना, या नए कौशल सीखना.

समय हमारे पास सबसे मूल्यवान संसाधन है, और एक बार चले जाने के बाद हम इसे कभी वापस नहीं पा सकते हैं. दुर्भाग्य से, हम में से बहुत से लोग इसे हल्के में लेते हैं और इसे व्यर्थ की गतिविधियों में बर्बाद कर देते हैं. जब हम समय को मारते हैं, तो असल में हम अपने जीवन के एक हिस्से को मार रहे होते हैं. कवि डॉ सत्यवान सौरभ कहते है कि-

पल कोई ठहरा नहीं, यही समय दस्तूर.
हो जायेंगे एक दिन, हम भी सब से दूर.

समय एक सीमित संसाधन है, और हम सभी के पास हर दिन इसकी समान मात्रा होती है. जिस तरह से हम इसका उपयोग करते हैं वह हमारी सफलता, खुशी और जीवन के साथ समग्र संतुष्टि को निर्धारित

करता है. समय कीमती है और हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए. दुर्भाग्य से, हममें से बहुत से लोग ऐसी गतिविधियों पर समय बर्बाद करते हैं जो हमारे जीवन में कोई मूल्य नहीं लाती हैं.

हमारी तेज़-तर्रार दुनिया में, चूहे की दौड़ में फंस जाना और जो वास्तव में महत्वपूर्ण है उसे भूल जाना आसान है. हम अक्सर खुद को यह इच्छा करते हुए पाते हैं कि हमारे पास उन चीजों को करने के लिए अधिक समय है जो हम प्यार करते हैं, या समय सीमा और नियुक्तियों पर जोर देते हैं. लेकिन क्या होगा अगर हम एक कदम पीछे हटें और समय के मूल्य को देखें?

ज़रूर, हम सभी सहमत हो सकते हैं कि समय पैसा है. लेकिन असल में उसका क्या अर्थ है? जब हम इसे तोड़ते हैं, तो समय वास्तव में हमारे पास मौजूद सबसे मूल्यवान वस्तुओं में से एक है. यह एक सीमित संसाधन है जिसे एक बार जाने के बाद हम कभी वापस नहीं पा सकते हैं. इसलिए हर पल का सदुपयोग करना इतना महत्वपूर्ण है. हर दिन अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और प्रियजनों के साथ स्थायी यादें बनाने का एक नया अवसर है.

समय बर्बाद करने के सबसे आम तरीकों में से एक है टालमटोल करना. ये बर्बादी किसी काम को करने में देरी या स्थगित करने की क्रिया है. हम अक्सर महत्वपूर्ण कार्यों को अंतिम समय तक टाल देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप तनाव और चिंता होती है. व्यर्थ जाया न केवल समय बर्बाद करता है, बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य और उत्पादकता को भी प्रभावित करता है.

एक और तरीका है जिससे हम समय बर्बाद करते हैं वह है सोशल मीडिया पर घंटों बिताना या टीवी देखना. जबकि ये गतिविधियाँ सुखद और मनोरंजक हो सकती हैं, वे हमारे जीवन में कोई वास्तविक मूल्य नहीं लाती हैं. इसके बजाय, वे हमें और अधिक महत्वपूर्ण चीजों से विचलित करते हैं जैसे प्रियजनों के साथ समय बिताना, हमारे लक्ष्यों का पीछा करना, या नए कौशल सीखना.

जब हम समय बर्बाद करते हैं, तो हम अवसरों से भी चूक जाते हैं. समय किसी का इंतजार नहीं करता और एक बार चला गया तो हमेशा के लिए चला गया. प्रत्येक क्षण जब हम कोई अनुत्पादक कार्य करने में व्यतीत करते हैं, वह एक ऐसा क्षण होता है जिसका उपयोग हम अपने लक्ष्यों की दिशा में प्रगति करने या किसी तरह से अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कर सकते थे. चाहे वह एक नया कौशल सीखना हो, एक शौक का पीछा करना हो, या प्रियजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना हो, हमेशा कुछ अधिक मूल्यवान होता है जो हम अपने समय के साथ कर सकते हैं.

इसके अलावा, समय बर्बाद करने से हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं. जब हम सोशल मीडिया पर या टीवी देखने में बहुत अधिक समय बिताते हैं, तो हम गतिहीन और निष्क्रिय हो जाते हैं. इससे वजन बढ़ना, खराब मुद्रा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं. इसके अतिरिक्त, अनुत्पादक गतिविधियों पर बहुत अधिक समय व्यतीत करने से अपराध बोध, खेद और कम आत्मसम्मान की भावनाएँ भी पैदा हो सकती हैं.

दूसरी ओर, जब हम अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करते हैं, तो हम आश्चर्यजनक चीजें हासिल कर सकते हैं. समय एक ऐसा संसाधन है जिसकी जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए आवश्यकता होती है, और अगर हम इसका बुद्धिमानी से उपयोग करते हैं, तो हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और जीवन को पूरा कर सकते हैं. स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करके, अपने समय को प्राथमिकता देकर, और उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करके जो हमारे जीवन में मूल्य लाती हैं, हम अपने समय का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं और अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकते हैं. डॉ सत्यवान सौरभ ने सही कहा है कि-

समय न ठहरा है कभी,रुके न इसके पाँव.
संग समय के जो चले, पहुंचे अपने गाँव.

समय एक अनमोल संसाधन है जिसे हमें कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए. जब हम समय को मारते हैं, तो असल में हम अपने जीवन के एक हिस्से को मार रहे होते हैं. अनुत्पादक गतिविधियों पर समय बर्बाद करना न केवल हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से रोकता है बल्कि हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है. अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करके और उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करके जो हमारे जीवन में मूल्य लाती हैं, हम अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकते हैं और जीवन को पूरा कर सकते हैं. याद रखें, समय एक सीमित संसाधन है, और यह हम पर निर्भर है कि हम इसका अधिकतम लाभ उठाएं.

यदि हम प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करने में सक्षम हैं, तो हम चुनौतियों का सामना करने और अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बेहतर रूप से सुसज्जित होंगे. अपने समय का प्रबंधन करना, प्राथमिकताओं को निर्धारित करना और आत्म-अनुशासन की खेती करना सीखकर, हम उन मामलों में अधिक उत्पादक बन सकते हैं जो सबसे अधिक मायने रखते हैं और प्रत्येक दिन का अधिकतम लाभ उठाते हैं. इसलिए प्रत्येक क्षण को जानबूझकर जब्त करें; आप कभी नहीं जानते कि यह आपका आखिरी समय कब हो सकता है, डॉ सत्यवान सौरभ कि इन पंक्तियों से जीवन में कुछ नया करने की ओर अग्रसर हो-

अंत समय में भी कभी, नहीं मानना हार.
घिसकर मेहँदी-सा सदा, आता अंत निखार.

*****

खरगोश और कछुआ की दोस्ती

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चाम्पा

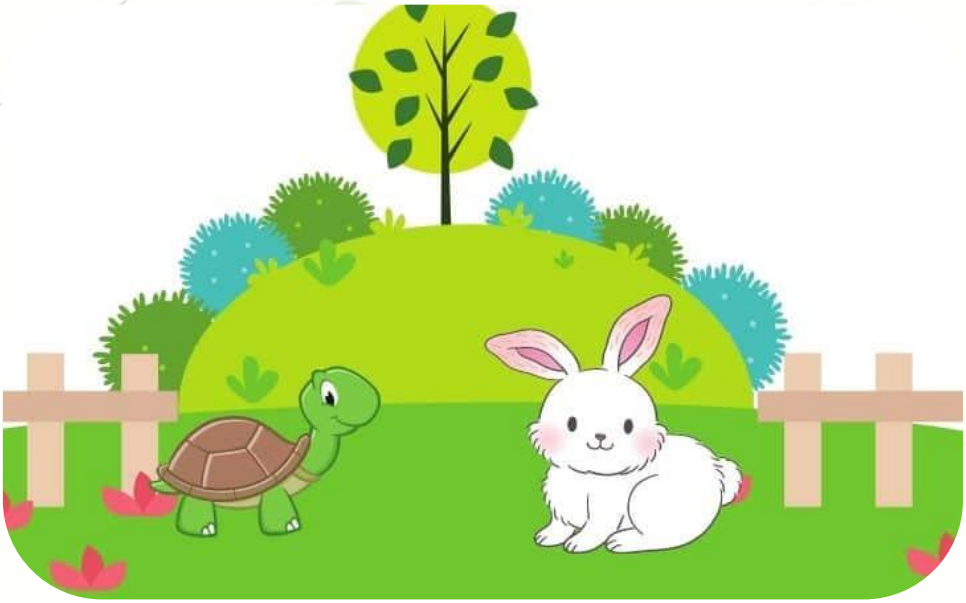

एक बार एक खरगोश नदी के किनारे एक झाडी में अंगूर खा रहा था. अचानक उसका पैर फिसल गया और वह नदी के पानी में गिर गया. वह नदी के पानी में बहने लगा. खरगोश घबरा गया और बचाओ बचाओ चिल्लाने लगा.

उसी समय एक कछुआ नदी में तैर रहा था. उसने किसी को चिल्लाते हुए सुना. कछुआ इधर उधर देखा अचानक उसकी नजर खरगोश पर पड़ी ,खरगोश पानी में बह रहा था वह डूबने ही वाला था. कछुआ तेजी से खरगोश के पास तैरकर पहुंच गया और बोला - घबराओ मत! मेरी पीठ पर बैठ जाओ. खरगोश जल्दी से उसकी पीठ पर बैठ गया. कछुआ ने उसे किनारे पर पहुँचा दिया. इस तरह खरगोश की जान बच गई.

खरगोश अब रोज कछुआ को अंगूर देता और कछुआ उसे अपनी पीठ पर बैठाकर नदी की सैर कराता. दोनो अब दोस्त बन गये.

*****

स्तुति वंदन तेरा मैं गाऊँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

स्तुति वंदन तेरी मैं गाऊँ,
भक्ति साधना तेरी कर पाऊँ.
दे दो आशीष हे माँ भगवती,
जीवन धन्य मेरा कर पाऊँ.
स्तुति वंदन तेरी मैं गाऊँ..

मैं अज्ञानी, मैं खलकामी,
मैं अभिमानी, मैं हूँ अधर्मी.
ज्ञान की ज्योति तू ही जलादे,
दया धर्म की सद राह दिखादे.
तेरे पद चिन्हों मैं चल पाऊँ,
स्तुति वंदन तेरी मैं गाऊँ.

मोह माया में मैं अटका हूँ,
भवसागर में मैं भटका हूँ.
वेद पुराण का पाठ पढ़ा दे,
ऋचाओं का भी ज्ञान करा दे.
सदमार्ग पर मैं भी चल पाऊँ,
अंतर्मन की मैं ज्योति जलाऊँ.
स्तुति वंदन तेरी मैं गाऊँ..

मैं हूँ अकिंचन, मैं हूँ अज्ञानी,
तू ज्ञानी है और वीणापाणि.
तुझको ध्याए ऋषिगण ज्ञानी,
तेरी महिमा किसी ने न जानी.
तन-मन से मैं तुझको ध्याऊँ,
तुझसे ही पावन मैं वर पाऊँ.
स्तुति वंदन तेरी मैं गाऊँ.

*****

चलो करें पढ़ाई अब

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

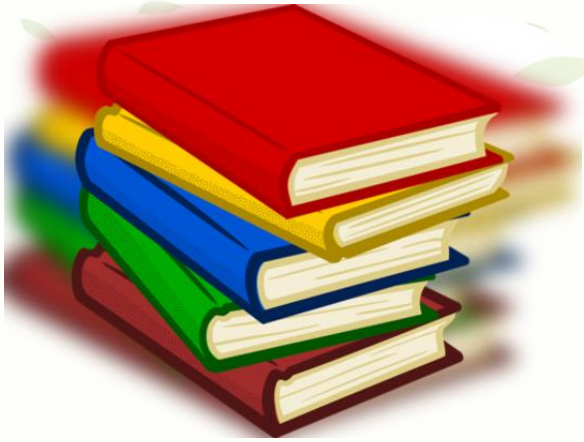

चलो करें पढ़ाई अब तो
परीक्षा हमारी आई है
घूमना अब तो बंद करें
समय सारिणी आई है.

ध्यान लगाके करें पढ़ाई
फैसले की बारी आई है
चुनौती अब स्वीकार करो
लड़ने की बारी आई है.

न डरेंगे हम, न हटेंगे हम
डटकर मुकाबला करेंगे
चाहे जैसा भी प्रश्न आए
उत्तर लिखकर ही मानेंगे.

*****

धरती माँ के सेवा करईया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

धरती माँ के सेवा करइया
मैं रतन बेटा नगरिया आँव
तोर कोरा हे पावन भुईयाँ
जेखर मैं ह कमिया आँव.

जांगर टोरत मिहनत करईया
बंजर ल उपजाऊ बनईया
खून पसीना ल एक करईया
धरती म मैं सोन उगईया.

मैं धरती माँ के दुलरवा आँव
मैं बेटा तोर मनमोहना आँव
मैं सुग्घर तोरेच सोहना आँव
मैं बलदाऊ तोरे क्रिसना आँव.

जनम -जनम के ते लाग मानी
दया-मया के तही सँगवारी
तोर ले हावै मोर पूछ पूछारी
तोर महिमा हावै सबले भारी.

मोर पुरखा परिवार तहीं हर
जनम-मरण के दुवार तहीं हर
जिनगी के आधार तहीं हर
सब के पालनहार तहीं हर.

मैं दाई तोरेच रिनिदार आँव
मैं दाई तोरेच सेवादार आँव
मैं दाई तोरेच आधार आंव
मैं दाई तोर मया-दुलार आँव.

*****

महिला दिवस

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

नारियों का सम्मान ही महिला दिवस

महिला दिवस का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण होना चाहिए;-

"नारी तुम शक्ति स्वरूपा हो
नारी तुम श्रद्धा समर्पण हो,
नारी तुम आस विश्वास हो
नारी तुम सृष्टि का विकास हो."

ऐसे महान नारी शक्ति को नमन है,जिनके मात्र उपस्थिति से शक्ति,सामर्थ्य,और समृद्धि की वृद्धि हो जाती है.इसीलिए इनको शक्ति स्वरूपा कहा जाता है.मानव जाति के लिए नारी ही एक ऐसा आधार है,जो मानव को सामर्थ्यवान बनाती है,मानव का प्रेरणाश्रोत बनती है.मानव का मार्गदर्शक बनती है.यह भी कहा जाना अतिश्योक्ति नही होगी की-

"एक नारी सभी पर भारी,
नारी के बिना जग अंधियारी.
नारी है तो जग उजियारी
नारी से ही उपजी सृष्टि सारी."

"नारियों के सम्बन्ध में यह कहा जाता है की जहाँ नारियों की प्रतिष्ठा होती हैं,सम्मान होता है,जहाँ नारियाँ पूजी जाती है,वहीं देवताओं का वास होता है."

अक्षरशः सत्य बात है,बिना नारियों के सम्मान के,नारियों के प्रतिष्ठा के, घर नहीं बनता, परिवार,मानव समाज में सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती.मानव समाज को जोड़ने,मानव समाज को समृद्ध और संस्कारवान बनाने का यदि किसी ने सार्थक काम किया है तो वह है नारी शक्ति.

नारी को शक्ति स्वरूपा कहा गया है,तो इनको यूँ नहीं कहा गया है.इनके पास शक्ति के साथ क्षमा भी है.पीड़ा के साथ धैर्यता भी है.सर्जक के साथ संहारक भी हैं.माता के साथ सम्पूर्ण नाता भी है.तभी तो कहा गया है-

"नारी तुम मात्र,जग में महान हो
सृष्टि के विकास की,पहचान हो.
तुम ही आदि-अंत की,विधान हो
तुम ही ईश्वर की बड़ी,वरदान हो.

उपरोक्त शक्तियों के श्रोत माता शक्ति के बारे मे जितना भी कहा जाए कम है.यदि हम कोई विशेष बात करें तो वह है नारी सम्मान की, नारी अस्मिता की, नारी सशक्तिकरण की, नारी के अधिकार की.और इस पर मानव समाज को शासन, प्रशासन को, विशेष पहल करने की आवश्यकता है.और इन सब बातों पर जब विशेष पहल होगी तो निश्चित ही नारी जाति का सम्मान होगा.हमारा समाज भी गौरवान्वित होगा.हम आए दिन नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं,मात्र बात करने से कुछ नही होगा,उस पर हमे जमीनी स्तर पर काम करना होगा.उनके अधिकार के लिए हमे आगे आना होगा.हमे उनके लिए समर्पित होना होगा. इसी आशा विश्वास और अपेक्षा के साथ दे नमन है- नारी से सारा जहान है"

नारी ही जग मे महान है,
तू ही शक्ति की खान है
तू ही ऊर्जा,क्षमतावान है."

*****

गुनगुन करता भौंरा आया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

गुनगुन करता भौंरा आया
फुल कलियों को है रिझाया.

चूँ-चूँ करती चिड़िया आईं
सुबह का संदेशा ले के आईं.

रंग-बिरंगी तितली रानी आई
झूम-झूम कर वह नाच दिखाई.

फुल-बगीचों मे है मुस्काया
सबके मन में वह प्रीत जगाया.

प्यारी कलियाँ भी मुस्कायी
सुंदर रूप अपना है दिखलायी.

सर-सर करती हवा भी आई
शीतलता का अहसास कराई.

आसमान पर लालीमा छाई
रवि ने किरण को धरा में फैलाई.

*****

बाप एक खजाना होता है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

बाप न हो तो जग वीराना होता है.
बाप बच्चों के लिए खजाना होता है.
बाप के रहते बच्चों में शान होता है.
उसके पास खेल का सामान होता है.
बाप बच्चों के लिए आसमान होता है.
जहां बच्चा पतंग सा गतिमान होता है.
घर गुलशन है, तो बाप माली है.
जिसके रहते फूलों में खुशहाली है.
बाप के रहते आंखों में सपने होते हैं,
जाने अनजाने सब अपने होते हैं.
उनके रहते हर पल सुहाने होते हैं.
हमारे जुबान पर तराने होते हैं.
उनके बिना जग वीराना होता है.
बाप बच्चों के लिए खजाना होता है.

*****

कहानियों का संसार

रचनाकार- गुलज़ार बरेठ, जांजगीर चांपा

आओ दिखाऊँ तुमको
कहानियों का संसार,
कल्पनाओ के पंख
उसमे मिलेंगे हजार.

आओ मनाये उसमे, राखी
होली, दिवाली का त्यौहार,
परियों और राजा-रानी से
तुम भी करलो प्यार.

हाथी,घोड़ा,सांप,भालू
और शेर है सरकार,
सब्जियाँ है,फल-फूल है
और रंगो का बाजार.

मोर, पपीहा,कोयल, तोता,
का है अनोखा संसार.
उतर के देख इसमें,
खुशियाँ मिलेगी अपार.

बापू ,भगत, लक्ष्मी, आजाद
मिलेंगे सरदार,
आओ पढ़े जाने कथाए,
यशगान करोगे तुम उनका बारम्बार.

*****

शिक्षा जीवन का आधार

रचनाकार-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

पढ़ें - पढ़ाएँ , ज्ञान बढ़ाएँ
शिक्षा जीवन का आधार.
आँखों में पलते सपनों को
शिक्षा करती है साकार.

व्यक्ति. समाज, देश हो विकसित,
आवश्यक है होना शिक्षित,
अँधियारे में जगमग लौ - सी
शिक्षा फैलाती उजियार.

पढ़ना-लिखना, जोड़ - घटाना
सिखलाता है कष्ट मिटाना,
बहु उपयोगी विद्या - धन है
शिक्षा है अमूल्य उपहार.

रोटी, कपड़ा, घर जैसी निधि,
पा जाने की बतलाती विधि,
रचती है उज्ज्वल भविष्य को
शिक्षा देती सुसंस्कार.

निज भाषा में करें पढ़ाई,
पाएँगे यश, मान, बड़ाई,
बन जाएँगे सभ्य नागरिक
शिक्षा है मौलिक अधिकार.
शिक्षा जीवन का आधार.

*****

घाम पियास के दिन आगे

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, धमतरी

लकलक लकलक घाम करत हे,
घाम पियास म मनखे मरत हे.

काटें काबर रुख राई ल संगी,
ताते तात आज हवा चलत हे.

बर पिपर के छईयां नंदागे,
बिन छईयां के चिरई भगागे.

आगी अंगरा कस भुइयां लागे,
भोंभरा जरई म गोड़ भुंजागे.

जंगल झाड़ी रुख राई कटागे,
तरिया डबरी के पानी अटागे.

घाम पियास ले सबला बचइया,
हरियर धरती घाम म सुखागे.

*****

मेरे स्कूल मैं बादाम का पेड़

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया रायपुर

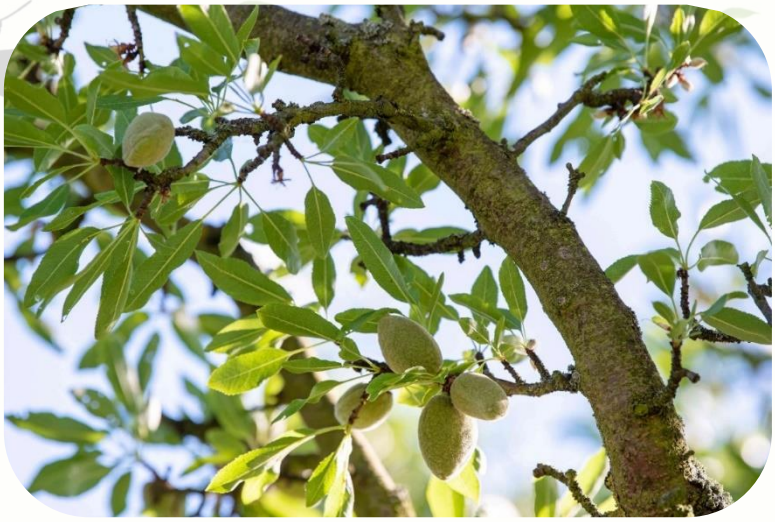

आसमानिया बादल जब भी,
हरियाली की फेरी लगायेंगे.

बादाम के पत्तों के बीच तब,
माणिक उजागर हो ही जाएंगे.

मौसम हो जायेगा खजांची,
जब हवायें पत्तों की आमद लायेगें.

*****

समुद्र पार पोपाय ने ब्लुटो को हराया

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

ब्लुटो पहले से ही पोपाय का दुश्मन था. वह पोपाय को हराने के लिए तरह-तरह के षड्यंत्र करता रहता था. एक बार हुआ यह कि ब्लुटो को खूब सारा धन और काफी मिलकत मिल गई. उसके हाथ कोई खजाना लग गया था. इसलिए वह उस खजाने को लेकर समुद्र पार आराम से रहने लगा. पर यहां भी उसे पोपाय की याद आती रहती. ब्लुटो ने मिले धन से समुद्र पार आलीशान महल बनवाया था. उसने ड्रैगन, शेर, बाघ, गरूड़ जैसे विशाल जानवर और पक्षी पाल रखे थे, जो उसकी रक्षा कर सकें. अब वह खुश था कि पोपाय वहां आएगा तो उसका बाल भी बांका नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसके पास इतने शक्तिशाली जानवर और पक्षी हैं.

उसने खास कर पोपाय को अपना महल दिखाने के लिए बुलाया. दूसरी ओर पोपाय के साथ ओलिव को भी बुलाया था. उसने पोपाय से कहा था कि उसने अब तक जो गलतियां की हैं, उन्हें माफ कर दे और उसका महल देखने आए. इसके लिए वह उसका आभारी रहेगा. पोपाय ओलिव के साथ बोट लेकर ब्लुटो का महल देखने चल पड़ा. ब्लुटो उन्हीं के इंतजार में बैठा था. वह दूरबीन लेकर देख रहा था. थोड़ी देर बाद उसने दूरबीन से देखा कि पोपाय और ओलिव बोट से आ रहे हैं.

ब्लूटो ने अपने गरुड़ को दूर समुद्र में आने वाली बोट को दिखा कर कहा कि उसे उसमें बैठे ओलिव को उठा कर लाना है और पोपाय को बोट सहित समुद्र में डुबो देना है. इसके लिए उसे उसकी बोट में अपनी बड़ी सी चोंच से हमला करना है. ब्लुटो की आज्ञा मिलते ही गरुड़ उड़ा और क्षण भर में पोपाय की बोट के पास पहुंच गया. पोपाय ने इसके पहले इतना विशाल गरुड़ कभी नहीं देखा था. गरुड़ को देख कर वह खुश हो गया. उसे लगा कि ब्लुटो ने उसके स्वागत के लिए गरुड़ को भेजा है. पर हुआ

इसका उल्टा. गरुड़ ने उसकी बोट में अपनी नुकीली चोंच मारी और ओलिव को लेकर चला गया. यह देख कर पोपाय स्तब्ध रह गया. ओलिव 'बचाओ... बचाओ...' चिल्लाती रही. पोपाय ने शक्तिशाली बनने के लिए अपना स्पीनच का डिब्बा भरा बैग निकालना चाहा तो बोट के पानी में डूबने की वजह से बैग पानी में डूब गया था.

अपना बैग लेने के लिए पोपाय समुद्र में कूद पड़ा. तैरते हुए आखिर उसने अपना बैग खोज ही लिया. उसमें से स्पीनच का एक डिब्बा निकाल कर पूरा स्पीनच खा गया. वह बोट की अपेक्षा दोगुनी स्पीड से तैर कर ब्लुटो के महल पहुंच गया. लेकिन ओलिव को लेने के लिए वह ब्लुटो के महल के अंदर आसानी से नहीं जा सकता था. क्योंकि रास्ते में ड्रैगन जैसे अनेक महाकाय प्राणी थे. पोपाय स्पीनच का एक-एक डिब्बा निकाल कर खाता गया और फाइट कर के महाकाय प्राणियों को हरा कर आगे बढ़ता गया. आखिर सभी को हराकर वह महल के अंदर पहुंच ही गया. उसे महल के अंदर देख कर ब्लुटो स्तब्ध रह गया. उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसके पाले महाकाय प्राणियों को भी पोपाय हरा देगा.

पोपाय चिल्लाया, "दगाबाज ब्लुटो, तुम्हारी बात मान कर मैं तुम्हारा मेहमान बना और तू ने हमारे साथ इस तरह की गद्दारी की? आज मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं. तेरे खूंखार जानवर मूझे नहीं हरा सके तो तू मुझे क्या हराएगा. दोस्त शायद तू भूल गया कि मेरे पास मेरा स्पीनच है. स्पीनच खा कर मैं दस तो क्या दस हजार जानवरों को आसानी से हरा सकता हूं. अब तुम अपनी जान की सलामती चाहते हो तो ओलिव को मूझे दे दो."

पोपाय को बात सुन कर ब्लुटो डर गया और उसने तुरंत ओलिव को पोपाय के हवाले कर दिया.

*****

निपुण भारत

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

उठव छत्तीसगढ़िया गुरुजी,
नवा बिहनिया आये हे.
निपुण बनाना हे लइकामन ल,
पीरा जम्मो के हटाना हे.

नवाचारी शिक्षण योजना,
शिक्षण-संदर्भिका ले पढ़ाना हे.
समय-सारणी बनाके जम्मों ल,
मिशन ल आगू बढ़ाना हे.

चित्र, चार्ट, कविता, कहिनी ले,
मौखिक गियान बढ़ाना हे.
डिकोडिंग के अभ्यास करा के,
पढ़े म निपुण बनाना हे.

वर्क बुक ल रोज़ बउर के,
हप्ताभर शिक्षण करवाना हे.
मैं सीखा डरेव प्रपत्र ले,
हरेक लइका के आंकलन पाना हे.

दल बनाके लइकामन के,
उपचारात्मक शिक्षण देना हे.
अपन जाँगर अउ लगन ले,
हरेक लइका ल निपुण बनाना हे.

उठव छत्तीसगढ़िया गुरुजी,
नवा बिहनिया आये हे.
निपुण बनाना हे लइकामन ल,
पीरा जम्मो के हटाना.

*****

पुतरी

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

नान्हें नान्हें पुतरी ये मोर,
नखरा अड़बड़ देखथे वो.
बने-बने कपड़ा मांगथे,
खूब आंखी मटकाथे वो.
मैं कइथव सुतजा, त जागथे,
जाग कइथव, त सुतजाथे.

*****

लीम

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

बड़का काम के पेड़ आय लीम,
येखर सही नइ हे कोनो हकीम.
कईठन बीमारी के आय दवाई,
दतवन ले होथे दांत के सफाई.
सुग्घर हरियाली करथे,
बचा के हमला, प्रदूषण हरथे.

*****

चिंटू पिंटू

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

चिंटू, पिंटू रइथे जी दू भाई,
आइस्क्रीम बर होथे उमन लड़ाई.
चिंटू कइथे - मैं खाहूं,
पिंटू कइथे - मैं खाहूं.
गोहार सुनके दाई आथे,
मया के उहला गोठ बताथे.
गंदा गोठ आय झगरा करना,
मिलजुल के हमला हे रहना.

*****

कंप्यूटर

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

देश- बिदेश के सैर कराथे,
इहां घुमाथे, उहां ले जाथे.
भालू, घोड़ा, हाथी लाथे,
खेल हमला अजीब खेलाथे.
किसिम-किसिम के चीज देखाथे,
कइसे करथे कुछु नइ बताथे.
बतावव ये कोन आय मिस्टर?
एला कइथे जी,मोर कंप्यूटर

*****

कितना मोहक भोर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

कितना प्यारा-प्यारा भोर,
स्वर्णिम किरणें हैं चहु ओर.
कलियों में है मधुर मुस्कान,
हवा है, शीतल और गतिमान.
तितली फूलों पर मंडराए,
भौरें उन्हें सुंदर गीत सुनाए,
परिंदे गाने लगे हैं प्रभातगीत,
आनंद चहु ओर हुए प्रतीत,
जड़ चेतन हैं भाव विभोर
मनमोहक है आज का भोर.

*****

मददगार बंदर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

जंगल के सघन पेड़ों पर बहुत से बन्दर रहते थे,और उछल कूद करते रहते थे. उस जंगल में बहुत से हिरण भी थे, जो पेड़ों के नीचे घास चरने रोज आते थे. निरंतर आने के कारण बन्दर और हिरणों में जान-पहचान व दोस्ती हो गई थी.आपस मे काफी घुलमिल गए थे.

हिरणों का पेट जब नीचे के घास से नहीं भरता तो वे ऊपर पेडों के देखने लगते.बंदर समझ जाते और पेड़ों के निचली शाखाओं को झुका देते, और बड़ी आसानी से हिरणों को पेड़ों की कोमल पत्तियां मिल जाती और उनका पेट भर जाता.

इस प्रकार जंगली जीवों में जैसे एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना होती है, वैसे ही हम इंसानों में भी होना चाहिए.

*****

बस्तर दर्शन

रचनाकार- प्रियंका श्रीवास, बस्तर

तीरथगढ़ का झरना,
देखकर मन का भरना.
चित्रकोट की चौड़ाई,
आकर देखें भाई.
कुटुम्बसर की गुफा,
दर्शकों की मन को छुआ.
दंतेश्वरी माता का मंदिर,
जो है बहुत सुंदर,
राजाओं की धरोहर.
जहां है त्रिवेणी संगम,
दृश्य भी विहगम.
मंदिर एक बत्तीसा,
जहां विराजे गणेशा.
मंदिर खंभेवाला,

जो है निराला.
बारसुर में अद्भुत प्रतिभा,
बढ़ती हर साल जिसकी महिमा.
ढोलकर गणेश की दिखाई,
पार करनी पड़े कठिनाई,
बहुत ही ऊपर है चढ़ाई.
सातधार की धाराएं,
मिलकर बिजली बनाएं.

*****

ख़ुशी

रचनाकार- प्रियंका श्रीवास, बस्तर

मामा आए,
खाजा लाए,
मुन्ना खाए,
मौज उड़ाए,
मामी आए,
मिठू लाए,
गाना गाए,
नाच दिखाए,
बड़ा मज़ा आए.

*****

पापा

रचनाकार- प्रियंका श्रीवास, बस्तर

मेरे भोले भाले पापा,
प्यारे न्यारे पापा,
खुद दुख उठाया,
खुशियों से हमको मिलाया,
मेरे भोले भाले पापा,
प्यारे न्यारे पापा.
चलना हमको सिखलाया,
दुनिया हमको दिखलाया.
मेरे भोले भाले पापा,
प्यारे न्यारे पापा.
जो कुछ भी मांगा
वो दिलाया,
मेरे पापा, भोले भाले पापा.

*****

बेटियाँ

रचनाकार- प्रियंका श्रीवास, बस्तर

जादू कि गुड़िया,
दवाई की पुड़िया,
होती है बेटियाँ.
फूलों की कलियाँ,
मिश्री की डलियाँ,
आशा की गलियाँ,
होती है बेटियाँ.
रोशन करता है बेटा,
एक ही घर को,
दो -दो घरों की,
लाज रखती है बेटियाँ.
पापा कि परियाँ,
मां कि दुनिया,
होती है बेटियाँ.

*****

बड़ा योगदान है

रचनाकार- प्रियंका श्रीवास, बस्तर

बड़ा ही योगदान है
स्कूल में तख्ते का
परीक्षा में पर्चे का,
अव्वल दर्जे का,
बड़ा ही योगदान है,

मोबाइल में नेट का,
क्रिकेट में बेट का,
प्रोग्राम में स्टेज़ का,
पिचर में सेट का,
बड़ा ही योगदान है.

आफिस में फ़ाइल का,
मच्छर के लिए क्वाइल का,
सेल्फी के लिए स्माइल का,

बड़ा ही योगदान है.
सिलेंडर में गैस का,
बिजली में फेस का,
जेब में कैस का,
बड़ा ही योगदान है

होटल में बिल का,
सीने में दिल का,
दीवाल पर कील का,
बड़ा ही योगदान है.

रसोई में कढ़ाई का,
बच्चों में पढ़ाई का,
खेल में लड़ाई का,
बड़ा ही योगदान है.

चाय में पत्ती का,
इस्टो में बत्ती का,
सोने में रत्ती का,
बड़ा ही योगदान है.

रसोई में मसाले का,
कप के साथ प्याले का,
मकड़ी के साथ जाले का,
बड़ा ही योगदान है.

खेल में कब्बड्डी का,
खाने में रबड़ी का,
चप्पल में पट्टी का,
बड़ा ही योगदान है.

शरबत में लाइम का,
थाने में क्राइम का,
घड़ी में टाइम का,
बड़ा ही योगदान है.

*****

महीना

रचनाकार- दीपिका श्रीवास्तव, बिल्हा

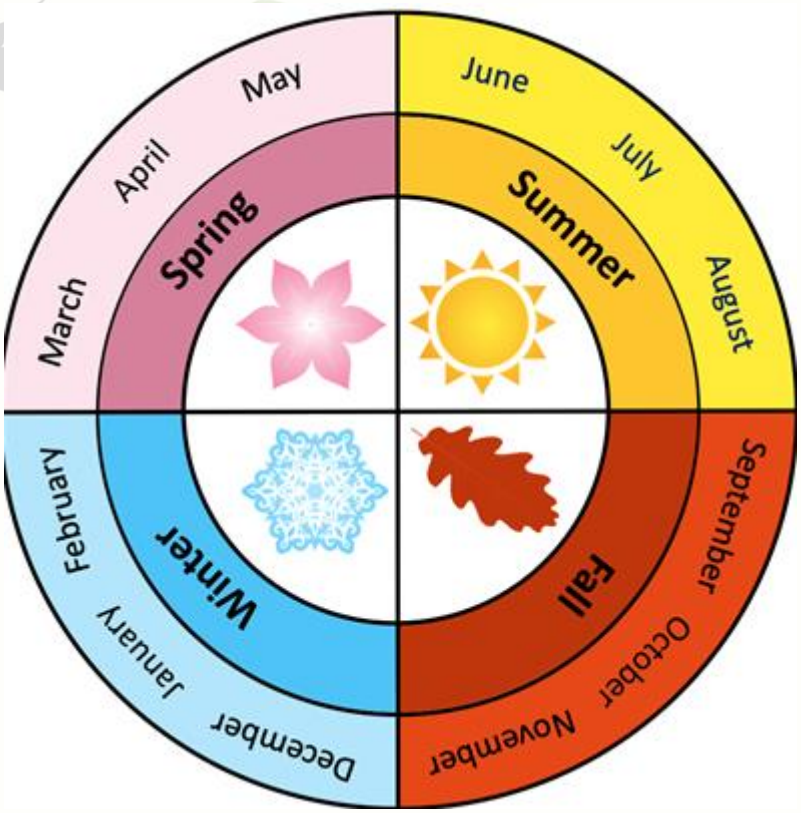

जनवरी फरवरी-मार्च महीना,
अप्रैल-मई में बहा पसीना,
जून-जुलाई मुश्किल है जीना,
अगस्त सितंबर भीगे टीना,
अक्टूबर में कीड़े आते,
नवंबर में सब मर जाते,
लेकर कंबल और रजाई,
दिसंबर में ठंडी आई.

*****

पेड़ और बच्चे की कहानी

रचनाकार- दीपिका श्रीवास्तव, बिल्हा

एक बच्चे को आम का पेड़ बहुत पसंद था जब भी फुर्सत मिलती वह आम के पेड़ के पास पहुंच जाता पेड़ के ऊपर चढ़ता आम खाता खेलता और थक जाने पर उसी की छाया में सो जाता उसे बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक रिश्ता बन गया बच्चे जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद हो गया आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता एक दिन अचानक पेड़ ने उस बच्चे को अपनी तरफ आते देखा और पास आने पर कहा तू कहां चला गया था मैं रोज तुम्हें याद किया करता था चला आज फिर दोनों खेलते हैं बच्चे ने आम के पेड़ से कहा अब मेरी गेम खेलने की उम्र नहीं है पेड़ ने कहा तू मेरे आम लेकर बाजार में बेच दे इससे जो पैसे मिले अपनी फीस भर देना.

उस बच्चे ने उस पेड़ के सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहां चला गया उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दिया आम का पेड़ उसकी राह देखता रहा एक दिन वह फिर आया और कहने लगा अब मुझे नौकरी मिल गई है मेरी शादी हो चुकी है मुझे मेरा अपना घर बनाना है इसके लिए मेरे पास पैसे नहीं है आम के पेड़ ने कहा .

तू मेरी सभी डालियां को काट कर ले जा उससे अपना घर बना ले उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट ली और लेकर चला गया आम के पेड़ के पास अब कुछ नहीं था वह बिल्कुल बंजर हो गया था उसने उसे देखता भी नहीं था पेड़ ने भी अब उम्मीद छोड़ दी कि वह जवान उसके पास फिर आएगा

फिर एक दिन अचानक वहां एक बड़ा आदमी आया उसने आम के पेड़ से कहा शायद आपने मुझे नहीं पहचाना,

मैं वही बालक हूं जो बार-बार आपके पास आता और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर मेरी मदद करते थे आम के पेड़ में दुःख के साथ कहा .

पर बेटा मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं जो मैं तुम्हें देख सकूं वृद्ध ने आंखों में आंसू लिए कहा,

आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूं बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भर के खेलना है .

आपकी गोद में सर रखकर सो जाना है इतना कहकर वह आम के पेड़ से लिपट गया और आम के पेड़ की सूखी हुई डाली फिर उसे अंकुरित हो उठी वह आम का पेड़ कोई और नहीं हमारे माता-पिता हैं दोस्तों जब छोटे थे उनसे खेलना अच्छा लगता था जैसे- जैसे बड़े होते चले गए उनसे दूर होते गए पास भी तब आए जब कोई जरूरत पड़ी हुई समस्या खड़ी हुई आज कई मां-बाप बंजर पेड़ की तरह अपने बच्चों की राह देख रहे हैं जाकर उनसे लिपट उनके गले लग जाए फिर देखना वृद्धावस्था में उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा

*****

बसंत ऋतु

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

कोयल कुक रही है, मानो चिर निद्रा से जगी.
इंगित करती ऋतु बसंत, प्रकृति झूम नाचने लगी.
पिली -पिली सरसो का फूल,आनंदित पल्लवित प्रकृति.
स्वागत सुहावनी मौसम, खोल रही हो अपनी कृति.

नवजीवन धरा पर, हुआ महसूस जन -मन.
देती राहत जीवन मे, सुखमय होता हर तन.
चिर प्रतिक्षा मे मिली, सर्दी की विदाई.
आगत ग्रीष्म हवाओ का, नहीं कोई पथ स्थाई.

कोयल की मीठी तान, फूलों सी खुशबू बही.
नवजीवन को पाती है, हरियाली छायी कही यही.
रोमांच से परिपूर्ण, पल्ल्वीत सुमन का गंध.
करता तरु नव वसन धारण, चली समीर मंद -मंद.

आसमान पर श्याम मेघ, कल -कल करती नदियाँ.
बहती सूर तरंग से, दिखता कमल पुष्प नृत्य परियां.
काया मे नव ऊर्जा, कार्य करें नव साथ.
परिपूर्ण निशा चाँद चांदनी, शांत सुहावन इनके हाथ.

कृषक उत्साह से प्रफुल्लित, पका फसल का मिला दाम.
खत्म हुई प्रतिक्षा, मौर से छाये तरु आम.
है समेट लेते है, दुखों को छिपा सारे.
स्वच्छ निशा आल्हादित, दिखे आसमा पर केवल तारे.

*****

मन को सदा लुभाती तितली

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

जब बागों में आती तितली,
मन को खुश कर जाती तितली.

रंग- बिरंगे पंखों से वह,
मन को सदा लुभाती तितली.

पल- पल जब मुस्काते फूल,
चुपके पंख रंगवाती तितली .

फूलों से क्या- क्या बतियाती,
लगता है प्रेम जताती तितली.

इधर- उधर उड़ जाती तितली,
नहीं पकड़ में आती तितली.

देखो तो खिल जाता है मन,
लगता प्रीत जगाती तितली .

*****

जीना सीखो

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

सुख दुख जीवन के साथी है, इससे ना घबराओ जी.
हिम्मत कर के आगे आओ, जीवन सफल बनाओ जी.

कल क्या होगा किसने देखा, फिर क्यों सोचा करते हो.
सही कर्म की राहे चलते, फिर भी सारे डरते हो.
मुश्किल आती है जीवन में, उससे भी टकराओ जी.
हिम्मत कर के आगे आओ, जीवन सफल बनाओ जी.

मिट्टी की ये देह बनी है, चूर चूर हो जायेगी.
गिनती की साँसे चलती है, हाथ कभी ना आयेगी.
खुश रह के तुम जीना सीखो, खुशियाँ भी फैलाओ जी.
हिम्मत कर के आगे आओ, जीवन सफल बनाओ जी.

भोले बाबा ऊपर बैठे, करते हैं लेखा जोखा.
साथ हमेशा रहते हैं वो, नहीं कभी देते धोखा.
द्वेष कपट को दूर रखो तुम, सबको गले लगाओ जी.
हिम्मत कर के आगे आना, जीवन सफल बनाओ जी.

*****

मेरी गुड़िया

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

मेरी गुड़िया कुछ तो बोल.
आँखें तेरी क्यों गोल गोल.
बाल तुम्हारे लंबे काले.
मेरे तो है छोटे घुँघराले.
मेरी गुड़िया के चिकने गाल.
माथे पर है बिंदी लाल.
फ्रॉक उसकी घेरे वाली.
कानों में पहनी है बाली.
गुड़िया रानी बड़ी सयानी.
आओ सुन लो एक कहानी.
सुन कहानी हम सो जायेंगे.
मीठे सपनों में खो जायेंगे.

*****

आम

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू", दुर्ग

आम, आम नहीं,
बहुत खास है.
इस बात का,
सबको एहसास है.

कोई नहीं ऐसा,
जिसे ये न भाये.
कच्चा हो या पका,
सब इसको खाये.

पेड़ पर देख इसे,
मन ललचा जाए.
बच्चे माने न एक,
पत्थर मार तोड़ लाए.

कच्चा आम नमक संग,
मुँह में पानी लाये.

चटनी, मुरब्बा या अचार,
चाट -चाट कर खाये.

पके आम की बात निराली,
चूस -चूस कर खाते.
जूस बनाकर पी जाते,
आम पापड़ बनाते.

देशी फल है ये मतवाला,
गर्मी में है आता.
फलों का राजा कहलाता,
सबके मन को भाता.

*****

परीक्षा की ऋतु

रचनाकार- प्रीति श्रीवास

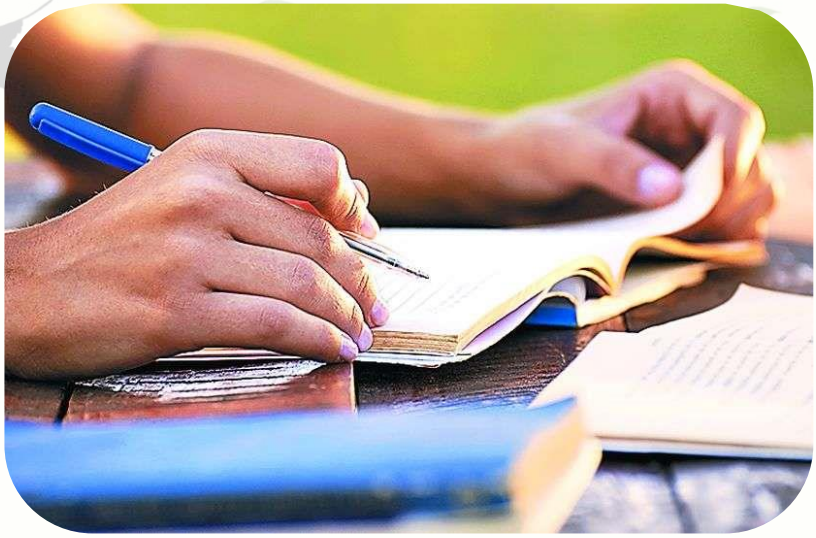

कल सपने मे किताब आई
बोली परीक्षा की ऋतु आई
आँखे खोलो करो पढ़ाई
उठो समय अब न गवाई
हमने थोड़ी ली अंगड़ाई
कहा थोड़ा सो लू भाई
माँ ने तभी आवाज लगाई
उठ बेटा सुबह हो आई
सपना टूटा याद आई
करनी है अभी बहुत पढ़ाई
किताब ने यह सबक सिखाई
पढ़ने मे ही है भलाई
चेहरे पर मुस्कान आई
सच मे परीक्षा की ऋतु आई.

*****

पिता एक उम्मीद एक आस है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

पिता परिवार की अग्रणी आस है
जिंदगी में पिता का ओहदा खास है
परिवार का खास प्यारा बॉस है
पिता एक उम्मीद एक आस है

जिसके पास पिता है
उसकी तकदीर बुलंद है
पिता ज़मीर पिता जागीर है
पिता ईश्वर अल्लाह का ही एक रूप है

पिता जिम्मेदारियों की गाड़ी से
लदा हुआ खास सारथी है
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला
हमदर्द साया और बिछौना है

पिता हमारे सपनों को पूरा
करने वाली हमारी प्यारी जान है
जग में कहने को एक बात है
पिता मां और बच्चों की पहचान है

जो पिता का अपमान करते हैं
वह जीव घोर अन्यायी और पापी है
कंस दैत्य और रावण की कॉपी हैं
परंतु धन्य पिता उनके लबों पर हमेशा माफ़ी है

*****

क्यों करे अपेक्षा?

रचनाकार- डॉ. माधवी बोरसे, राजस्थान

एक धनी धन देगा,
आत्मविश्वासी प्रण लेगा,
जिसके पास जो भरपूर है
उनके पास वो उस शण मिलेगा.

प्रसन्न व्यक्ति खुशी देगा,
निराश व्यक्ति दुखी करेगा,
समझने वाली बात है,
बबूल पर फूल कहां से खिलेगा?

क्यों किसी से अपेक्षा करें,
क्यों किसी से शिकवा करें,
जिसके पास जो है उसने वह दिया,
क्यों ना इस बात को गौर से परखें.

हम हैं सम्मान से भरपूर क्यों ना हम सम्मान दें,
प्रेम और समझदारी बहुत है इस जहान में,

हम हैं संयम से भरपूर, तो क्यों ना समझदारी दिखाएं,
इन बातों को समझ जाए,
क्यों बन रहे नादान है.

घायल के साथ घायल ना हो,
अपितु उनकी चोट को ठीक करो,
क्रोध में कोई मानसिक संतुलन खो बैठे,
उनके घाव को भरने की कोशिश करो.

किसी से कुछ अपेक्षा ना करें,
अपनी झोली शिकायत से ना भरे,
रखें स्वयं के संस्कारों को मजबूत,
दुखियारो से और ना लड़े.

*****

सोनू की चिट्ठी

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

छह साल की नन्ही बच्ची सोनू बगीचे में चुपचाप बैठी थी.उसी समय बंशी काका आकर पीछे से उसकी आँखे बंद कर दिये.बंशी काका बाल निकेतन के रसोइया हैं.वे सोनू को बहुत प्यार करते हैं.

सोनू -"काका आप हो मैं जान गयी."

सोनू-"काका बताओ ना मैं यहाँ कैसे आ गयी.मेरे मम्मी पापा कहाँ हैं.बोलो ना काका."

काका -"बिटिया तुम्हारे मम्मी पापा अब स्टार बन गये हैं.वो ना रोज तुम्हें ऊपर से देखते हैं.तुम हँसती हो तो वो हँसते हैं.तुम रोती हो तो वो रोते हैं.अब बिटिया चलो खाना खा लो."

दूसरे दिन सोनू काका से बोली -"काका मुझे लिफाफा चाहिये."

काका -"क्यों बेटा."

सोनू "-मुझे माँ को चिट्ठी लिखना है."

काका दूसरे दिन लिफाफा लेकर आये. सोनू ने उसमें तीन लाइन लिखी

भगवान जी आप मेरे मम्मी पापा को मेरे पास भेज देना.

रात में मुझे मम्मी से लोरी सुनना है.मुझे अंधेरे में बहुत डर लगता है."

सोनू-"बंशी काका इसे पोस्ट कर देना."

बंशी काका वो चिट्ठी लेटर बाक्स में डाल कर आ गये. वो चिट्ठी पोस्ट आफिस में पहुँच गयी.पोस्ट मेन ऊपर पते में भगवान जी देख कर हड़बड़ा गया.उसने चिट्ठी पोस्ट मास्टर को दिखलायी.

पोस्टमास्टर मयंक बाबू उसे देख हक्के बक्के रह गये.

प्रेषक के पते पर लिखा था- सोनू, बाल निकेतन,बड़ा फव्वारा इंदौर

उन्होंने वह चिट्ठी मिसेज को दिखाई. वह उसे खोल कर पढ़ी.तो उसकी ममता हिलोरे लेने लगी.उसका हृदय करुणा से भर गया. वह नि:संतान थी.मीना ने कहा "कल हम बाल निकेतन जायेंगे.उस बच्ची से संपर्क करेंगे."

दूसरे दिन वे दोनों बाल निकेतन पहुँच गये.गेट पर बंशी काका मिल गये.बंशी काका लिफाफा देख कर सारा माजरा समझ गये.सोनू के माता पिता तीन साल पहले एक दुर्घटना में चल बसे थे.तब से वह यहाँ पर रहती है. उसने सोनू के बारे में सब कुछ बतलाया.

काका ने सोनू को दूर से दिखलाया.गोरी चिट्टी,गोल चेहरा प्यारी सी बच्ची झूला झूल रही थी.

मीना-"चलिये ना.हम अधीक्षिका से मिलते हैं."

अधीक्षिका प्रभा राय से परिचय देने के बाद उन्होंने बच्ची गोद लेने की इच्छा जाहिर की.कुछ दिनों की औपचारिकता पूरी करने के बाद आज मयंक बाबू और मीना सोनू को लेने के लिये बाल निकेतन लेने आये हैं.

बंशी काका से सोनू लिपट गयी.वे दोनों रो रहे थे.काका बोले- "बिटिया जाओ तुम्हें अब मम्मी पापा मिल गये हैं.भगवान ने उन्हें तुम्हारी देखभाल के लिये वापस भेज दिया है.तुम हमेशा खुश रहो."

मीना ने सोनू को गोद में उठा लिया.

मीना -"सोनू बेटा तुम्हारे बर्थ डे में हम सबको घर बुलायेंगे.ठीक है बिटिया.अब घर चलो."

बाल निकेतन के सारे बच्चे उसे हाथ हिलाते हुये विदाई दे रहे थे.आज सोनू को अपना घर मिल गया था.

*****

प्रकृति के समीप जाना तुम

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

सुबह सवेरे प्रकृति के समीप जाना तुम,
देखना पेड़ों पर बैठे पंछी
कितना मधुर संगीत सुनाते हैं.

सुबह का सूरज किसी लुढ़कती गेंद सा,
आसमान में सिंदूरी प्रकाश बिखेरता है.
सबके जीवन में भी आशा की किरणें संचरित करता है.

सुबह सवेरे तुम किसी झरने के समीप जाना,
देखना कल कल बहता हुआ झरना, जीवन
में हमेशा आगे ही आगे बढ़ने का संकेत देता है.

सुबह सवेरे तुम किसी धान के खेत के समीप जाना,
देखना धान की सुनहरी बालियाँ,
हवा के संग झूम झूमकर कैसे इठलाती हैं.

सांध्य बेला में तुम किसी ग्राम की ओर जाना,
देखना अपने घरों की ओर लौट ती गायों के
गले में बँधी घंटियों के जादुई स्वर में,
मीठा संगीत छिपा होता है.

सांध्यबेला में ही तुम किसी सागर तट पर जाना,
देखना सागर की लहरों में भी
संगीत छिपा होता है.

वे इठलाती हुई तट तक आती हैं.
गर्जना करती हुई टकराती हैं और
पीछे की ओर लौट जाती हैं.

सुबह सवेरे तुम प्रकृति के समीप जाना देखना,
प्रकृति का अद्भुत चितेरा हाथों में ब्रश लेकर
नित नये नये रंग भर देता है.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- युक्ति साहू , 7 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

1. मेरे बिना प्रकृति कहाँ,
हरा भरा मैं दिखता
फल ,फूल और शुद्ध हवा,
मैं ही तो देता?

2. सात रंगों का हूँ मैं संगम,
वर्षा ऋतु में मैं आता
इस कोने से उस कोने तक,
गगन की शोभा बढ़ाता?

3. हानिकारक किरणों से,
सूरज के मैं तुम्हें बचाऊँ
कभी तो मैं हो जाता साफ,
कभी मेघों से भरा रहूँ?

4. सर्वत्र हूँ मैं व्याप्त,
पर किसी को दिखता नहीं
मुझे सब करते महसूस,
पर कोई छू सकता नहीं?

5. परदर्शी में दिखता हूँ,
बहता हूँ मैं निरंतर
मेरा पान करके ही,
सब रह पाते हैं जिंदा?

1.वृक्ष, 2. इंद्रधनुष, 3. आसमान, 4. वायु, 5. जल

*****

जिंदगी की जंग

रचनाकार- शुभम गोयल, 7वीं, स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल
तारबाहर, बिलासपुर

जिंदगी की जंग तुम्हे जीतना होगा.
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा.
तेरे कल संवारने को कड़ी मेहनत किये तेरे अपने,
हर इच्छा हर शौक को दफन किया सपने.
तुमको भी अपनों के सपनो को पूरा करना होगा,
आसमां को धरती पर तुम्हे झुकाना होगा

जिंदगी की जंग तुम्हे जीतना होगा.
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा.
सुबह का सूरज जगा देता है संसार को,
एक छोटा सा जुगनू चीर देता है अंधकार को
फूलों की खुशबू महकती है पूरे चमन में,
पर्वत सा अडीग इरादे रखो अपने मन में.

जिंदगी की जंग तुम्हे जीतना होगा.
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा.

समन्दर का सीना चीर कर तुम्हे मोती निकालना होगा
आत्मविश्वास तुम्हे रग रग में दोड़ाना होगा.
तकदीर भी रूठे पर हिम्मत ना टूटे तुम्हारे हौसले को
तुम्हे आसमा से बुलंद करना होगा
जिंदगी की जंग तुम्हे जीतना होगा.
हर एक मुसीबत से तुम्हे लड़ना होगा.

*****

काकभगोड़ा

रचनाकार- श्रीमती सुचित्रा सामंत सिंह

खेतों में चहचहाती पंछी,
फसलों पर मडराती है,
इस डाली से उस डाली पर,
झूला झूले जाती हैं.

कभी बैठे पक्के अमरूद पर,
कभी रसालों पर मडराती,
कभी चोच लगाए फलों पर,
कभी फुदक-फुदक धरा पर चलती.

जैसे ही पंछी ने देखा,
नीले काले कपड़ो वाला,
मटके जैसे मुख वाला,
बिहंग जरा घबराती है.

कौन है लम्बे हाथ फैलाए,

ना ये दौड़े ना ये भागे
ना कुछ बोले ना कुछ सुनता
ना दिन-रात की परवाह करता

ना दिन की गर्मी सताती
ना बारिश मे छाता लेता
एक जगह निश्चिंत खड़ा है
मानो यह मुझे घूर रहा है.

यह है एक काकभगोड़ा,
खेतों का पहरा देनेवाला,
लम्बा चौड़ा भोला भाला,
कानो में रुई, मुँह में ताला.

देख इसे चिड़िया घबराई,
अपने पंखों को सहलाई,
छोड़ पके बालियाँ धान की,
चिड़िया फुर से उड़ जाती हैं.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 भो				2 आ				3 फ	
			4 आ						
5		6 न				7 भ	8		
		9			10 ल				11
12 च					13			14 मा	
			15 घु					16	
					17 र	18			
19	20 सा			21					22 स
			23 बा		24			25	
26 गु					27				

बाएँ से दाएँ

1. जिसका दांत न हो
2. लम्बाई मे कम होना
3. चांवल का व्यंजन
4. आगे 5. कछुआ 7. मशाल
9. बड़ा चम्मच 12. एक भाजी का नाम 13. गाल सुजने वाला रोग 1. उल्लू 16. गाय, बैल, घोड़ा इत्यादि के पांव
17. रखवाला 19. रूठा हुआ
23. बचा हुआ 25. गुड़
26. लपेट 27. बोलते समय नाक से आवाज निकालने

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 अ	र	म	प	2 प	ई		3 द	4 स	ना
न				हु		5 हें		मो	
छ		6 म	ख	ना		7 क	उ	ख	8 न
9 प	10 न	ही			11 गु	र	हा		ग
	च		12 ल	प	र	हा		13 न	री
	का		ब		मे		14 अ		हा
15 द	र	16 चु	रा		17 ट	र	क	हा	
र		ल		18 मा			ब		19 प
दा		20 मा	खु	र			21 का	च	र
हा		टी		22 बो	रे	बा	सी		छी

ऊपर से नीचे

1. मित्रता का एक नाम
2. आगे पीछे 3. दरवाजा
6. बेइज्जत इन्सान 8. भालू
10. हितैषी 11. एक समूह लोक नृत्य 12. चने का खेत
14. तम्बाखू 15. घुल
18. अहाता 20. संकरा
21. खिसक 22. सड़ा हुआ
23. तराजू का वजन
24. नजदीक 25. गुण